



सोनार बांग्ला

राजभाषा पत्रिका



16वां अंक

वर्ष – 2022

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001

दूरभाष :- 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174

वेबसाइट :- www.agwb.cag.gov.in

ई-मेल पता :- hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in



सरीन टोप्नो, पुत्र- श्रीमती स्मृति कुजूर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा बनाया गया चित्र।



अभिषेक कुजूर, भाई- श्रीमती स्मृति कुजूर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा बनाया गया चित्र।



सोनार बांग्ला

राजभाषा पत्रिका

16वां अंक

वर्ष – 2022



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001

दूरभाष :- 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174

वेबसाइट :- www.agwb.cag.gov.in

ई-मेल पता :- hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in

‘सोनार बांग्ला’ परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सतीश कुमार गर्ग
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री रनेन्दु सरकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I)

श्री लिंगराज नायक एस.

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II एवं III)

श्री विनोद परिहार

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-IV)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री शांतनु दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी

संपादन सहयोग

श्री बिपुल कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

श्री प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

श्री किशन राम
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

टंकण कार्य

श्री सोनु कुमार चौधरी
आंकड़ा प्रविष्टक

लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति के सदस्य

श्री नवल किशोर प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी

श्री प्रशांत कुमार
हिंदी अधिकारी

अस्वीकरण

लेखक/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति/संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	संदेश		पृष्ठ संख्या
1.	प्रधान महालेखाकार का संदेश	श्री सतीश कुमार गर्ग	1
2.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I) का संदेश	श्री रनेन्दु सरकार	2
3.	उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II एवं III) का संदेश	श्री लिंगराज नायक एस.	3
4.	उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-IV) का संदेश	श्री विनोद परिहार	4
5.	प्रधान सम्पादक का संदेश	श्री शांतनु दास	5
6.	संपादकीय	श्री सुनील कुमार साव	6
7.	आपके पत्र		7 - 8
	लेख/स्वानुभूति/जीवन दर्शन/कहानी/अनुवाद	लेखक/रचनाकार	
8.	कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप	श्री सुनील कुमार साव	9 - 12
9.	राजभाषा हिंदी का महत्व	श्री अयन दास	13
10.	अपना शहर कोलकाता	श्री उत्पल चटर्जी	14 - 16
11.	स्मृति के कैनवस पर कुछ 'दृश्य' (कोलकाता, पुरी, शिमला)	श्री प्रशांत कुमार	17 - 22
12.	आरसी	श्रीमती सुकन्या दास	23 - 24
13.	स्वर-साम्राज्ञी लता मंगेशकर	श्री बिपुल कुमार साव	25
14.	ऑडिट अनुभव (बगदाद में घटित एक रात)	श्री अभिरूप घोष	26 - 27
15.	स्वास्थ्य	श्रीमती गुंजा कुमारी	28 - 29
16.	परोमा का जन्मदिन	श्री सन्दीप कुमार सरकार	30 - 34
17.	छुट्टियों में राजस्थान घूमने का अनुभव	श्री अमित चक्रवर्ती	37
18.	लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की भूमिका	श्री विनोद कुमार शर्मा	38 - 39
19.	चिकित्सा विज्ञान की सीमाएं और चुनौतियां	श्री अर्णव पाल	40
20.	ऑनलाइन कक्षाओं के नुकसान और फायदे	श्रीमती रीमा सेठ	41 - 42
21.	गंगा नदी - भारतीय संस्कृति की पहचान	श्री अमर राउत	43
22.	समाज में बढ़ती अश्लीलता	श्री अमरेश कुमार	44
23.	नेपाल - एक आत्मीय स्मृति	श्री अरूंधति नंदी	45 - 46
24.	रंगमंच - एक विलुप्त कला के कगार पर	श्री शुभाशीष दे	47
25.	भावनाओं की आत्मकथा	श्री अरिंदम घटक	48
26.	हिमालय पर चलो	श्री अर्णव कर	49
27.	मोबाइल	श्री प्रमोद कुमार दास	50
28.	व्यावहारिकता	श्रीमती रानी भगत	51
29.	सोच	श्रीमती सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी	52 - 53
30.	संघर्षशील जीवन	श्री सोनु कुमार चौधरी	54

31.	बच्चे और मेला	श्री प्रफुल्ल कुमार झा	55
32.	अंडमान - एक यात्रा अनुभव	श्री राजीव दे	56
कविता/गीत/व्यंग्य			
33.	जिंदगी की लहरें	श्री सुरजीत घोष	57
34.	रख मुट्ठी में वक्त को	श्री सुनील कुमार साव	58
35.	क्या लिखूं	श्री अक्षयवरनाथ चतुर्वेदी	59
36.	सूनापन	श्री ओम प्रकाश चौधरी	60
37.	जन-जन की आवाज	श्रीमती रिकु सिंह	60
38.	आज समझ आया है	श्री प्रमोद कुमार दास	61
39.	मित्र	श्री प्रमोद कुमार दास	61
40.	हम भारत के वीर	श्री संजीत कुमार सिंह	62
41.	पिता-पुत्र	श्री विनोद कुमार शर्मा	63
42.	दमन	श्री विनोद कुमार शर्मा	63
43.	हौसला	श्री रूपक भादुड़ी	64
44.	भारत की आत्मा	श्रीमती शिखा साव	65
45.	इंकलाब का बीज	श्रीमती शिखा साव	65
46.	लल्ला मेरा	श्री किशन राम	66
47.	मैया मोरी	श्री किशन राम	66
48.	अतीत के अवशेषों से	श्री राजीव गिरि	67
49.	बारिश की बूंदें	श्री राकेश रंजन	68
बाल रचनाकार			
50.	सुंदर सपना	सुमेधा नंदी	68
51.	माँ	विशाल मंडल	69
52.	वर्षा का एक दिन	अद्रीश हाजरा	70
53.	मेरा गांव	सरीन टोप्पो	70

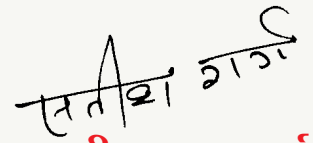


प्रधान महालेखाकार का संदेश

मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हुई है कि प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल, कोलकाता कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में 'सोनार बांग्ला' पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी की प्रगति तथा इसके विकास में विभागीय पत्रिकाओं की ऐतिहासिक भूमिका है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका से कार्यालयों में हिन्दी के प्रचलन तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति उत्साह एवं रुचि उत्पन्न होगी।

मैं सभी रचनाकारों के साथ-साथ कुशल संपादन के लिए पत्रिका परिवार को भी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।


सतीश कुमार गर्ग

प्रधान महालेखाकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी-1) का संदेश



यह अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय द्वारा राजभाषा पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल कार्यालय के कर्मियों की रचनात्मक प्रतिभा से हमारा परिचय करवाती है बल्कि उनकी लेखनी को एक मंच भी प्रदान करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के कर्मियों में राजभाषा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं उनकी प्रतिभा भी विकसित होगी।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की कामना करते हुए मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों, संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

आर. सरकार.

रतेन्दु सरकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी-1)



उप महालेखाकार (ए.एम.जी-II एवं III) का संदेश

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में निर्बाध गति से अग्रसर कार्यालयीन पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 16वें अंक के प्रकाशन पर मैं हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। पत्रिका का सफल प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा के प्रति कुशल निष्ठा का परिचायक है।

पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ रचनाकारों की लेखन प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा के प्रति उनके प्रेम को भी इंगित करती हैं। रचनाकारों के सार्थक प्रयास के लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि आप सब के सहयोग से पत्रिका अपने अनवरत सफल प्रकाशन द्वारा उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए आप सबके हार्दिक सहयोग की कामना करता हूँ।



डॉ. लिंगराज नायक एस.

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-II एवं III)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-IV) का संदेश



राजभाषा हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं मेल-मिलाप की भाषा है। इसके विकास पर ही हमारा साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विकास निर्भर है। अतः इसका प्रचार-प्रसार करना हम सब का परम कर्तव्य है। इस कार्यालय की पत्रिका 'सोनार बांग्ला' राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसने कार्यालय में पठन-पाठन एवं सृजन का एक अनूठा वातावरण तैयार किया है।

पत्रिका के 16वें अंक के प्रकाशन पर मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों, रचनाकारों एवं पाठकवृन्द को हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी इसी प्रकार अपना पूर्ण सहयोग देते रहेंगे तथा पत्रिका की निरन्तरता बनाए रखेंगे।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

विनोद परिहार
विनोद परिहार

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-IV)



प्रधान सम्पादक की कलम से...

आपकी अपनी वार्षिक पत्रिका 'सोनार बांग्ला' का 16वां अंक आपको सौंपते हुए एक सुखद अनुभूति का अनुभव हो रहा है। विविध रंग बिरंगे मौक्तिक माला में पिरोई यह अदभुत और अपने नए कलेवर व परिवेश में प्रस्तुत है। यह सब आपके अतुलनीय सहयोग से ही संभव हो सका है।

मानव का अपना एक व्यक्तित्व होता है। इस व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करने का सर्वोत्तम साधन भाषा है। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति समाज का सार्थक सदस्य बनता है। राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण का निर्माण राष्ट्रभाषा के द्वारा ही होता है। राष्ट्र का भाषा से वही सम्बन्ध है जो शरीर का आत्मा से। राष्ट्र एवं राष्ट्रीय एकता दोनों के लिए लोगों में जीवन हितों एवं आदर्शों की एकता का होना आवश्यक होता है। इस एकता की उत्पत्ति तब तक संभव नहीं होती जब तक एक दूसरे को समझने के लिए भाषा का एक समान माध्यम न हो। भाषा के द्वारा ही लोगो में वैचारिक तथा आत्मिक एकता की स्थापना हो जाती है। अतः राजभाषा हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का एक प्रमुख साधन है।

कार्यालय की ओर से मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके बहुमूल्य सुझावों एवं सहयोग से पत्रिका को मूर्त रूप दिया जा सका। भविष्य में भी उनसे ऐसे ही सहयोग की अपेक्षा रहेगी। पत्रिका की बेहतरी हेतु सभी विद्वतजनों के सुझावों एवं मार्गदर्शन की प्रतीक्षा रहेगी।

शांतनु
शांतनु दास

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादकीय



साहित्य अपने समय का आईना होता है तथा भाषा उस साहित्य की वाणी। यह भाषा ही है जो हमारी चेतना को मुखरित करती है। भाषा का उद्देश्य रचनाओं के माध्यम से केवल सृजनात्मक प्रतिभाओं को आगे लाना ही नहीं बल्कि हमारी चेतना की उन सोई संवेदनाओं में प्राण फूंकना भी है जो मानव को मानव से जोड़कर बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय के सिद्धांत को साकार करती हैं।

मेरे लिए यह अति हर्ष का विषय है कि 'सोनार बांग्ला' अपने इसी उद्देश्य की ओर निरन्तर अग्रसर है। कार्यालयीन गतिविधियों से लेकर सांस्कृतिक सृजनात्मकता के क्षेत्र में इस पत्रिका ने जो सार्थक भूमिका निभाई है, वह अपने आप में अप्रतिम तथा बेजोड़ है। पत्रिका के गरिमामयी स्वरूप तथा सारगर्भित रचनाओं के माध्यम से पत्रिका परिवार की हिन्दी के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा प्रतिबद्धता परिलक्षित हुई है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक/पहचान भी है तथा हमारा स्वाभिमान भी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'सोनार बांग्ला' पत्रिका हिन्दी के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रेरक भूमिका निभाते हुए प्रगति पथ पर सदैव अग्रसर रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

सुनील कुमार साव
सुनील कुमार साव

हिन्दी अधिकारी



आपके पत्र

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



सर्वोच्च न्यायालय
Dedicated to Trust in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
भारतीय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL), DELHI

दिनांक / Date: 22-12-2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
2, गवर्नट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय: हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्त अंक के प्रेषण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्त अंक की इस कार्यालय को सार्वभौमिक है। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सरासरीय एवं जनवर्गीय हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक सेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। "सोनार बांग्ला" परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए "बांदा" परिवार की ओर से प्रेक्ष्य शुभकामनाएं।

भवदीय,

(विष्णु भारती)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी अनुभाग)

तृतीय तल, ए-खण्ड, इन्द्रप्रस्था भवन, इन्द्रप्रस्था एस्टेट, नई दिल्ली-110002
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan, I. P. Estate, New Delhi-110002
दूरभाष/Tele: 011-23378473, फैक्स/Fax: 011-23378432, 011-23370871
E-mail: pdainfradi@cag.gov.in



सर्वोच्च न्यायालय
Dedicated to Trust in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नई का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI



सं. प्रसिद्धि/का.हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/158

दिनांक: 03.01.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
2, गवर्नट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता- 700 001

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "सोनार बांग्ला" का संयुक्त अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "सोनार बांग्ला" का संयुक्त अंक इस कार्यालय को ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।
पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं विशेषतः श्री संदीप कुमार सरकार कृत "यादें" भावपूर्ण, श्रीमती अमृता घोष कृत "स्वामी विवेकानंद के जीवन की आठ प्रेरक कहानियां" प्रेरणापूर्ण, एवं श्री उत्पल चटर्जी कृत "आत्मनिर्भरता तथा कोविड नियंत्रण: संभावना और उम्मीद" रुचिपूर्ण हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,

(विष्णु भारती)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)



सर्वोच्च न्यायालय
Dedicated to Trust in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
भारतीय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL), DELHI

दिनांक/पत्रिका: 2021-22/201
दिनांक: 22.12.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता।

महोदय,

विषय: हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्त अंक (वर्ष 2020-21) के सम्बन्ध में।

आपके कार्यालय के पात्र दिनांक 13.12.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्त अंक (वर्ष 2020-21) की प्रति सामान्यतः प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं उत्पत्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रसंगीय हैं। रविन्द्रनाथ टैगोर के छोटी से मुक्तिपत्रिका पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित श्री विष्णु कुमार साव का लेख "विश्लेषण", श्रीमती अमृता घोष का लेख "स्वामी विवेकानंद के जीवन की आठ प्रेरक कहानियां", श्रीमती मुंजा कुमारी का लेख "बंगमन्दी महिनाएं" एवं श्रीमती रानी का लेख "पुष्पांजलि" बहुत ही जनवर्गीय लेख हैं।
इसके अतिरिक्त श्री अजय विकास की कविता "जिंदगी", श्री ओमिष बास की कविता "जलते", एवं श्री आनन्द सेनगुप्ता की कविता "अस्तित्व एक आशा" पठनीय हैं।
पत्रिका के श्रेष्ठ संस्करण हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट अग्रिम हेतु श्रेष्ठ शुभकामनाएं।

भवदीय

(विष्णु भारती)

हिंदी अधिकारी



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नई का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-1)
KERALA, BRANCH: THIRUVARUR - 686626



सं. प्रसिद्धि/का.हिंदी/2021-22/158

दिनांक: 21/12/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग, 2-गवर्नट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता- 700 001

आपके कार्यालय की पत्रिका "सोनार बांग्ला" का संयुक्त अंक प्राप्त हुआ है। प्रति चेक के लिए तहर्षे धन्यवाद। पत्रिका का मुद्रण तथा उत्तरोत्तर सुदृढ़ रचनाएं देखीर का छायाचित्र अत्यंत सुन्दर है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं एवं कविताएं शिक्षाप्रद एवं संरक्षणीय हैं। श्री मनोज कुमार सोनार का लेख "महाभारती की समस्यओं के बीच प्रस्थान रहने की कला", श्री प्रयास कुमार का लेख "पश्चिमा डायरी" एवं श्री प्रमोद कुमार दास की कविता "जलते" प्रेरणादायी हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उत्कृष्ट अग्रिम के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,

(विष्णु भारती)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/का.स्वा.(ले.प.)

12-43/14-1/2/22
17/02/22



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-ए), शिक्षा एवं कौशल विकास
Office of the Director General of Audit (Exams, Education and Skill Development)
इंद्रप्रस्था एस्टेट, नई दिल्ली - 110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सं.स.आ.302-अ/प्रशा.पत्र/2021-22/ 2, 2-0
दिनांक- 01.02.2022

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-ए), पश्चिम बंगाल
2, मार्जेंट प्लेस (पश्चिम), टूंगरी बिल्डिंग, कोलकाता-700001.

- 3 FEB 2022

विषय- हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्तक वर्ष 2020-2021 की पाठ्यी सड़ प्रशंसा पत्र ।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्तक वर्ष 2020-2021 की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं सज-सज्जा मूल्य अति उत्तम है। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं जानकारीपूर्ण हैं। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की हैं। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। साहित्य की सभी विधाओं में रचनाएं बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णित हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट ज्ञानवर्धक और संग्रहीत हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाओं को आर्थिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों में अपनी गतिविधियों से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका में वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं। एक बार पुनः पढ़ से धन्यवाद।

भवदीय,
(मुकेश कुमार यादव)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
दूरभाष- 01123454268

15 FEB 2022
Office of the P.A.G., (Audit), W.B.
Treasury Building, 2, Cent. Plaza (West)
Kolkata-700001

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-ए) राज्य प्रदेश, ऑडिट भवन,
इंदोरी रोड, ग्वालिबर
दिनांक 01/02/2022

प्रति,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-ए),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता- 700001

विषय- हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्तक वर्ष-2020-2021 की प्रशंसा के संबंध में ।

महोदय,
आपके कार्यालय की ई-पत्रिका पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्तक वर्ष-2020-2021 की प्रशंसा हुई। एतदर्थ धन्यवाद। राजभाषा के प्रसार-प्रसार और कार्यालयगत कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में आपकी पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।
पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र एवम् सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, नैतिकपरक, एवम् रोचक हैं। कवित्व तथा लेख ज्ञानवर्धक, लक्ष्यक व मन को छू लेने वाले हैं । पत्रिका प्रकाशन में आपका योगदान अति सराहनीय है ।
पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं कक्ष श्री प्रशंत कुमार की "रश्मि छवरी" एक रोचक एवं सुबसुरत संस्करण है, सुश्री सुदेश कुमारी की "मैं भी ममता" एक भावपूर्ण कविता है जो मैं की महिमा का सुबसुरत चित्रण करती है एवं मैं के विचलित स्वरूप को शब्दों में प्रस्तुत करने का सुबसुरत प्रयत्न है, श्री प्रमोद कुमार की "संक्षिप्त" एक विचारणीय कविता है जो समाज में सहनियमों के हिल हेतु आवाज को बुलंद करती है तथा श्री प्रमोद कुमार दास की "विकल्प" एक धेरणायामक लेख है जो पाठकों को जीवन में सही निर्णय लेने हेतु प्रेरित करता है । उक्त रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय हैं ।
पत्रिका के सफल संपादन एवम् लगातार प्रकाशन के लिये हार्दिक बधाई ।
पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की मंगलकामनाओं के साथ...

भवदीय,
Sanjeev Kumar Jhanji
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्षा

22/11/21



भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), चम्पलबहा, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date: 22-11-2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्षा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-ए)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700 001

विषय- पत्रिका की पाठ्यी प्रेषित करने संबंधी ।
संदर्भ- लेखा-हिन्दी कक्षा/सोनार बांग्ला/संयुक्तक/255 दिनांक:13.12.2021

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" का संयुक्तक वर्ष 2020-21 की ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार । भेजी गई पत्रिका में संक्षिप्त सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं प्रेरणादायक हैं । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं । पत्रिका की सज-सज्जा एवं आंतरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है ।
राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान देगी । सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ ।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्षा

22-03-2022



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, वारिष्ठ लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(INFRASTRUCTURE), DELHI

दिनांक / Date: 22-03-2022

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-ए)
2, मार्जेंट प्लेस (पश्चिम), टूंगरी बिल्डिंग
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय- हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्तक वर्ष के प्रेषण की प्रशंसा के संबंध में ।

महोदय,
आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के संयुक्तक वर्ष के इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी की मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। "सोनार बांग्ला" परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए "संकट" परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

भवदीय,
(विष्णु भारती)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी अनुभाग)

राजीव तल, ए-स्कवा, इन्द्रप्रस्था भवन, इन्द्रप्रस्था एस्टेट, नई दिल्ली-110002
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan, I.P. Estate, New Delhi-110002
दूरभाष/Tel.: 011-23378473, फैक्स/Fax: 011-23378432, 011-23370871
E-mail: pdainfra@cag.gov.in



सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी

कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप

ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के बाद स्वाधीन भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को निर्णय लिया कि संघ के राजकाज की आधिकारिक भाषा यानी राजभाषा हिंदी होगी। यह तय किया गया कि 15 वर्षों तक देश में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी भी चलती रहेगी। इसके पीछे यह अवधारणा थी कि इस 15 वर्ष की पर्याप्त अवधि में शासन-प्रशासन का समस्त कामकाज राजभाषा हिंदी में होने लगेगा। लेकिन अनेक अवांछित कारणों और

कटु कारकों के चलते इस निर्धारित अवधि में यह संभव नहीं हो सका। परिणामतः सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाया गया ताकि संघ के राजकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अमल में लाया जा सके। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) में यह आदेशपूर्वक निर्दिष्ट किया गया कि सर्वसाधारण को लक्ष्य कर तैयार किए जाने वाले सभी दस्तावेज, नामतः कार्यालय आदेश, ज्ञापन, परिपत्र, सूचना, अधिसूचना, विज्ञापन, निविदा, संविदा, अनुज्ञप्ति, करार, संसद के दोनों सदनों में पेश किए जाने वाले प्रशासनिक और अन्य प्रतिवेदन, इत्यादि अंग्रेजी के साथ-साथ अनिवार्यतः हिंदी में भी जारी किए जाएँ। अर्थात् ये सभी सरकारी दस्तावेज अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाएँ और इसका दृढ़तापूर्वक पालन किया जाए। इसका उल्लंघन होने पर इन दस्तावेजों पर अंतिम रूप से हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

हिंदी की स्थिति - संघ की राजभाषा नीति के सतत क्रियान्वयन में यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। और यहीं से सरकारी कार्यालयों में हिंदी अनुवादकों एवं राजभाषा अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई और सरकार को संसद के दोनों सदनों समेत सभी मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, अधीनस्थ कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों, बैंकों एवं सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों आदि में हिंदी अनुवादकों एवं राजभाषा अधिकारियों की पूर्णकालिक तथा स्थायी नियुक्ति, और वह भी पर्याप्त संख्या में नियुक्ति की तत्काल आवश्यकता बेहद शिद्दत से महसूस हुई। यों तो विशेष प्रकार के अनुवादों यथा नियमों, कोडों, मैनुअलों, तकनीकी व विधिक साहित्य, शोध, अनुसंधान जैसे दस्तावेजों के केंद्रीकृत अनुवाद के लिए विधि मंत्रालय के साथ-साथ केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो भी सक्रिय था लेकिन सांविधिक, विधिक तथा तकनीकी अनुवादों के अलावा सामान्य अनुवादों के लिए भी भारत सरकार के हरेक मंत्रालय, विभाग, कार्यालय, संगठन, बैंक, उपक्रम आदि में हिंदी अनुवादकों की भर्ती शुरू हुई और राजभाषा नीति के व्यापक कार्यान्वयन और राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा संकल्प, 1968 तथा राजभाषा नियम, 1976 के अनुपालन की निगरानी के लिए राजभाषा अधिकारियों एवं राजभाषा संवर्ग के अधिकारियों यथा सहायक निदेशक (राजभाषा), निदेशक (राजभाषा), आदि की नियुक्तियों को गति मिली। फलस्वरूप, हरेक मंत्रालय, विभाग, अधीनस्थ कार्यालय, संगठन, बैंक, इत्यादि में उनकी कुल स्टाफ संख्या के एक निश्चित अनुपात के रूप में न केवल हिंदी टंककों, हिंदी आशुलिपिकों की, वरन् कनिष्ठ हिंदी अनुवादकों, वरिष्ठ हिंदी अनुवादकों और राजभाषा अधिकारियों, सहायक निदेशकों, निदेशकों, इत्यादि पदों का पर्याप्त संख्या में सृजन भी किया गया।

नीतिगत तौर पर हिंदी टंककों, हिंदी आशुलिपिकों समेत हिंदी अनुवादकों, हिंदी अधिकारियों एवं राजभाषा संवर्ग के अधिकारियों, इत्यादि की नियमित नियुक्तियों की शुरुआत से संघ की राजभाषा नीति की अपेक्षाओं की आंशिक पूर्ति तो अवश्य हुई। कार्यालयों में रोजमर्रा के कामकाज और नेमी किस्म के पत्राचार, टिप्पण, प्रविष्टि, इत्यादि हिंदी में करने का दबाव भी बढ़ा और कार्यालयों के नाम, नामपट्ट, सूचनापट्ट, मोहर, सील, पत्रशीर्ष, लिफाफे, इत्यादि ही नहीं बल्कि नेमी किस्म के प्रपत्रों, फॉर्मों, पर्चियों, इत्यादि समेत रेलवेज, एयरवेज, आदि के आरक्षण-फॉर्म, टिकट, बैंकों की निकासी व जमा पर्चियाँ, चेकबुक, पासबुक, इत्यादि भी हिंदी में प्रदर्शित, प्रकाशित और मुद्रित होने लगे। इतना ही नहीं, सरकारी सेवाओं के लिए ली जाने वाली समस्त भर्ती परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी अनिवार्यतः तैयार किए जाने लगे और इन भर्तियों के लिए आयोजित होने वाले साक्षात्कारों में भी हिंदी में उत्तर देने का प्रावधान किया गया। इनके अलावा मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, संगठनों, बैंकों, उपक्रमों, इकाइयों, इत्यादि की वार्षिक रिपोर्टें भी अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी तैयार की जाने लगी और सभी प्रदर्शित, प्रकाशित व मुद्रित दस्तावेजों व नामपट्ट, पत्रशीर्ष, मोहर, इत्यादि में हिंदी को वरीयता प्रदान की गई, अर्थात् पहले हिंदी और फिर अंग्रेजी। जहाँ तीन भाषाएँ हैं, वहाँ सर्वप्रथम प्रांतीय भाषा, फिर हिंदी और अंत में अंग्रेजी। यहाँ विशेष रूप से यह भी निर्दिष्ट किया गया कि तीनों भाषाओं के अक्षरों का आकार एक समान हो, रंग एक समान हो और उनमें प्रयुक्त सामग्री अनिवार्यतः एक हो।

संघ की राजभाषा नीति बेहद संवेदनशील एवं सर्वसमावेशी है और यहाँ किसी भी भाषा को कमतर या बेहतर नहीं बताया गया है। संविधान के 17वें भाग में अनुच्छेद 351 में यह स्पष्ट कहा गया है कि “संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्दभंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।” सभी सरकारी मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों, इकाइयों, इत्यादि में, सरकारी कामकाज में, नामपट्टों, मोहरों, साइनबोर्डों, पत्रशीर्षों, लिफाफों, इत्यादि से लेकर सरकारी सूचनाओं, विज्ञापनों, परीक्षा के प्रश्नपत्रों, नेमी फॉर्मों, टिकटों, बैंक की आहरण व निकासी पर्चियों, इत्यादि में अंग्रेजी के अलावा जो प्रचुर हिंदी या थोड़ी-बहुत हिंदी दिखती है, वह संघ की इसी राजभाषा नीति के बूते और बदौलत है! संघ की राजभाषा नीति के सतत कार्यान्वयन को भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही तमाम प्रशिक्षण योजनाओं और प्रोत्साहन योजनाओं यथा; हिंदी शिक्षण योजना के तहत **प्राज्ञ, प्रवीण, प्रबोध परीक्षाएँ, प्रशंसा पत्र, नकद प्रोत्साहन पुरस्कार, राजभाषा शील्ड, इत्यादि** का मूल उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देना है क्योंकि ये योजनाएँ राजभाषा अधिकारियों के लिए नहीं बल्कि विभागों के समस्त कर्मचारियों-अधिकारियों को हिंदी में कामकाज करने में सक्षम बनाने और इस दिशा में उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए ही चलाई जाती हैं। हिंदी भाषाभाषी के अलावा अहिंदी भाषाभाषी भी और विशेषकर दक्षिण भारतीय लोगों में हिंदी सीखने और हिंदी में कामकाज करने को लेकर अपेक्षाकृत ज्यादा उत्साह और समर्पण हर जगह देखने को मिलता है और हिंदी जानने वाले लोगों की तुलना में वे हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाते देखे जाते हैं।

कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप : भाषा का मुख्य उद्देश्य है अपनी बात सामने वाले को या जिसके लिए प्रयुक्त हो उसे आसानी से समझाई जा सके, वह आसानी से ग्राह्य हो। समस्त उपबंधों के होते हुए भी आम लोगों में यह धारणा है कि हिंदी का प्रयोग कठिन होगा क्योंकि साहित्यिक हिंदी अपेक्षाकृत कठिन होती है और यदि इस हिंदी का प्रयोग आम पत्राचार में किया जाए

तो यह हास्यास्पद बन जाएगी या इसको समझने में कठिनाई आएगी। शायद इसी भ्रम में अकारण लोग हिंदी को अपनाने से कतराते हैं। इस समस्या से निजात के लिए भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा आसान हिंदी के प्रयोग पर बल दिया गया है। आसान हिंदी का अर्थ है स्थानीय एवं आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग सरकारी कार्यों के लिए किया जाए। इस प्रकार से हिंदी का प्रचलन बढ़ेगा। चूंकि हमारा देश विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों से युक्त है, अतः आसान हिंदी समझ पाना सबके लिए आसान होगा और क्षेत्र विशेष के प्रचलित शब्दों के प्रयोग से भाषा की धारा भी सुचारु रूप से चलती रहेगी तथा इससे हिंदी का प्रयोग भी बढ़ेगा। आम तौर पर देखा गया है कि आसान शब्दों को ग्रहण करने में जितनी आसानी होती है, उतनी ही कठिनाई भारी-भरकम शब्दों के साथ होती है। जिन सरकारी कार्यालयों में इस विधि का अनुसरण किया गया वहाँ हिंदी का प्रचार-प्रसार अपेक्षाकृत अधिक ही हुआ। उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी के शब्द approval के लिए हिंदी में कई विकल्पों का प्रयोग किया जा सकता है जैसे अनुमोदन, संस्तुति, आदि। यह भी प्रावधान किया गया कि कोई कार्मिक हिंदी लिखने में वर्तनी संबंधी कोई त्रुटि करता भी है तो उसे इसके लिए हतोत्साहित करने की बजाय प्रोत्साहित किया जाए कि उसने हिंदी में लिखने का प्रयास तो किया।

कई बार ऐसा देखा गया है कि अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों को हिंदी में अनूदित करवाने की आवश्यकता पड़ जाती है। अनुवाद करते समय लोग अधिकांशतः शब्दानुवाद का प्रयास करते हैं। शब्दानुवाद कुछ हद तक तो ठीक है पर जब यह अनुवाद भाषा के कथ्य को आसान ढंग से समझने के लिए किया जाता है तो कहीं-कहीं शब्दानुवाद के कारण उस विषय का मूल अर्थ भारी और उबाऊ होने के साथ समझ से परे हो जाता है। ऐसे में यह सलाह दी जाती है कि भावानुवाद किया जाए तथा दिए गए अंग्रेजी पाठ के मूल कथ्य को प्रस्तुत किया जाए ताकि उसे समझने में आसानी हो तथा उसके अनुरूप पत्राचार किया जा सके। सरकारी कामकाज में पहले देखा गया है कि अंग्रेजी के कुछ ऐसे वाक्य होते हैं जिनका हिंदी अनुवाद बड़ा ही कठिन लगता है या हिंदी में उन शब्दों या वाक्यों का प्रयोग करना बड़ा ही अटपटा लगता है जैसे I am directed to say /I am directed to forward... ऐसा माना जाता है कि पत्र जारी करने वाला अधिकारी अपनी ओर से कुछ नहीं कर रहा है। वह सरकार के अनुदेश पर समस्त कार्य करता है इसलिए हमेशा पत्राचार में यह वाक्य प्रयोग किया जाता है। इनका हिंदी में अनुवाद है - **मुझे यह कहने का निदेश हुआ है/ मुझे.... अंग्रेषित करने का निदेश हुआ है।** अंग्रेजी के पत्र में सम्बोधन के लिए Dear Sir का प्रयोग होता है पर हिंदी में महोदय लिखा जाता है। अंग्रेजी पत्राचार में Yours faithfully लिखा जाता है पर इसके हिंदी रूप में **आपका विश्वासी** लिखना कतई उपयुक्त नहीं होगा। इसके स्थान पर **भवदीय** लिखा जाता है।

कार्यालयों में आम पत्राचार के अतिरिक्त एक और चीज प्रचलन में है जिसे नोटिंग कहा जाता है। सरकारी कार्यालयों में कोई भी कार्य फाइल पर टिप्पणी के बिना नहीं किया जा सकता। कार्य करने वाला सहायक कोई भी बात अपने उच्चाधिकारी को फाइल पर नोट के रूप में लिखकर प्रस्तुत करता है। इसे अंग्रेजी में नोटिंग (Noting) कहा जाता है। उसकी बात पर उच्चाधिकारी द्वारा तदनुसार कार्य करने का अनुदेश दिया जाता है। कार्यालय के पत्राचार का यह प्रथम सोपान होता है। अंग्रेजी में लिखी जाने वाली नोटिंग अमूमन passive voice, third person के रूप में होती है पर हिंदी में सीधे सपाट शब्दों में तथा आसान वाक्यों में लिखने पर बल दिया जाता है। अंग्रेजी के वाक्यांश में देखें तो please शब्द का खूब प्रयोग होता है। पर यह माना जाता है कि प्रशासनिक कार्यों में भावना का स्थान नहीं होता है अतः ऐसे शब्दों का पत्राचार में प्रयोग न किया जाए। सीधे एवं सपाट शब्दों में अपनी बात कही जाए। उच्च अधिकारी द्वारा भी तदनुसार अपनी टिप्पणी दी जाती है।

नोटिंग के बाद ड्राफ्टिंग का क्रम आता है। ड्राफ्टिंग का अर्थ है किसी भी पत्र या विवरण का मसौदा तैयार करना। किसी भी पत्र या पत्राचार के लिए विवरण को सर्वप्रथम उच्चाधिकारी से अनुमोदित करवाना आवश्यक होता है। इसके लिए सहायक द्वारा लिखा जाने वाला समस्त विवरण पत्र/ज्ञापन/परिपत्र के मसौदा रूप में उच्चाधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। उच्चाधिकारी द्वारा उक्त विवरण का अवलोकन करने के बाद या तो उसमें संशोधन का सुझाव दिया जाता है या फिर उसका अनुमोदन कर दिया जाता है। तदनुसार पत्र का अंतिम स्वरूप अधिकारी द्वारा हस्ताक्षर के बाद कार्मिक द्वारा जारी कर दिया जाता है।

कार्यालयीन हिंदी एवं अंग्रेजी में अंतर देखें तो सदा यह सलाह दी जाती है कि आसान हिंदी का प्रयोग करें। इसके लिए आपके मन में जो विचार आता है या जो कहा जाना है उसे साफ एवं स्पष्ट शब्दों में प्रस्तुत करें। राजभाषा अधिनियम के उपबंधों के अनुसार हिंदी में प्रस्तुत किए गए मसौदे या नोट के लिए कोई भी अधिकारी उसके अंग्रेजी अनुवाद की मांग नहीं कर सकता है। बहुत कम लोग ही सीधे अंग्रेजी में सोचकर अपनी बात अंग्रेजी में ही लिख पाने में समर्थ होते हैं, अधिकांश लोग कोई भी बात अंग्रेजी में लिखने से पूर्व अपनी मातृभाषा में सोचते हैं, फिर उन शब्दों या वाक्यों को मन ही मन अंग्रेजी में अनूदित करने का प्रयास करते हैं। अनुवाद की प्रक्रिया में हमेशा व्याकरणिक शुद्धियों का ध्यान रखना पड़ता है। यदि थोड़ी सी अशुद्धि हो जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाने का अंदेशा रहता है। अंग्रेजी लिखने के इस प्रयास में अत्यधिक मानसिक श्रम करना पड़ता है। इसके इतर यदि हम हिंदी में लिखने का प्रयास करते हैं तो हमें अधिक श्रम करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। हिंदी में लिखने का सबसे बड़ा फायदा यही है कि वाक्य संरचना में शब्दों का क्रम यदि आगे-पीछे भी हो जाए तो वाक्य का अर्थ नहीं बदलता है। और फिर अपनी भाषा में अपनी बात कहना अधिक आसान होता है। हिंदीतर भाषाई क्षेत्र के लोगों के लिए भी अपनी मातृभाषा से अंग्रेजी की बजाय हिंदी में कोई बात अनूदित कर कहना अत्यधिक आसान होता है। ऐसे में हिंदी में सरकारी काम अत्यधिक आसान होता है।





अयन दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

राजभाषा हिंदी का महत्व

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची परिचायक भी है। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।

भारत में ऐसे स्थान हैं जहाँ लोग हिंदी बोल सकते हैं, समझ सकते हैं परंतु उसे लिख और पढ़ नहीं पाते हैं, इसलिए हिंदी भाषी लोगों को हिंदी लिखने और पढ़ने की बात भारतीय संविधान में निर्दिष्ट की गई है। भारत बहुभाषीय राष्ट्र होने के कारण और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के चलते राजभाषा हिंदी को अभी तक वह सम्मान प्राप्त नहीं हो सका जो वास्तव में किसी एक राष्ट्र की प्रधान भाषा को मिलना चाहिए।

भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुँचा सकते हैं। विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों द्वारा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। यहाँ तक कि यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता मिली है।

हिंदी भाषा की तरफ आज की युवा पीढ़ी का ध्यान आकर्षित करने के लिए हर साल हमारे देश में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

हिंदी दिवस पूरे देश में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस मौके पर शिक्षण संस्थानों और सरकारी कार्यालयों में कई प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनमें कविताओं, वाद-विवाद, क्विज, इत्यादि के माध्यम से हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला जाता है।

वही भाषा जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे उत्तम माध्यम हिंदी है। इसलिए इसे प्रचारित करना चाहिए। अतः सभी पाठकों से निवेदन है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का उपयोग करें क्योंकि इसके प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

जिस देश को अपनी भाषा
और साहित्य के गौरव का
अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं
हो सकता। – डॉ. राजेन्द्र
प्रसाद



उत्पल चटर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अपना शहर कोलकाता

कोलकाता (Kolkata) शहर की पहचान पहले कलकत्ता (Calcutta) नाम से थी और सन् 1911 तक यह शहर भारत की राजधानी था। हुगली नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित यह शहर, पश्चिम बंगाल राज्य की वर्तमान राजधानी, पूर्वी भारत का आर्थिक हब और भारत का सांस्कृतिक तथा कलात्मक केंद्र है। हालांकि यह शहर क्षेत्र और जनसंख्या के आधार पर तो बहुत ही बड़ा है लेकिन ऐतिहासिक और पुरातत्व स्थापत्य के हिसाब से पूरे भारत तथा विश्व में इसकी एक अलग ही पहचान है।

सन 1690 में तीन गाँव (कलिकाता, गोविन्दपुर और सुतानुटी) को लेकर स्थापित यह ऐतिहासिक शहर समय के साथ-साथ क्षेत्र और जनसंख्या की दृष्टि से विस्तृत होते हुए देश में आज तृतीय विशालतम मेट्रोपोलिटन क्षेत्र के रूप में विराजमान हुआ है। इस शहर में विभिन्न भाषाओं और जाति के लोग मिल-जुल कर रहते हैं, इसलिए कोलकाता कॉस्मोपॉलिटन शहर के रूप से प्रसिद्ध है। इस शहर को 'सिटी ऑफ जॉय' तथा देश की 'सांस्कृतिक और साहित्यिक राजधानी' भी कहा जाता है। शहर की एक खास विशेषता है कि यहाँ के अड़ोस-पड़ोस में रहनेवाले लोगों के अंदर एक मजबूत समुदाय भावना रहती है और यहाँ की संस्कृति एवं परंपरा के अनुसार करीबी पड़ोसी बनाकर और फ्रीस्टाइल बातचीत (Adda) से लोग आनंद के साथ अपना दैनिक जीवन बिताते हैं।

इस शहर का उत्तरी हिस्सा अर्थात् उत्तर कोलकाता शहर का पुराना भाग है जिसमें पुराने स्थापत्य और संकरी गलियाँ हैं। मध्य कोलकाता शहर का वाणिज्यिक केंद्र है, जहाँ बी. बी. डी. बाग, बड़ाबाजार, एस्पलानेड, पार्क स्ट्रीट जैसे महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र और ऑफिस स्थित हैं। साउथ कोलकाता का बाद में अपेक्षाकृत आधुनिक निर्माण से विस्तार हुआ। कोलकाता का विस्तार पूर्व और पश्चिम में भी बहुत हुआ है, खासकर पूर्वी भाग की दो महत्वपूर्ण टाउनशिप - 'साल्ट लेक' और 'न्यू टाउन राजारहाट' ने कोलकाता को एक अलग ही आयाम दिया है।

कोलकाता के औपनिवेशिक स्थापत्य के दर्शन इसके हर कोने में होते हैं, साथ ही साथ आधुनिक स्थापत्य के संयोजन से यह शहर विश्व में एक अद्वितीय अनुभव की जगह बन चुका है। बहुत सारी इमारतों के मूल भाव इन्डो-इस्लामिक और इन्डो-सारसेनिक स्थापत्य पर आधारित हैं। इनमे से कुछ महत्वपूर्ण भवनों को 'हेरिटेज' मान्यता दी गई है।



नेशनल लाइब्रेरी



सेंट पॉल्स कैथेड्रल

शहर में स्थित भारतीय संग्राहलय देश में सबसे पुराना (1814 में स्थापित) है। विक्टोरिया मेमोरियल शहर के आकर्षण के केंद्र में है। सेंट पॉल्स कैथेड्रल जिसका निर्माण 1847 में सम्पन्न हुआ, इन्डो-गोथिक स्थापत्य



भारतीय संग्राहलय

का आदर्श उदाहरण है। जातीय ग्रंथागार देश के सबसे बड़े सार्वजनिक पुस्तकालयों में से एक है।



विक्टोरिया मेमोरियल

साइंस सिटी देश तथा एशिया के सबसे बड़े विज्ञान केंद्र के रूप में शहर के गर्व का विषय है। कोलकाता शहर को हावड़ा से जोड़ने वाले दो प्रसिद्ध सेतु 'हावड़ा ब्रिज (रवीन्द्र सेतु)' और 'द्वितीय हुगली ब्रिज (विद्यासागर सेतु)' न केवल यातायात के लिए जरूरी



द्वितीय हुगली सेतु



हावड़ा ब्रिज



ट्रेजरी बिल्डिंग्स

हैं, बल्कि ये कोलकाता की दर्शनीय जगह भी हैं। यह गर्व की बात है कि कोलकाता के हेरिटेज भवनो में हमारा **कार्यालय भवन 'ट्रेजरी बिल्डिंग्स'** भी शामिल है। इसमें प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), प.बं और प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), प. बं. दोनों कार्यालय एक ही भवन से संचालित होते हैं। ट्रेजरी बिल्डिंग्स सन 1882-1884 में लॉर्ड रिपन के कार्यकाल के समय स्थापित हुई थी और यहाँ पहले ब्रिटिश इंडिया के वित्त विभाग के कार्यालय थे।

कोलकाता की परिवहन व्यवस्था में एक विशिष्टता है। यहाँ एकतरफ मेट्रो रेलवे, आधुनिक गाड़ियां चलती हैं, इसके साथ-साथ ट्राम, पीली टैक्सी, हैण्डपूल रिक्शा भी

रास्ते में दिखाई देती हैं। कोलकाता मेट्रो का संचालन 1984 में शुरू हुआ था जो देश में सबसे पहले शुरू हुई अंडरग्राउंड मेट्रो सेवा है। इसके साथ कोलकाता की 'इलेक्ट्रिक ट्राम' एशिया में सबसे पुरानी है। आधुनिक मोटर गाड़ी के बावजूद यहां की पीली टैक्सी का एक अलग ही आकर्षण है।

कोलकाता के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों में कालीघाट काली मन्दिर और



दक्षिणेश्वर मंदिर

दक्षिणेश्वर काली मन्दिर हजारों

भक्तों के उपासना स्थल हैं, देश के कोने-कोने से यहाँ लोग भक्ति-दर्शन के लिए आते हैं।

सितंबर-अक्टूबर में होनेवाली 'दुर्गा पूजा' कोलकाता का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण उत्सव है। यह उत्सव न केवल एक 'पूजा फेस्टिवल' है बल्कि यह पूरे विश्व में एक आकर्षक और कलात्मक सजावट (Glamorous celebrations & artistic decorations) से भरा उत्सव भी है।

कोलकाता को खेल प्रेमियों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। फुटबॉल से तो इस शहर का बहुत पुराना नाता है। फुटबॉल को लेकर शहर में एक अलग-सा जोश है जो देश की दूसरी जगहों में नहीं मिलता है। कोलकाता डर्बी मैच (Mohanbagan Vs East Bengal) जिसमें साल्ट लेक स्टेडियम जैसा विशाल मैदान भी हर मैच में खचाखच भर जाता है, की दुनिया में पहचान है। भारत में फुटबॉल का मान जैसा भी हो, शहर के लोगों के क्रिकेट प्रेम में भी कोई कमी नहीं है। इडेन गार्डन्स हर क्रिकेट प्रेमी में जोश और उत्साह भर देता है।

कोलकाता को खेल प्रेमियों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। फुटबॉल से तो इस शहर का बहुत पुराना नाता है। फुटबॉल को लेकर शहर में एक अलग-सा जोश है जो देश की दूसरी जगहों में नहीं मिलता है। कोलकाता डर्बी मैच (Mohanbagan Vs East Bengal) जिसमें साल्ट लेक स्टेडियम जैसा विशाल मैदान भी हर मैच में खचाखच भर जाता है, की दुनिया में पहचान है। भारत में फुटबॉल का मान जैसा भी हो, शहर के लोगों के क्रिकेट प्रेम में भी कोई कमी नहीं है। इडेन गार्डन्स हर क्रिकेट प्रेमी में जोश और उत्साह भर देता है।



पार्क स्ट्रीट



हुगली नदी से कोलकाता का दृश्य

कोलकाता की चर्चा हो और यहाँ के खाने और भोजन की विविधता का जिक्र न हो - यह नामुमकिन है। यहाँ पारंपरिक बंगाली भोजन के अलावा मुगलई, चाइनीज, कॉन्टिनेंटल, लेबनीज, ईरानियन, इत्यादि सभी प्रकार के व्यंजन उपलब्ध हैं और भोजन के शौकीन लोगों के लिए पार्क स्ट्रीट से बेहतर जगह क्या हो सकती है।

इतने सारे आकर्षणों के बावजूद कोलकाता में कई सारी कमियां भी हैं जिनमें से प्रमुख है इसकी गंदगी और यहाँ-वहाँ फुटपाथ पर कब्जा करनेवाले फेरीवाले (Hawkers) जिनके कारण शहर के बहुत सारे महत्वपूर्ण इलाकों तथा सार्वजनिक स्थानों की सुन्दरता में रुकावट आ रही है। उम्मीद की जाए कि कोलकाता का नागरिक प्राधिकरण आवश्यक कदम उठाकर शहर की जो छोटी-मोटी कमियां हैं इनको दूर करे जिससे यह शहर और भी आकर्षक मेट्रोपोलिटन शहर के रूप में देश तथा विश्व के सबसे अच्छे शहरों में से एक रहकर विराजेगा।



प्रशांत कुमार
हिंदी अधिकारी

स्मृति के कैनवस पर कुछ 'दृश्य' (कोलकाता, पुरी, शिमला)

1. देर रात बेटियों के साथ

रात के 12 बजने को हैं। कोलकाता एक गहरी खामोशी में सरक गया है। हमारा सरकारी क्वार्टर बिल्कुल सड़क के किनारे पर है - बालकनी और खिड़कियां फोरलेन सड़क पर खुलती हैं। कोरोना से पहले 24 घंटे तेज भागती गाड़ियों की रफ्तार और उनके कर्कश हार्न गरजते रहते थे। रात में ज्यादा परेशानी होती थी, लेकिन आजकल दिन ढलने के साथ ही सड़क भी ढल जाती है...। हरे परदे के पीछे खिड़की के जर्द शीशे पर सफेद

अंधेरा कुहासे-सा पसरा है ... लैंपपोस्टों की साफ स्निग्ध सफेद रोशनी पेड़ों की शाखाओं पर बारिश के पानी-सी चिपकी है... पत्ते अपना रंग छोड़कर गीले-से चमकते हैं... बीच-बीच में नीचे सड़क पर कोई भूली-बिसरी गाड़ी तेजी से निकल जाती है, धीमे वक्त में एक लहर उठती है और दूर तक जाती है, तब रात और ज्यादा रात महसूस होती है...

मैं सोलझेनित्सिन (रूसी साहित्यकार) की कहानियों के अनुवाद में उलझा हूँ। मोजार्ट का 'वायलिन कान्सर्ट' बज रहा है।

कुछ देर पहले (11 बजे तक) प्रांजल मेरे पास बैठी थी, दूसरी कुर्सी पर, अपना स्कूली काम करती हुई। तब मोजार्ट का 'सेरेनेड' बज रहा था ... पंखे की ठंडी हवा में उसके हल्के उज्ज्वल नोट प्रांजल के चेहरे पर ठहर जाते थे। उसको मेरे पास बैठकर मेरी तरह काम करना पसंद है - एक तरह से मुझे कॉपी करना। क्लासिकल म्यूजिक उसको भी काफी पसंद है। कहती है - 'इससे काम करने में हेल्प मिलती है, पापा।' अक्सर रात में देर तक वह मेरे पास बैठकर अपनी किताबों में गुम जाती है या ड्राइंग करती रहती है। उसकी रुचि मेरे पास बैठकर, मेरे साथ काम करने को महसूस करने में होती है। जब बीच-बीच में मैं कुछ ज्यादा देर के लिए रुक जाता हूँ - कुछ सोचता हुआ - तो मुझे चेताती है - 'पापा, वाट हैपनड, यू आर नॉट राइटिंग एनीथिंग, डांट लीव, मुझे ऐसे अच्छा लग रहा है।' कभी अपना काम छोड़कर एकटक मेरे लिखने को देखती रहती है (इस बीच हाथ में पेंसिल जरूर पकड़े रखती है... उसके लिए पेंसिल छोड़ देने का अर्थ है - इस दृश्य से बाहर हो जाना)... लेकिन जरूरी न होने पर कभी नहीं बोलती ... 'आई विल नॉट डिस्टर्ब यू पापा।' ... वह कभी अपनी बात से नहीं हटती।

11 बजते-बजते प्रांजल सोने चली जाती है, लेकिन द्दिशा देर तक मेरे आसपास बनी रहती है ... कमरे में अपने काम की चीजों की जांच-पड़ताल में लगी रहती है या 'स्लाइड' पर फिसलती हुई। मेरा देर तक काम करना उसके लिए देर तक जागने का मौका होता है। हालांकि प्रांजल की तरह वह भी समझ गई है कि 'पापा काम कर रहे हैं, डांट डिस्टर्ब' ... पूरे जोश में खेलती हुई भी वह एकदम चुप बनी रहती है, कॉटन कैंडी जैसी सॉफ्ट, हवा जैसी दृश्य-अदृश्य ... बीच-बीच में मेरे पास आ जाती है - कभी हेलो करने, कभी किस देने और कभी गले लगने ... मैं जब भी काम से नजर उठा कर उसकी ओर देखता हूँ तो वह हँसने लगती है ... रात की नर्म ठंडी खामोशी में द्दिशा का मुखड़ा अतिरिक्त ढंग से चमकने लगता है ...।

2. करोना काल के दो दृश्य

I. बगैर धूप का, बादलों से भरा लगातार छठा दिन ... ठंडा और जादूई। मैं बालकनी में सो गया था। देह पर चादर पड़ी थी जो सोने से पहले नहीं थी।

हालांकि मैं बस घंटा भर ही सो पाया था पर जागने के बाद लगा जैसे इस एक घंटे के बेसुध अंतराल ने मुझे दो भिन्न किनारों पर एक साथ खड़ा कर दिया है और मैं इनके बीच की अव्यक्त चीज को समझने की अनमनी सी कोशिश कर रहा था - क्या मैं सो गया था! यह कोशिश शायद कुछ ही देर रहती है - बस बहुत आरंभ के कुछ क्षण। फिर आप धीरे-धीरे सब कुछ पकड़ने लगते हैं। हाथ खुद-ब-खुद ही आसपास को टटोलने लगता है- क्या मैं वहीं हूँ जहां सोने से पहले था! सब चीजें अपनी जगह पर थी - रंग-बिरंगा कालीन, बच्चों के खिलौने, कागज के हवाई जहाज, पॉकेट डायरी, कलम और एक ओंधी रखी किताब जिसके भीतर ढेर-सी पढ़ी-अनपढ़ी कहानियां, अन्जान परिचय, अकुलाहटें, कुलबुलाहटें, छटपटाहटें...।

आंख पूरी तरह खुलते-खुलते नींद से पहले के दृश्य कच्ची नींद के सपनों-से मिचमिचाती आंखों की पुतलियों पर गड़मड़ाने लगते हैं।

प्रांजल मेरे पास ही आसमान की ओर टकटकी लगाए लेटी थी। उसके दोनों हाथ मुलायम तकिये पर सिर के नीचे बंधे थे, गोरे-चमकीले पैर बालकनी की छोटी दीवार एक दूसरे में अटके थिर थे। द्विशा निरंतर हवा के ठंडे झोंकों में घुली मिली हमारे पास आ-जा रही थी, कभी मेरे पेट पर लेट जाती और आंख बंद करके बिल्कुल निस्पंद हो जाती, कभी हम दोनों के बीच की छोटी-सी जगह में दुबक कर छिपने की कोशिश करती। मैं एक कहानी पढ़ रहा था। हर तीन-चार पंक्तियों के बाद प्रांजल का सवाल खड़ा हो जाता - आसमान का काला रंग, बादलों की सतह, बारिश की यात्रा, हवा की गति, पेड़ों की लंबाई, आकाश के परे की दुनिया, पंखियों के पंख, इंसानों की सीमा...। अंजू हमारे ठीक पीछे कमरे में फर्श पर बिछे गद्दे पर लेटी थी, टीवी में कुछ देख रही थी। उसकी अंगुलियां बीच-बीच में हमारे बालों में फिर जाती थी।

सामान्यतः स्मृति बहुत पीछे के दिनों की चीज होती है पर अब जागने के बाद ये सारा दृश्य एक पिकचर पोस्टकार्ड-सा ... एक बेहद सुखद स्मृति चित्र-सा महसूस होता है जो स्मृति होने के लिए समय की बाध्यताओं से मुक्त होकर, उनका उल्लंघन करके बहुत जल्दी मेरे पास आ गया है।

मैं खड़ा हो गया। बालकनी के नीचे खामोश शहर बहुत दिनों से एक ही बिंदु पर ठहरे हुए समय के पर्यायवाची-सा निश्चल-बेसुध पड़ा है। बीच दिन की नशीली नींद के बाद और ज्यादा अलसाया-सा जान पड़ता है।

लाकडाउन के इस अकल्पनीय दौर में समय-शहर-ध्वनि-मौन ... सब एक हो गए हैं ... एक-दूसरे के प्रतिबिंब। इन्हें अलग-अलग देखना मुश्किल सा जान पड़ता है।

II. दोपहर भर आसमान बरसता रहा। न बिजली, न गड़गड़ाहट, बस चुपचाप। हालांकि हवा हमेशा की तरह है पर आज सुबह से ही उसमें एक अलग किस्म की 'मैच्योरिटी-सी' है ... जैसे बताती हुई ... कि दबे, धीमे कदमों से, बिना शोर मचाए भी तेज चला जा सकता है। पुराने जमानों की मूक फिल्मों के जैसा दृश्य। पेड़ों की घनी टहनियों और पत्तों के बीच सीनेमा के पर्दे की तरह बड़ी-सी जगह निकल आती है ... पीछे के रंग-बिरंगे फूल और दूर के ऊंचे यूकेलिप्टस की स्लाइडें उस पर्दे पर नाचने लगती हैं।

बादल काले होते जाते हैं और नीचे दिन भी। बालकनी के छज्जे से मोटी बूंद टपकती हैं। बच्चे चौखट पर बैठे हैं-कागज और गते के छाते पकड़े। द्विशा बहुत मृदुल गंभीरता से बारिश और वृक्षों के नर्तन को देखती है - एकटका न जाने कौन से मोड़ पर कल्पना और दर्शन में विभेद हो जाता है पर यह निश्चित है कि अपने प्रारंभ पर दोनों एक ही होते हैं - बहुत मासूम, हैरान और उत्सुक। और प्रांजल - इस लगातार ठंडक में शिमला को याद करती हुई। उसको शिमला याद है, याद आता है। उसकी स्मृति हमेशा मेरे लिए प्रेरणा है ... शिमला में, पहाड़ों में वापिस लौटने की प्रेरणा।

मैं ठंडे नीले फर्श पर बैठा हूँ - उनके ठीक पीछे ... सुबह से सोलोजेनिटिसन की कहानी में संगीत की तरह उपस्थित घने

अकेलेपन के अनुवाद में उलझा हुआ। जितनी बार भी मेरी नजर ऊपर उठती है, एक शीतल-सा संतोष मेरे भीतर सरक जाता है - हर बार मेरी नजर के रास्ते में मेरे परिवार का चेहरा होता है ... वो उनसे बचकर नहीं निकलता, उसे उनसे बचकर निकलना नहीं आता।

... इस बीच अंजू टी.वी. पर फिल्म देख रही है - 'लिटल वुमन'। ठंडे अंधेरे कमरे में बर्फीली, गोल्डन सिनेमैटोग्राफी की चमक उठती गिरती है...और, क्लासिकल वाल्टज संगीत ...

3. कुछ दृश्य पुरी में

I. भगवान जगन्नाथ का महाप्रसाद। यद्यपि सरकारी आदेश से मंदिर बंद है लेकिन मंदिर की रसोई चालू है। भगवान जगन्नाथ की रसोई विश्व प्रसिद्ध है। महाप्रसाद दूर-दूर तक यात्रा करता है। ऑर्डर पर गांव देहात, दूर के शहरों में जाता है। अपने प्रसाद की प्रतीक्षा के दौरान मैंने देखा कि किस तरह बड़े बड़े ट्रक और छोटे-छोटे आटो, बैल गाड़ियों में प्रसाद लादा जा रहा था। प्रतिदिन एक लाख लोगों के लिए प्रसाद तैयार किया जाता है।

इस प्रसाद में कुछ अलौकिक है। बहुत थोड़ा खा कर ही आपका पेट भर जाता है और एक बार नहीं बल्कि तीन चार बार डकार आ जाती है। स्वाद दैवीय है। ऐसा स्वाद हमने कहीं नहीं चखा। पुरी को भगवान जगन्नाथ की रसोई भी कहा जाता है। शायद इसके पीछे की व्यवहारिक मान्यता और तर्क यह है कि समस्त पुरी में सब जगह भोजन का स्वाद एक सा है और अद्भुत है। हमने 4 दिन में चार अलग-अलग जगह पर भोजन लिया और चारों स्थान पर ही भोजन का स्वाद एक सा था। हालांकि सामुद्रिक भोजन भी बहुतायत में उपलब्ध है (लेकिन मंदिर के आसपास नहीं) किंतु उसकी महक पुरी में कहीं भी नहीं मिलती। सब ओर बहुत सात्विक -पवित्र खुशबू फैली रहती है। शुद्ध शाकाहारी भोजन, मिठाई और धूप-अगरबत्ती की खुशबू को मिलाने से जो मिश्रित खुशबू बनेगी वैसे ही अनुभूति समस्त पुरी में व्याप्त है। संभवतः इसलिए ही धार्मिक मान्यता है कि भगवान जगन्नाथ अर्थात् भगवान विष्णु पुरी में भोजन करते हैं।

प्रसाद की सामग्री में दालमा प्रसिद्ध है। दाल में अलग-अलग सब्जियां डालकर पकाई जाती हैं।

II. जगन्नाथपुरी में सूर्योदय।

मैंने शिमला में पहाड़ों के पीछे से सूर्य उदय होते हुए देखा है। मुझे शिमला का सूर्योदय बहुत सुंदर गद्यकाव्य जैसा महसूस होता था - युगों से संचित पहाड़ों के एकांत, शून्य और खामोशी का रूमानी शब्द चित्र ...।

लेकिन जगन्नाथपुरी का सूर्योदय - स्वयं ईश्वर का आगमन। इस दैवीय दृश्य के समक्ष आपकी कल्पना और साहित्यिक क्षमता की भी सीमा निर्धारित हो जाती है। ईश्वर समक्ष और आप निःशब्द, आवाक्, निर्विचार, शून्य, अर्पित।

महान और विराट ईश्वर स्वयं साक्षात् आते हुए दिखाई देते हैं। ऊपर विराट आकाश की शांति और नीचे विराट सागर के गर्जन के मध्य अथाह सौम्य अलौकिक प्रकाशपिंड। ऐसे ही तो होते हैं ईश्वर - ऐसे ही विस्तृत, ऐसे ही विराट, ऐसे ही सौम्य, ऐसे ही अलौकिक।

III. एक संक्षिप्त यात्रा कोणार्क की।

पुरी से लगभग 35 किलोमीटर दूरी पर स्थित कोणार्क सूर्य मंदिर तेरहवीं शताब्दी (1250) के गंग राजवंश के राजा नरसिंहदेव-1 द्वारा बनवाया गया था।

वर्तमान में यहां पूजा अर्चना नहीं की जाती। अब यह एक सांस्कृतिक स्मारक के रूप में ही विद्यमान है। लेकिन इसका प्राचीन

औदात्य, वैभव, ऐश्वर्य और श्री आज भी पूर्ववत् है। प्राचीन भारतीय निर्माण शैली देखते ही बनती है। यह मंदिर भगवान सूर्य के रथ के आकार का है जिसमें चारों ओर 24 गोल पहिए बहुत सुंदरता से उत्कीर्ण किए गए हैं। बचपन से सीबीएससी किताबों में इस स्थान को देखा था और अब जीवन के लगभग 40वें वर्ष में अपने परिवार सहित यहां उपस्थित होना मेरे लिए सांस्कृतिक आशीर्वाद और उपलब्धि एकसाथ था।

‘इतिहास का एक ही उद्देश्य है - मुझ तक पहुंचना और साहित्य का उद्देश्य है मुझ तक पहुंचे इतिहास को मेरी समझ में उतारना।’ - बहुत पहले यह विचार अपनी डायरी में दर्ज किया था। कोणार्क में इसने अपनी अर्थवत्ता ग्रहण की।

IV. उदयगिरि-खांडागिरि की गुफाएं, भुवनेश्वर।

काली भूरी लाल चट्टानों के भीतर अवस्थित एक ऐतिहासिक बौद्धिक अरण्य जहां सर्वशक्तिमान समय भी अपनी विनाशकारी और परिवर्तनकारी शक्तियों को त्याग कर एक निर्लिप्त सन्यासी की भांति शांत, एकाकी और ध्यानमग्न है। प्रथम शताब्दी के खारवेल के कलिंग का समय यहां रुका हुआ है, संचित है, अपने मूल रूप में संरक्षित है। जैन भिक्षुओं को समर्पित इन गुफाओं में आज भी प्रथम शताब्दी के देशकाल-मानस-चेतना से संपन्न जैन भिक्षुओं के क्रम-लयबद्ध उच्चारण सुनाई पड़ते हैं ... चट्टानी प्रकोष्ठों, कक्षों और मंडपों में भगवान महावीर की शिक्षाओं, आगमों और सूत्रों के निरंतर जाप की आवृतियों का सूक्ष्म धवल गुंजन आज भी विद्यमान है।

निश्चित रूप से इस स्थान ने आत्म-संरक्षण के संदर्भ में समय को जय किया है। यहां इतिहास की छाया नहीं है, बल्कि स्वयं इतिहास प्रत्यक्ष और निर्विकार है।

(यह गुफाएं प्रथम शताब्दी के मेघवाहन राजवंश के राजा खारवेल द्वारा जैन भिक्षुओं को समर्पित की गई थी। इन गुफाओं में स्थित हाथीगुंफा लेख से खारवेल के शासनकाल का पता चलता है। उदयगिरि-खांडागिरि की गुफाएं आग्नेय-सामने खड़ी पहाड़ियों पर स्थित हैं। खांडागिरि की पहाड़ी पर श्वेतांबर जैन मंदिर स्थित है। उदयगिरि पर 17 गुफाएं हैं और खांडागिरि पर 15 गुफाएं हैं।)

4. शिमला की रातें – दो दृश्य

I. शिमला में मैं पत्नी से कहता था - क्या भूत वर्तमान हो सकता है और वर्तमान भविष्य!! क्या हम घट रहे वर्तमान को समय में पीछे जाकर भविष्य के मानिंद देख सकते हैं?

पत्नी कुछ नहीं कहती थी। बस खिड़की के शीशे के बाहर देखती रहती। बाहर लैंप पोस्टों की पीली स्निग्ध रोशनीयों के आवरण में चुपचाप सफेद बर्फ गिर रही होती थी। भीतर मुलायम बिस्तर पर प्रांजल की कोमल नीड बिछी रहती थी। टीवी पर बहुत धीमी आवाज में कोई क्लासिकल अंग्रेजी फिल्म होती जिसमें यूरोपीय स्थापत्य से भरे दृश्यों के पीछे मोजार्ट, बीथोवन या लिस्त की कांपती-सी धुने उठती रहती।

एक और अच्छा दृश्य याद आता है। आधी रात - बर्फ की खामोश सफेदी - हीटर की हल्की गर्माहट - कॉफी। हम दोनों खिड़की के पास अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे थे। मेरे हाथ में टॉलस्टॉय की आत्मकथा थी। अंजु टीवी पर अंग्रेजी फिल्म ‘ब्रिजिस ऑफ स्पार्ड’ देख रही थी। कोल्ड वार - रशियन जासूस - मुकदमा - कैदियों का आदान-प्रदान - विभाजित जर्मनी - बर्लिन वॉल और एक शब्द बार-बार - ‘कम्युनिस्ट’। फिल्म के बाद देर तक इन शब्दों पर बात होती रही। शोस्तोकोविच की धीमी सिंफनी (पहले फिल्म में, अब फोन में) की तहों के ऊपर हमारी बातों में किंचित गंभीरता घुस आई थी। अंत में हमारा संवाद ‘कम्युनिस्ट’, ‘कम्युनिज्म’ पर आ टिका था। गूगल पर देर तक इसकी विभिन्न परतें खोलते रहे। पत्नी की उत्सुकता ज्यादा थी। यह 2017 की सर्दियों की रात थी। देश में कुछ पुराने शब्दों की अर्थगत पुनर्संरचना हुई थी। अब जिसके पास भी तर्क की कमी होती या विरोध

में तो रुचि होती पर बहस में नहीं, वो दूसरे को वामपंथी कहकर अस्तु कर देता।

उस रात सोने से पहले पहली बार हम दोनों के मुख से लगभग एक साथ निकला था - रशिया चलें।

पर जैसा कि मैंने पहले कहा कि मुझे कभी भी इनमें से एक भी दृश्य भूत का नहीं लगता। तो क्या 'वर्तमान' स्मृति की दहलीज के बाहर का उजाला है और 'स्मृति' वर्तमान के सुनहरे उद्यान के किनारे खड़ी खामोश छाया। दोनों एक दूसरे को देखते हैं, दोनों एक दूसरे के पास उपस्थित हैं, ये एक दूसरे के भूत और भविष्य नहीं हैं बल्कि एक दूसरे के समकालीन हैं...कि स्मृति बीता हुआ कल नहीं होती, बल्कि बीते हुए कल का वर्तमान होती है। क्या ये सच है!

II. रात के 11 बज गए थे। मैं सबसे अंत में बाहर आया था। बाहर सब कुछ सफेद। बर्फ के धीमे मोटे फोहे अब भी गिर रहे थे - झूलते हुए से। हवा में ठहराव था पर ठंड बहुत गीली महसूस होती थी।

रेदेव्यू का भारी दरवाजा खुला ही रह गया था। भीतर का गर्म अंधेरा बाहर रिस रहा था। कुछ देर मैं उसके सामने चौखट पर ही खड़ा रहा। उस उदास गर्माहट से नाता नहीं तोड़ना चाहता था जो शिमला की इन सर्द रातों की अंतर्मुखता में मेरी बहुत आत्मीय हो जाती थी।

स्कैंडल किसी पश्चिमी 'ओल्ड टाउन' के स्क्वायर जैसा नजर आता था - जादुई फिल्मों के सुनहरे उज्ज्वल छायांकन से आवृत।

इसके बीच ठीक सामने एक इंप्रेशनिस्ट चित्र था - सफेद कैनवस पर ठंडी पीली रोशनियों का चित्र। 'एल्फा' रात की अपनी अंतिम बत्तियों को समेट रहा था। चमचमाती शो विंडो में कोहरे की लकीरें पिघल रही थी। भीतर लोग रात की आखिरी कॉफी पीकर उठ रहे थे - बहुत शालीन, सभ्य, बेहतर सलीके और कपड़ों (मौसम, पहाड़ और बर्फीली रात के मुताबिक) में। दरवाजे पर मोटे ओवरकोटों में ढके लोग कांपते हुए अपना-अपना छाता खोल रहे थे।

थोड़ा इधर, 'लाला जी' का आदमकद स्टैचू भुरभुरी नरम बर्फ में छिप गया था। उसके पीछे ऊपर की ओर चढ़ती ग्रे ब्लूस्टर रेलिंग पर ताजा बर्फ पहाड़ी खरगोशों-सी खुद में सिमटी सो रही थी ... बगल में खड़े छोटे देवदार की शाखाएं बर्फ के बोझ से उनके ऊपर झुक आई थी। ... और इस सबके पीछे शिमला टाउन हॉल की विंटेज ट्यूडर इमारत सफेद बर्फ के समुद्र में खड़े प्रकाशित (फ्लड लाइटों के कारण) जहाज-सी नजर आती थी - वर्षों की अबाध यात्रा के बाद भी एकाग्र, दतचित्त... स्थितप्रज्ञ।

मैंने भी अपना छाता खोल लिया। लेकिन मुझे घर (कैथू में किराए का छोटा खाली कमरा) जाने की कोई जल्दी नहीं थी।

बर्फ की मोटी चादरों में लिपटी तिकोनी छतों की कतारें ... उनके नीचे सर्द रात के मद्धिम उजाले में सफेद कोमल निर्जन एकांत ! 'क्या मैं सच में किसी शहर में हूं इस वक्त !' मैं देर तक सोचता रहा था।

मेरे भीतर सदा ही ऐतिहासिक शहरों के लिए एक ग्रामीण सी तस्वीर रहती है। मेरे लिए ऐतिहासिक शहर स्थापत्य का चमकदार आत्ममुग्ध चेहरा नहीं है बल्कि वह उसका निरागस-निर्लिप्त चेहरा है। कोई शहर अपने समय में जितना आसक्त होता है उतना ही इतिहास हो जाने के बाद वितराग हो जाता है। शिमला इस पर खरा उतरता है। हालांकि इस भेद की अनुभूति में समय - दिन या रात - बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

जब 'एल्फा' भी पूरी तरह बंद हो गया तो एकाएक ही मुझे एहसास हुआ कि चारों ओर एक अलौकिक उज्ज्वल वीराने का विस्तार है और मैं उसके बीचो-बीच एकदम अकेला हूं ... कि शिमला की उस अनदेखे निर्वाक, अनछुई शून्यता का एकमात्र साक्षी हूं। यह किसी उपलब्धि से कम नहीं था - शिमला का यह चेहरा।

इसलिए उस रात मैं जल्दी नहीं लौट पाया। देर तक बर्फ और रोशनियों के लैंडस्केप पर टहलता रहा ... रुका रहा।

खुले रिड्ज पर बर्फ के छोटे-छोटे सफेद पठार उभर आए थे। उनके परे सफेद विनीत पहाड़ के नीचे खड़ी क्राइस्ट चर्च थी - चमकदार क्रिस्टल-सी। उसके इर्द-गिर्द जमा निर्मल पीला आलोक बर्फ पर पड़ता था ... दूर तक की बर्फ सुनहरी दिखाई देती थी। कैडलब्रा लैंप तिकोनी लालटेनों जैसे दिखते थे जिनको भुरभुरी बर्फ के खंभों पर लटका दिया गया था ... उनका उर्निंदा प्रकाश श्वेत उजली बर्फ के स्वरों जैसा प्रतीत होता था - स्निग्ध और तंद्रित। वृक्षों की मौन निश्चल शाखाओं पर सफेद मसृण बर्फ नरम जालों सी अटकी गई थी। चिनार का सूखा वृक्ष ठंडे अम्लान स्पेश में बर्फ की सफेद फुहार सा जम गया था।

हालांकि उस सारी रात में बाख का 'ब्रांडेनबर्ग' सुनता रहा था पर उस वक्त एकाएक ही मेरे भीतर मोजार्ट की 'सेरेनेड' की हूक उठी थी... एक धीमी और निस्संग धुन - जैसे खुशी के मुहाने पर खड़ा अकेलापन लेकिन उसके भीतर उतरने से कतराता हुआ ... खुशी का सफेद उज्ज्वल ठंडा प्रतिबिंब उस पर पड़ता है इसलिए बाहर चमकदार हो गया है, पर अपने भीतर वही है - खाली और गुम...

टाउन हॉल के बगल की सीढ़ियों से नीचे का स्कवायर ठहरी हुई शांत सफेद झील सा नजर आता था जिस पर मॉल रोड के साइनबोर्डों की रंग-बिरंगी नियॉन-लाइटों के धुंधले प्रतिबिंब बहुत धीमे से बिछे थे। नीचे उतरने से पहले टाउन हॉल के ठंडे काले 'बरोग' पत्थरों को छूता हूँ। बर्फ सफेद बेल-सी उनके ऊपर चढ़ गई थी। पत्थरों पर एक अस्फुट कोलार्ज निकल आया था।

नीचे उतरकर माल रोड की बर्फीली तिकोनी इमारतों को देर तक देखता रहा, लेकिन दूर से ही। शहर के बीच रहकर उसे एक निश्चित दूरी से देखने और समझने का प्रयास सिर्फ रात में ही किया जा सकता है।

शिमला का परिचय रात में निकलता है, विशेषकर ऐसी बर्फीली रात में। माल रोड की तिकोनी इमारतें जो दिन में शोरूम, पार्लर, रेस्टोरेंट, बार, कैफे या बैंक जैसे कितने नामों से जानी जाती हैं (और होती भी हैं), अब इस वक्त सफेद रात में अकेलेपन का जुझ नजर आती थी - स्माधिस्थ मौन साधक ...।

इतिहास और वर्तमान के बीच की बफर स्टेट में कुछ होता है जिसमें न तो इतिहास की वेदना होती है, न ही वर्तमान की पीड़ा ... फिर भी वो अपने समग्र रूप में बहुत आत्मीय लेकिन अनासक्त निर्वैयक्तिक संवेदना को धारण किए रहता है ... वो आपको इतिहास के मोह और वर्तमान के सत्य के बीच की लकीर पर थाम लेता है। भारत के शहरों में रात का शिमला इसका गंभीर उदाहरण है।

...और इस 'बीच की लकीर' पर ठहरा यह देर रात का शिमला वो नहीं होता जिसे हम सामान्य आंखों से देखते हैं या जो पोस्टकार्डों, तस्वीरों, टूरिस्ट एजेंसियों के एल्बमों या इंटरनेट पर होता है, बल्कि एक बिल्कुल नया चेहरा जिसे हमने पहले कभी नहीं देखा होता ... परिचय की अंतिम सीमा के बाहर का बहुत सारा और परिचय।

हिंदी के विरोध का कोई भी आंदोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस



सुकन्या दास
वरिष्ठ अनुवादक

आरसी

कहावत है कि - परिवर्तन ही एकमात्र स्थिर चीज़ है। हाल ही में मुझे इसका एक प्रत्यक्ष अनुभव हुआ, दूसरी बार। मेरा पहला अनुभव किशोर वर्षों की एकदम शुरुआत में ही हुआ था जब मुझे पापा के नौकरी में बदलाव के कारण अपना जन्मस्थान को छोड़कर महाराष्ट्र से बंगाल आना पड़ा था। जी हाँ “आना पड़ा” ही शब्द सबसे ज्यादा इस अनुभूति को व्यक्त करता है। अपना बचपन, अपने दोस्त, वो यादें, स्कूल सब को छोड़कर आना बहुत ही मुश्किल था जिसका एहसास मुझे बहुत सालों बाद हुआ था। फिर भी बचपना काफी हद तक रहने के कारण शायद मुझे उस समय उतना एहसास नहीं हो पाया था। मुझे हमेशा से ही अपनी भावनाओं को शब्दों में बयान करने में काफी असमंजस होता है। फिर भी यह मेरी एक छोटी सी कोशिश है इस लेख के द्वारा -

ऐसा कहा जाता है कि भाषा अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का कगार है। लेकिन कुछ लोग शायद इसका उपयोग पूरी तरह नहीं कर पाते हैं। ऐसा ही कुछ हाल मेरा भी है। भाषा शैली और साहित्य को लेकर



पढ़ाई करने के बावजूद मैं कभी अपनी भावनाओं को शब्दों में नहीं ढाल पायी हूँ। बचपन की उन गलियों को छोड़ कर आने के दुख का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष तरीके से मेरी माध्यमिक और उच्च-माध्यमिक के आरंभिक सालों में काफी पड़ा। पढ़ाई खत्म होने के पश्चात मैंने काफी जगहों पर काम किया है- कभी अध्यापक, कभी प्रोफेसर, कभी कंटेंट डेवेलपर, इत्यादि। हर एक क्षेत्र से बाहर आकर दूसरे दौर में जाना भी कभी नायाब अनुभूति रही है! जीवन की सीढ़ियों को तय करने में कहीं मैंने अपने आप को भी स्वाभाविक ही बदल दिया। हमेशा से ही जीवन की नई चुनौतियों का सामना करना, नए लोगों से संपर्क बनाना, नयी दोस्ती का आधार, कुछ तकरार, थोड़ा प्यार-यही सब इस बदलाव के हिस्से रहे हैं। 2016 में सरकारी नौकरी में पहली बार कार्यभार ग्रहण करने पर भी काफी डर, सहमी हुई, आशा, आत्मविश्वास के साथ उस छोटे से हिन्दी कक्ष में प्रवेश किया था। लेकिन समय और आस-पास के लोगो के प्यार, सहयोग, लाड़-प्यार से 6 साल पता नहीं कहां से निकल गए। नौकरी मिलने के वक्त मुझे पता भी नहीं था कि यह नौकरी स्थानांतरणीय है। एक माह काम करने के पश्चात इस सूचना से मेरा परिचय हुआ था। मज़ाक में बोलती थी हिन्दी कक्ष वालों का कोई ठिकाना नहीं है, उनसे ज्यादा दोस्ती नहीं बढ़नी चाहिए। इस बात को सच करते हुए अचानक 2022 के मार्च में पदोन्नति के साथ स्थानांतरण आदेश ई-मेल से प्राप्त हुआ। जितनी खुशी पदोन्नति की थी उससे कहीं ज्यादा दुख सबको पीछे छोड़ आने का था। तब भी मैं अपने अंदर इस भावनाओं के समुद्र को व्यक्त नहीं कर पाई थी, बस चुपचाप-सी आ गई थी। मुझे दोबारा अपने बचपन के दिन याद आ गए। फिर वही डर, सहमी हुई, आशा, आत्मविश्वास, प्यार, शायद तकरार के साथ नए दोस्त, नए रिश्ते, अनुभव बटोरने। हालांकि नया कार्यालय कोलकाता में होने पर भी, दुख कुछ कम नहीं हुआ था। लेकिन नए कार्यालय में आने की खुशी भी कुछ और ही थी। उसका कारण कभी और के लिए बाकी रहा। यहाँ पर भी कुछ सालों के सफर की शुरुआत फिलहाल तो काफी सकारात्मक तरीके से हुई है। आगे...

कुछ लोग आसानी से अपनी बातों को व्यक्त कर सकते हैं, लेकिन हर इंसान की अपनी एक दुनिया, अपनी एक अनुभूति

होती है जो शायद वो किसी से नहीं बांटता है। किसी की ज्यादा, किसी की कम - इसी को हम अंग्रेजी में 'इनर सर्किल ऑफ सेल्फ' कहते हैं। जितना मुझे नए लोग, नई जगह, नए दोस्त बनाने का शौक है, उतनी ही पुरानी यादें, पुराने लोग और छोड़ आई गलियों से प्यार है, हमेशा से ही। यादों की झोली में कुछ ऐसे अनुभव भी घर बना जाते हैं जिनका कोई मोल कोई तोड़ नहीं होता है। व्यक्तिगत अनुभव से ये बदलाव जितने ही जरूरी थे उतने ही म्लान थे। लोगो से जल्दी लगाव होना भी तो आज की दुनिया में एक अभिशाप ही है। कहते हैं इंसान को जिस चीज से ज्यादा डर लगता है, भगवान उसी का सामना मनुष्य से और ज्यादा करवाता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसे ही होता आ रहा है। जिंदगी का साथ निभाते हुए आगे समय फिर से किस मोड़ पर ले जाकर खड़ा कर दे और वो बदलाव भी किस तरह का हो, यही देखने और सामना करने की अपेक्षा है।



राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।

महात्मा गाँधी



बिपुल कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

स्वर-साम्राज्ञी लता मंगेशकर

भारतवर्ष कलाओं का देश है। यही वह पुण्यभूमि है जहां कई कलाएं विकसित, पल्लवित एवं पुष्पित हुई। इसी देश की मिट्टी में अनगिनत कलाकारों ने जन्म लिया जिनकी कला ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कला के क्षेत्र में भारतीय गायन भी अछूता नहीं है। गायन के क्षेत्र में भी इस देश से अनेक कलाकार प्रतिष्ठित हुए हैं लेकिन उन सबमें स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी की आवाज अपना एक

अलग स्थान बनाए हुए है। मानों कई टिमटिमाते तारों के बीच ध्रुवतारे का स्थान हो। लता जी के सुर एवं उनकी आवाज की मिठास ही उन्हें बाकी गायकों से अलग कर देती है।

लता जी का जन्म 28 सितंबर 1929 को एक मध्यवर्गीय मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता दीनानाथ मंगेशकर एक शास्त्रीय गायक एवं रंगमंच कलाकार थे। अपने भाई-बहनों में लता जी सबसे बड़ी थीं। इनकी बहनें मीना, आशा, उषा एवं भाई हृदयनाथ भी कुशल गायक एवं संगीतकार हैं। लता जी के पहले गुरु इनके पिता ही थे जिन्होंने उनको पाँच वर्ष की उम्र से ही संगीत की शिक्षा देनी शुरू कर दी थी। 1942 में जब लता जी 13 वर्ष की थीं तभी इनके पिता का देहांत हो गया। 1945 में लता जी मुंबई आ गयी और यहाँ उन्होंने उस्ताद अमन अली खान से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लेना शुरू कर दिया। 1948 में संगीत निर्देशक गुलाम हैदर जी इनके गुरु हुए जिन्होंने मजबूर (1948) फिल्म में 'दिल मेरा तोड़ा, मुझे कहीं का न छोड़ा' गाने के माध्यम से लता जी को प्रसिद्धि दिलवाई। आगे, उनके द्वारा गाया हुआ महल (1949) फिल्म का गीत 'आएगा आने वाला' भी काफी लोकप्रिय हुआ। इन गीतों ने लता जी के लिए एक गायिका के रूप में प्रसिद्धि के सारे दरवाजे खोल दिए। 50-60 के दशक में लता जी ने कई प्रतिष्ठित संगीत निर्देशकों जैसे शंकर जयकिशन, नौशाद, एस.डी. बर्मन, इत्यादि के संगीतों पर अपनी आवाज दी। मधुमति (1958) फिल्म के गाने 'आजा रे परदेशी' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर अवार्ड भी मिला। उनके द्वारा गाया गया गाना 'ऐ मालिक तेरे बंदे हम' आज भी लोगों के हृदय में एक नई आशा की भावना का संचार करता है। देश के शहीदों को समर्पित कवि प्रदीप की रचना 'ऐ मेरे वतन के लोगों' में लता जी की आवाज को भला कैसे भूला जा सकता है। 90 के दशक में उन्होंने विख्यात निर्देशक यश चोपड़ा की अधिकांश फिल्मों में गाने गाए, साथ ही कुमार सानू, हरिहरन, मोहम्मद अजीज, सोनू निगम, इत्यादि गायकों के साथ युगल गानों को भी अपनी आवाज दी। कला के प्रति उनके अतुलनीय योगदान को देखते हुए उन्हें 'दादा साहब फाल्के' पुरस्कार एवं भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी नवाजा गया। उन्होंने कई भारतीय भाषाओं के गीतों को अपनी आवाज दी।

6 फरवरी 2022 को लता जी इस दुनिया से विदा हो गईं और इसी के साथ गायकी के एक युग का अंत हो गया। आज भले ही भौतिक रूप से लता जी के स्वर मौन हो गए हों लेकिन उनके द्वारा गाए गए गीत एवं उनके सुर अनंत काल तक इस दुनिया को गुंजायमान करते रहेंगे।





अभिरुप घोष

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ऑडिट अनुभव बगदाद में घटित एक रात

फरवरी 2020 में, मैं संयुक्त राष्ट्र (United Nations) ऑडिट असाइनमेंट पर इराक गया था। श्री एम. एस. सुब्रमण्यम, IA&AS के नेतृत्व में IA&AD की हमारी एक पांच सदस्यीय टीम 15 फरवरी को बगदाद पहुंची। हमारी टीम को टाइग्रिस नदी के तट पर बगदाद में “ग्रीन ज़ोन” नामक एक उच्च सुरक्षा क्षेत्र में ठहराया गया था।

हम रविवार दोपहर वहां पहुंचे। प्राधिकरण ने हमें बताया कि इराक अब भी एक संकटग्रस्त क्षेत्र है, इसलिए हमें अगली सुबह एक अनिवार्य सुरक्षा वार्ता में भाग लेना चाहिए। मैं दुबई एयरपोर्ट पर रात्रि बिताने के कारण थोड़ा थक गया था, इसलिए मैं लगभग रात्रि 9 बजे जल्दी सो गया। अचानक, लगभग पूर्वाह्न के 2 बजे मैं एक महिला की रोबोटिक आवाज से जाग गया। मेरे लिए आश्चर्य की बात है कि हॉल के सबसे दूर के कोने में स्थापित संचार प्रणाली उस ध्वनि को उत्सर्जित कर रही थी। थोड़ा ध्यान देकर मैंने पाया कि आवाज कह रही थी, “टेक कवर”... “टेक कवर”...



संयुक्त राष्ट्र के परिसर में एक अलग कॉटिज प्रकार के आवास के अंदर होने के कारण मैं कमरे में अकेला था। यह बुलेट प्रूफ दरवाजे के साथ एक ठोस संरचना थी। युद्ध क्षेत्र के किसी भी अनुभव के बिना एक नागरिक होने के नाते, मैंने इसे एक आतंकवादी हमले के रूप में देखा और किसी भी निकट आपदा के घटने की प्रतीक्षा कर रहा था। अपार्टमेंट के अंदर कवर लेने के लिए कोई जगह नहीं थी। इसलिए मैंने अपने सामान में से एक खंजर निकाला, उसे मजबूती से पकड़ लिया और हॉल के सबसे सुरक्षित कोने में अपने आप को स्थापित किया, मेरे पूरे शरीर के रोंगटे खड़े हो गए। मैंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा और सुरक्षा विभाग (UNDSS) द्वारा हमें प्रदान की गई सुरक्षा पुस्तिका में निहित निर्देशों को फिर से दोहराने की कोशिश की। लेकिन हे भगवान!! चिंता और आशंका मेरी बुद्धि पर भारी पड़ रही थी। इस तरह करीब 15-20 मिनट बीत गए, मानो अपरिहार्य मृत्यु मेरे द्वार पर दस्तक दे रही हो। वही इंटरकॉम फिर बजा। फिर उसी रोबोटिक महिला की आवाज सुनाई दी: “ऑल क्लीयर”... “ऑल क्लीयर”....

मैं अभी भी हैरान खड़ा था। मेरे एक साथी ने मुझे इंटरकॉम पर कॉल किया। वह भी पिछले 20 मिनट से इसी स्थिति से गुजरा था। उन्होंने बताया कि उन्होंने कंपाउंड में स्थित सुरक्षा नियंत्रण कक्ष के संपर्क में आए टीम लीडर से बात की। उन्होंने बताया कि सब कुछ नियंत्रण में है। हम निश्चित हो सकते हैं। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि इस मामले पर अगली सुबह चर्चा की जाएगी।

हालांकि, मैं रात भर अपनी आँखें नहीं झपका सका; सोना दुर्लभ था...

अगली सुबह, हमारी औपचारिक सुरक्षा वार्ता के दौरान अधिकारियों ने वास्तविक तथ्य समझाया-

हालांकि 2003 में तानाशाह 'सदाम हुसैन' को सत्ता से बेदखल करने के बाद इस दिन इराक औपचारिक रूप से अमेरिका द्वारा नियंत्रित है, लेकिन 'सदाम' समर्थक कार्यकर्ता अभी भी गुप्त रूप से काम कर रहे हैं। वे कभी-कभी बगदाद में अमेरिकी दूतावास की ओर लक्ष्य करते हुए स्वदेशी रूप से निर्मित कुछ मिसाइलों को लॉन्च करते हैं। जब भी संयुक्त राष्ट्र के इस परिसर में स्थापित राडार (rudder) आकाश में किसी मिसाइल का पता लगाता है तो स्वचालित सुरक्षा प्रणाली (Automated Security System) संयुक्त राष्ट्र के कर्मचारियों को सचेत करती है ताकि कोई भी कवर क्षेत्र से बाहर न जाए क्योंकि अमेरिकी दूतावास संयुक्त राष्ट्र परिसर के 3 किमी के भीतर है और कोई भी पथभ्रष्ट देश निर्मित मिसाइल कहीं भी उतर सकती है। यह महीने में लगभग 5-6 बार होता है।



उस घटनापूर्ण रात ने ऐसी चेतावनी जारी की जिससे हमारी रीढ़ की हड्डी कांप गई। हालांकि, खाड़ी क्षेत्र में कोविड के प्रकोप के कारण हमें अपनी यात्रा कम करनी पड़ी। लगभग दो सप्ताह के अपने प्रवास के दौरान, हमने एक बार और दिन के समय भी इस तरह के अलर्ट का अनुभव किया।

(अनुवाद सौजन्य: विक्रम सिंह मीना, आंकड़ा प्रविष्टक)



हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती



गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्वास्थ्य

अच्छा स्वास्थ्य मनुष्य का असली धन है। अच्छा स्वास्थ्य जीवन की पहली जरूरत है। अच्छे स्वास्थ्य के बगैर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है जो मनुष्य को सफलता एवं प्रगति के पथ पर आगे ले जाता है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही पूर्ण रूप से अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकता है। अच्छा स्वास्थ्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाने में मदद करता है जबकि बीमार व्यक्ति खुद को असहाय समझने लगता है और उनमें नकारात्मक सोच भर जाती है। सही मायने में एक स्वस्थ व्यक्ति वही माना जाता है जो किसी भी तरह की शारीरिक बीमारियों

और तनाव से मुक्त होता है। स्वस्थ शरीर में ही अच्छी सोच विकसित होती है, इसलिए सफल एवं आनंदित जीवन जीने के लिए अच्छा स्वास्थ्य होना बहुत जरूरी होता है।

बीमार एवं अस्वस्थ व्यक्ति न सिर्फ परिवार की जिम्मेदारी उठाने में असमर्थ होते हैं, बल्कि अपने दैनिक कामों के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। अगर परिवार का कोई एक व्यक्ति बीमार होता है तो इसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। बीमार व्यक्ति का परिवार मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर हो जाता है एवं उन्नति नहीं कर पाता है। वहीं, एक स्वस्थ व्यक्ति मानसिक, शारीरिक रूप से मजबूत होने के कारण अपना जीवन-यापन बहुत अच्छे तरीके से कर पाता है। क्योंकि बीमारी और अस्वस्थता इंसान को असफलता की तरफ धकेलती हैं एवं विकास में रुकावटें डालती हैं। अस्वस्थ व्यक्ति नकारात्मकता से भर जाता है।

जो व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ रहना चाहते हैं उन्हें अपने स्वास्थ्य का उचित रूप से ध्यान रखने की जरूरत है।

पौष्टिक भोजन :- अच्छे स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन लेना सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। ऐसा खाना खाएं जिससे आपके शरीर के अंदर उचित मात्रा में प्रोटीन, विटामिन, मिनरल्स पहुंच सकें। सादा, सुपाच्य एवं संतुलित भोजन अधिक लाभदायक होता है। हरी सब्जी, मौसमी फल, दूध-दही प्रतिदिन भोजन में शामिल करना चाहिए। इससे भोजन में पौष्टिकता आती है। हमें शुद्ध जल का सेवन करना चाहिए। सड़े-गले-बासी भोजन, जंकफूड एवं फास्टफूड अर्थात् अपाच्य भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए। अपनी शारीरिक प्रकृति के विरुद्ध आहार का सेवन नहीं करना चाहिए। जैसे दूध के साथ मछली, दूध के साथ नमक वाले व्यंजन, गर्म भोजन के बीच ठंडा जल, ताजे फल खाकर जल पीना, इत्यादि। भोजन करने के कम से कम 30 मिनट बाद ही पानी पीना चाहिए। नशीले पदार्थों जैसे शराब, सिगरेट, तंबाकू, इत्यादि के सेवन से बचना चाहिए। पौष्टिक भोजन ग्रहण करने से व्यक्ति स्वस्थ एवं ऊर्जावान महसूस करता है, साथ ही स्फूर्ति भी बनी रहती है।



नियमित रूप से व्यायाम एवं योग :- आज के युग में स्वस्थ रहने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि आप योग एवं व्यायाम को नियमित रूप से अपने जीवन में

शामिल करें। नियमित व्यायाम करने से शरीर को बल मिलता है, पाचन शक्ति ठीक रहती है, हड्डियां मजबूत बनती हैं वहीं योग करने से दिमाग को आराम मिलता है एवं आलस्य दूर भागता है व नई ताजगी महसूस होती है। योग एवं व्यायाम करने से शरीर सुंदर एवं आकर्षक बनता है। भोजन करने के बाद व्यायाम नहीं करना चाहिए और न ही व्यायाम करने के तुरंत बाद भोजन करना चाहिए। सुबह या शाम शुद्ध और खुली हवा में व्यायाम एवं योग करने से शरीर को काफी फायदे होते हैं एवं बीमारियां दूर भागती हैं। व्यायाम एवं योग व्यक्ति को स्वस्थ रखने में काफी मदद करता है, इससे मानसिक संतुलन बना रहता है और वो तनावमुक्त रहता है।

शांत निद्रा :- एक स्वस्थ शरीर के लिए 6-8 घंटे की नींद लेना बेहद जरूरी है। नींद पूरी नहीं होने के कारण शरीर को काफी थकावट महसूस होती है एवं सिर भारी लगने लगता है। कई बार मानसिक तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है। इसलिए स्वस्थ रहने के लिए हर किसी को पर्याप्त नींद लेनी चाहिए ताकि कोई भी कार्य करने के लिए शरीर में पर्याप्त ऊर्जा बनी रहे।



अगर आप अच्छा स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हैं तो आप सभी सुखों के आधार को प्राप्त कर सकते हैं। आप पैसे से कोई भी वस्तु खरीद सकते हैं लेकिन अच्छा स्वास्थ्य कभी नहीं खरीद सकते। अगर रुपया-पैसा हाथ से निकल जाए तो दोबारा कमाया जा सकता है लेकिन अगर स्वास्थ्य हाथ से निकल जाए तो दोबारा नहीं बनाया जा सकता है। जो व्यक्ति पैसे एवं दूसरी चीजों की अपेक्षा स्वास्थ्य को ज्यादा महत्व देता है वो जीवन में सदा खुश रहता है। इसलिए स्वास्थ्य को जीवन का सबसे बड़ा धन कहा गया है। हरेक भारतीय को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनना चाहिए क्योंकि स्वस्थ नागरिक ही मिलकर एक स्वस्थ समाज व देश का निर्माण करते हैं।



हिंदी में जो ध्वनि संगीत है, जो शांति की सूक्ष्म झंकार परिव्याप्त है, जो पवित्रता है वह बेजोड़ है।

सुमित्रानंदन पंत



सन्दीप कुमार सरकार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

परोमा का जन्मदिन (अनुवाद)

(एक दिन एक बांग्ला लेख पढ़ रहा था, जिसने मेरे अन्तर्मन को छू लिया, जिसकी लेखिका अनन्या पोद्दार हैं। उक्त लेख का हिन्दी अनुवाद यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।)

आज परोमा का जन्मदिन है। लेकिन घर में किसी को भी याद नहीं है कि आज उसका जन्मदिन है। उसके पति, बेटा, बेटी सभी अपने-अपने कार्य में इतने व्यस्त हैं कि माँ का जन्मदिन भी एक विशेष दिन है – यह ख्याल किसी को भी नहीं है। परोमा भी अभिमान के चलते किसी को भी यह बात नहीं कह पाती है। डॉक्टर पति बराबर से ही इन सब मामलों में उदासीन हैं। उनको अपना ही जन्मदिन याद नहीं रहता, तो उस पर पत्नी के जन्मदिन को याद रखने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता है। यह सब उनसे आशा करना ही बेवकूफी है।

फिर भी, परोमा को अपने बच्चों पर पूरा भरोसा था। शायद उनको माँ का जन्मदिन याद होगा। लेकिन बच्चे भी अपने पिता जैसे ही निकले। जबकि, परोमा परिवार के सभी सदस्यों के विशेष दिन का काफी यत्न से पालन करती है। मात्र उसी के मामले में, किसी को भी यह दायित्व-पालन याद नहीं रहता।

सबेरे खाना बनाने वाली अनुमा दी ने रसोईघर में जाते-जाते परोमा से पूछा, “आज खाना क्या बनेगा, बहूजी?”

उसके पति और बच्चे सभी सुबह जल्दी-जल्दी निकल जाते हैं। इसलिए नाश्ता उतनी परिपाटी (यत्न) से नहीं बन पाता है। लेकिन रात के भोजन में उसके जन्मदिन के उपलक्ष्य पर कुछ विशेष बन जाए – यह सोच कर उसने बेटे से पूछा – “आज रात में क्या खाओगे? मीट बनवाऊँ?”

माँ के प्रश्न का उत्तर परोमा की बेटी तिलोत्तमा ने दिया – “माँ, आज रात कॉलेज में हमारे एक प्रोफेसर साहब अपनी बेटी होने की खुशी में पार्टी देने वाले हैं। रात में मैं सिर्फ दूध और कार्नफ्लेक्स खा लूँगी।”

बेटे सायन ने कहा – “माँ, मैं भी आज ऑफिस के बाद दोस्तों के साथ निकलूँगा। पहले से ही प्लान किया हुआ है। मेरे लिए भी कुछ मत बनाना।”

परोमा ने अब अपने उदासीन पति से पूछा – “आज रात कुछ स्पेशल खाने की इच्छा है क्या?”

पति अस्पताल के लिए तैयार होते-होते बोले – “क्यों? तुम्हारा कुछ अच्छा खाने का मन कर रहा है क्या? तो फिर रात का इन्तजार क्यों, दोपहर में ही बनवा लो।”

परोमा की दोनों आँखें भर आईं। यह सब कौन हैं? यह सभी परोमा के अपने लोग हैं। जो लोग माँ के जन्मदिन को याद नहीं रख सकते हैं, वे माँ को प्यार कैसे करेंगे।

उसने मन मारकर अनुमा दी से कहा – “आज पनीर की सब्जी बना लेना।”

अनुमा ने पूछा – “और क्या बनेगा?”

परोमा ने झिड़कते हुए कहा – “जो समझ में आए बना लेना...”

पति, बेटा, बेटी सभी एक-एक करके घर से निकल गए। परोमा अनमने मन से मोबाइल लेकर फेसबुक टटोलने लगी। अचानक एक नोटिफिकेशन बजा। नोटिफिकेशन खोला तो देखा कि कजरी का पोस्ट – “जन्मदिन की ढेरों शुभकामनाएँ, मामोनी”



कजरी का पोस्ट पढ़कर परोमा का मन और भी उदास हो गया। जिस लड़की से अभी उस लड़की ने अपनी होने वाली सास का जन्मदिन याद रखा है और अपने बच्चे... पूरी तरह

रिश्ता जुड़ा ही नहीं,
भूल गए।

परोमा सोचती है, “हो सकता है, यह सभी मुझसे ज्यादा योग्य हैं, इसीलिए मुझे उतना महत्व नहीं देते हैं। बेटा इनकम टैक्स अफसर है, बेटी केमिस्ट्री की प्रोफेसर और मैं, मैं क्या... कुछ भी तो नहीं। मेरी योग्यता क्या है! समीर की माँ जब अस्वस्थ रहती थी उनकी देखभाल के लिए मुझे इस गृहस्थी में ले आए थे। हालांकि सुख, समृद्धि, सामाजिक सम्मान सभी कुछ तो मिला है, लेकिन जीवन की छोटी-छोटी खुशियों से वंचित रहना पड़ा। मेरी इच्छा, मेरी खुशी का ख्याल किसी को भी नहीं आता है। फिर भी, जब तक मेरी सास जिन्दा थी, वो प्यार मुझे मिला था। खुद बिस्तर से उठ नहीं पाती थी, लेकिन आज के दिन अनुमा दी को खीर बनाने के लिए जरूर कहती थी। आज वो भी नहीं हैं, सो मेरा जन्मदिन किसी को भी याद नहीं है।”

इसी बीच कजरी का फोन आया, “हैलो मामोनी, तबियत तो ठीक है न? ऑनलाइन हो पर मेरे सवाल का कोई जवाब नहीं दिया?”

भावी बहू से अपने बच्चों की क्या शिकायत करना – यह सोचकर उसने कजरी से कहा – “नहीं-नहीं, थोड़ी व्यस्त थी।”

कजरी ने सीधा पूछा – “तुम्हारा मन दुःखी है, है न मामोनी? सायन, तोमा, बापि – किसी को भी तुम्हारा जन्मदिन याद नहीं है। इसीलिए मन उदास है, क्यों?”

होने वाली बहू से मन की वेदना छुपाई जा सकती है, लेकिन एक मनोविद के सामने - यह बहुत मुश्किल होता है। अतः उसे उसकी बात माननी ही पड़ी।

परोमा रूंधे गले से बोली – “असल में मैं तो उनके बीच में जंचती नहीं हूँ। शायद, इसीलिए घर में मेरा महत्व बहुत कम है। मुझे भी तो प्यार चाहिए, सम्मान चाहिए – यह शायद उन लोगों को लगता नहीं है।”

यह सब सुनकर कजरी ठहाका मार कर हँसने लगी, फिर बोली – “तुम्हारा ख्याल वे सब क्यों रखेंगे! तुम्हारा ख्याल तो तुम्हें खुद ही रखना है। अपनी लाइफ, अपने तरीके से जीओ। कोई आकर तुम्हें अच्छा रखेगा – तभी तुम अच्छा रहोगी, मामोनी। यह कैसी बात कह रही हो?”

कजरी की बातों से और हँसी से परोमा को गुस्सा आ गया, “इसका मतलब – माँ का जन्मदिन भी भूल जाएंगे? क्यों, मैं तो कुछ नहीं भूलती? उन लोगों को कब क्या चाहिए, उनके कहने से पहले ही हाजिर कर देती हूँ। बदले में क्या थोड़ी-सी सहानुभूति की आशा भी नहीं रख सकती – माँ होने के नाते।”

“नहीं, बिल्कुल नहीं।”

कजरी के इस अप्रत्याशित जवाब से वह हतप्रभ रह जाती है।

कजरी बोलती जाती है – “अपने बच्चों के लिए तुम जो भी कुछ करती हो – मातृ स्नेह, ममता के नाते करती हो। यहाँ कुछ

भी वापस पाने की आशा रखना उचित नहीं है। आज किसी को भी तुम्हारा जन्मदिन याद नहीं है – तो क्या हुआ। तुम्हे तो याद है ना सेलिब्रेट करो, इन्ज्वाय करो।”

परोमा अवाक् रह गयी और बोली – “ऐसा भी क्या कभी होता है?”

कजरी इत्मीनान से बोली – “क्यों नहीं होगा! तुम बाहर कहीं घूमने निकल जाओ। सारा दिन घुमो-फिरो, मस्ती करो और रात में बाहर ही खाना खा कर लौट आना। उन लोगों के बैठने पर कहना कि – आज तुम्हारा जन्मदिन था – सो तुमने अपने तरीके से सेलिब्रेट किया है – किसी को भी तुम्हारी फिक्र नहीं है।”

परोमा बोली – “तो... तुम कहती हो कि उन लोगों का बेरूखापन – कोई विशेष बात नहीं है।”

कजरी अब बड़े ही शान्त मन से बोली – “देखो, सायन, तमा और बापी कोई भी तुम्हारे प्रति उदासीन नहीं है। आजकल की व्यस्तता भरी जिंदगी में हम सामान्य नहीं रह सकते हैं। और एक बात – वे तुम्हारी ओर ध्यान नहीं देते – इसके लिए तुम खुद ही जिम्मेदार हो। तुम इस गृहस्थी की एक महत्वपूर्ण सदस्या हो – यह दूसरों को समझाने का दायित्व भी तुम्हारा है।”

परोमा तुनक कर बोली – “हां-हां, सब जिम्मेदारी तो मेरी ही है, उन लोगों की कोई जिम्मेदारी नहीं बनती है क्या?”

कजरी धीरज रखते हुए बोली – “वे जितनी भी उन्नति करें जितने भी बड़े हो जाएँ – तुम्हारे संतान ही रहेंगे। और संतान यदि गलती करती है तो यह माँ का कर्तव्य बनता है कि वह बच्चों की गलती बताए और सुधार दे। लेकिन, सबसे पहले तुम खुद एक नसीहत लो कि अपने आप को ठीक रखना। तुम अगर अपना ख्याल नहीं रखोगी तो कोई तुम्हें क्यों महत्व देगा। अच्छा, तुम ही बताओ कि इतने सालों में तुमने अपने लिए कितने उपहार खरीदे?”

“एक भी नहीं, परोमा ने धीरे से कहा।”

“तब तो दूसरे को दोष देने से क्या फायदा? जब, तुम्हारे अपने ही पास तुम्हारा महत्व कम है, तो किसी दूसरे से महत्व पाने की आशा करना व्यर्थ है।”

परोमा असमंजस में पड़ गई और कजरी से पूछा – “तब मुझे क्या करना चाहिए?”

कजरी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया – “यह तो मुझे नहीं पता। लेकिन, आज का दिन तुम कैसे बिताती हो यह मैं कल पूछूंगी।”

परोमा ने फोन रखा। अब वह काफी हल्का महसूस कर रही थी। वह सोचने लगी कि कजरी सच ही तो कह रही थी कि घर के सभी लोग उसके जन्मदिन को भूल सकते हैं, इसका मतलब यह तो नहीं कि आज का दिन यूँ ही बीत जाए।

घर से निकलकर उसने अनुमा दी को आवाज लगाई – “अनुमा दी, क्या पनीर की सब्जी बन गई?” “अभी नहीं, बहूजी।” अनुमा ने उत्तर दिया।

“अब पनीर बनाकर कोई फायदा नहीं। ऐसा करो, तुम फ्रिज में देखो, चिंगड़ी मछली रखी है, निकाल लो और बढ़िया से मलाई करी बनाओ तो। साथ ही नवरत्न दाल और बैंगनी भी बनाओ। और हाँ, आम की चटनी बनाना भूलना नहीं। मुझे बहुत पसंद है।”

परोमा अब बहुत खुश थी। उसने जल्दी से स्नान किया और विकास को फोन लगाया – “हैलो विकास, आज थोड़ा आ सकते हो, गाड़ी लेकर निकलना है।”

विकास परोमा का पार्ट टाइम ड्राइवर है। वह थोड़ी देर में ही आ गया। दोपहर में परोमा ने अपनी पसन्द का खाना खाया।

अनुमा दी को भी अपने बगल में बिठाया। इसके बाद, उसने आलमारी से एक सुन्दर नया चूड़ीदार सेट निकालकर पहना। यह सेट आज-कल, आज-कल के चलते पहनना नहीं हो रहा था। इसलिए आज का विशेष दिन परोमा ने चुन लिया नये चूड़ीदार को पहनने के लिए।

दोपहर के भोजन के पश्चात वह गाड़ी लेकर निकल पड़ी। सारी दोपहर खूब मार्केटिंग की। सबसे पहले अपने लिए एक सुन्दर-सी साड़ी खरीदी और मन ही मन अपने आप से बोली – “मैंने अपने आप को एक सुन्दर उपहार दिया। जन्मदिन मुबारक हो।” इसके बाद एक-एक करके अपने पति, बेटे और बेटी सभी के लिए उपहार खरीदे। अन्त में उसने पेस्ट्री, आइसक्रीम और रात के खाने के लिए बिरयानी, मटन कोरमा खरीदा और घर लौट आयी। जबकि उसे पता था कि रात का खाना उसके बच्चे नहीं भी खा सकते हैं। फिर भी, उसने सभी के लिए खाना खरीदा था।

घर लौटकर उसने देखा कि समीर अपने चैम्बर से लौट आये हैं। तमा भी अपने कमरे में टी.वी. देख रही है और सायन भी घर में हैं। वो बरामदे में खड़ा होकर फोन पर किसी से बात कर रहा है।

खाने का पैकेट किचन में और उपहारों का पैकेट बिस्तर पर रखकर, हाथ-मुँह धोकर वह समीर के पास बैठी। चेहरे पर क्रीम लगाते हुए समीर से पूछा – “आप चैम्बर से इतनी जल्दी आ गए? मरीज कम थे क्या?”

“हाँ” – समीर ने उत्तर दिया।

परोमा ने बच्चों को अपने कमरे में बुलाया और उनको उपहार दिखाए। तमा ने पूछा – “माँ, आज इतना मार्केटिंग क्यों की?”

परोमा ने एक मिनट सोचा और उत्तर दिया – “ऐसे ही। इच्छा हुई, सो कर ली।”

सायन बोला – “आज बहुत गरमी है। लेकिन बाहर शानदार हवा चल रही है। चलो सब लोग छत पर चलते हैं। रोज तो ए.सी. में रहते ही हैं।”

बात करते-करते सायन अपनी बहन के साथ छत पर चला जाता है। समीर और परोमा भी उनके पीछे हो लेते हैं – थोड़े अन्तराल में।

छत पर पहुँचते ही परोमा आश्चर्यचकित रह जाती है। सारा छत झालर, बैलून (गुब्बारे) और स्टारों से सजाया हुआ है। बीच में एक मेज पर सुन्दर-सा सफेद केक रखा हुआ है।

परोमा कुछ देर के लिए अवाक् रह जाती है – तब क्या ये सब कुछ भी नहीं भूले?

सवेरे से खामखवाह ही वह मन में कष्ट पाल रही थी। उसने केक काटा, सभी ने उसे जन्मदिन की बधाई दी। तमा और अनुमा ने मिलकर मेज पर प्लेट सजाई। केक के साथ तन्दूरी चिकन - जो सायन ने खुद बनाया था।

“आज दफ्तर से लौटकर सायन बाबा ने थोड़ा भी विश्राम नहीं किया, बहूजी।” अनुमा दी ने हँसते हुए कहा।

परोमा की आँखों में खुशी के आंसू थे। अभी तक भी उसका मूल्य समाप्त नहीं हुआ है। तभी कजरी का वीडियो कॉल आया – “मामोनी, जन्मदिन कैसा बीता?”

परोमा ने हँसते हुए कहा – “बदमाश – तुमने ही इन सब लोगों को बताया होगा?”



पास बैठे तमा ने कहा – “कजरी क्यों याद दिलाएंगी। यह दिन याद नहीं रखने का प्लान उसी का था।”

परोमा को बड़ा आश्चर्य हुआ।

कजरी ने हँसते हुए कहा – “इतना-सा अभिनय नहीं करने से तुम्हारा जन्मदिन इतना आनन्दमय नहीं होता। आज की जिंदगी में सभी लोग व्यस्त हैं। कोई दिन याद न रख पाना स्वाभाविक है। मैं भी तो कई महत्वपूर्ण दिन भूल जाती हूँ। इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं अपने माता-पिता, रिश्तेदारों और दोस्तों को प्यार नहीं करती। मन के अन्दर दुविधा रखकर क्या जीवन जिया जा सकता है। इसीलिए, यह थोड़ा सा नाटक करना पड़ा - यह समझाने के लिए कि अपना ख्याल खुद ही रखना पड़ता है।”

तमा बोली – “कजरी, तुम क्यों नहीं आई वीडियो कॉल कर रही हो”

कजरी मुस्कुरायी और बोली – “मैं कल आऊँगी, आज तुम सब इन्ज्वाय करो। मैं बासी खाना खाऊँगी।”

कजरी फोन रखती है। वे चारों लोग छत पर बैठकर घण्टों बिताते हैं। और रात का आनन्द लेते हैं।

परोमा मन ही मन सोचती है – “दिन की शुरुआत ही सब कुछ नहीं... कभी-कभी दिन के ढलने तक इन्तजार करके देखना पड़ता है। सच में, आज का जन्मदिन मेरे लिए बहुत ही खास रहा। अपने आप से प्यार करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना हम दूसरों से करते हैं।”



हमें उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है,
यानि वह हिंदी है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर



**भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक महोदय का
कार्यालय में आगमन**

**भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक महोदय कार्यालय
में वृक्षारोपण करते हुए**



**उच्चाधिकारियों के साथ भारत के
नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
महोदय**

**द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा
सम्मेलन (सूरत)-2022 का शुभारंभ
करते हुए माननीय केंद्रीय गृह एवं
सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह**





हिन्दी पखवाड़ा - 2022 के दौरान
आयोजित हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन
करते हुए श्री रनेन्दु सरकार, वरिष्ठ
उप महालेखाकार (प्रशासन एवं
ए.एम.जी.-1) महोदय



हिन्दी पखवाड़ा- 2022 के दौरान
आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
में हिन्दी कक्ष के अधिकारी एवं
कर्मचारी गण

कार्यालय के श्री अवध किशोर शर्मा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)
कोलकाता नराकास शीर्ष-स्तरीय
हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता
में तृतीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए



हिन्दी कार्यशाला का
आयोजन



अमित चक्रवर्ती

एम.टी.एस.

छुट्टियों में राजस्थान घूमने का अनुभव

भारत में घूमने के लिए बहुत-सी जगह हैं। अगर आप भी छुट्टियों में परिवार के साथ कहीं बाहर जाना चाहते हैं तो राजस्थान घूमने जाइए। राजस्थान भारत का मशहूर पर्यटन स्थलों वाला राज्य है। यहां ऐतिहासिक किलों से लेकर सुंदर हिल स्टेशन भी हैं, जहाँ आप अपने परिवार के साथ यादगार समय बिता सकते हैं। राजस्थान के ऐतिहासिक किलों को देखने के लिए हर साल हजारों-लाखों पर्यटक यहां पहुंचते हैं। आज मैं आपको राजस्थान के उन पाँच शहरों के बारे में बताऊंगा जो छुट्टियाँ बिताने के लिए बेहतर ऑप्शन हो सकते

हैं और इन शहरों का मेरा अनुभव भी बताऊंगा।

पिंक सिटी एक अच्छा विकल्प सिटी पैलेस, आमेर स्थल देखें। यहां रहने खाना भी कम कीमत इमारतों के गुलाबी रंग सिटी कहा जाता है।

राजस्थान का एक यहां अरावली पहाड़, हवेलियों की सुंदरता



पर भी खाने-पीने के बहुत सारे विकल्प मौजूद हैं। उदयपुर से हम जोधपुर शहर पहुंचे। इसे 'सन सिटी' भी कहा जाता है। यहाँ देखने के लिये पहले हम मेहरानगढ़ फोर्ट गए, फिर वहां से कायलाना झील, राव जोधा डेजर्ट रॉक पार्क और चामुंडा माता मंदिर भी गए।

फिर हम आ गए जैसलमेर। भारतीय इतिहास और राजस्थानी संस्कृति को जानने के लिए जैसलमेर से अच्छा विकल्प नहीं है। यहां सुंदर किलों, मरूभूमि, राजस्थान की संस्कृति को करीब से जानने का मौका मिलेगा। जैसलमेर के लिए देश के हर राज्य से ट्रेन की सुविधा उपलब्ध है। अंत में हम आ गए अजमेर। अजमेर शहर राजस्थान के खूबसूरत पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां हम पुष्कर शहर गए। पुष्कर में ही भारत का एकमात्र भगवान ब्रह्मा का मंदिर है। अजमेर में घूमने की बहुत जगह हैं, जिसमें अजमेर शरीफ के मजार, वारागढ़ फोर्ट, किशनगढ़ किला, अकबरी मस्जिद, अकबर का महल और संग्रहालय, नरेली जैन मंदिर, अनासागर झील जैसी जगह भी शामिल हैं। हमें राजस्थान घूमना इतना अच्छा लगा कि बार-बार राजस्थान जाने का मन करता है।

जयपुर घूमने के लिए है। यहां हमने हवा महल, फोर्ट जैसे मशहूर पर्यटन के लिए होटल और में मिलता है। यहां की वजह से इसे पिंक

और शहर है उदयपुर। मंदिर, महल, झील और देखते ही बनती है। यहां

अगर हिंदुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है।

महात्मा गांधी



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की भूमिका

हम सब लोकतांत्रिक देश के नागरिक हैं जिसका चौथा स्तम्भ 'मीडिया' को माना जाता है। आधुनिक भारत में करोड़ों लोग अपने दिन का प्रारंभ समाचार पत्रों से करते हैं। मीडिया ने भारत में स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व लोगों के मन में देशप्रेम की भावना का संचार किया और आज भी वह लोगों के मन में स्वस्थ नागरिकता का बीजारोपण करने के लिये सतत प्रयत्नशील है।

मीडिया ही एक मात्र ऐसा साधन है जो जनमानस की आवाज को संचारित करता है। सूचनाओं के प्रसारण के अतिरिक्त मीडिया हमें जागरूक भी बनाता है। चाहे वह धूम्रपान एवं मदपान से होने वाली हानियों के प्रति सचेत करना हो अथवा उपभोक्ता जागरूकता के लिए 'जागो ग्राहक जागो' अभियान या फिर एड्स, कोरोना जैसी गंभीर बीमारियों के प्रति जन-जन को जागृत करना या 'आतंकवाद' के प्रति सचेतनता, इन सब के लिए मीडिया का योगदान निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

इसके साथ-साथ मीडिया हमें एक उत्तरदायी नागरिक बनाने का भी कार्य करता है। चाहे वह अनिवार्य मतदान के लिये प्रेरित करना हो या भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने की शक्ति प्रदान करना।

हम कह सकते हैं कि मनुष्य का जीवन सूचनाओं की परिधि से घिरा हुआ है और इस परिधि का केन्द्र मीडिया है। अर्थात् मीडिया द्वारा संचारित सूचनाएं हमारी बुद्धि, तर्क एवं विश्लेषण क्षमता को परोक्ष रूप से प्रभावित करती हैं जो हमारी विचारधारा का धरातल तय करती हैं। जैसी सूचनाएं वैसा हमारा बौद्धिक विकास।

हम पूर्ण रूप से सूचनाओं के अधीन हो चूके हैं। ऐसे में मीडिया का रोल सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

परन्तु आज मीडिया का एक ऐसा रूप सामने आ रहा है जो निश्चित ही जनहित में नहीं है। वर्तमान मीडिया अपने मूल कर्तव्यों से विचलित होती नजर आ रही है। आज की मीडिया यह निर्णय करने में अक्षम प्रतीत होती है कि कलाकारों के रिश्तों की चर्चा आवश्यक है या गंभीर राजनैतिक, आर्थिक एवं राष्ट्र के विकास से संबंधित मुद्दों की चर्चा करना?

आज टी.आर.पी. की स्पर्धा में समाचारों को इतना बढ़ा-चढ़ा कर एवं उत्तेजक संगीत के साथ पेश किया जाता है कि मनोरंजन और समाचारों के बीच कोई सीमा-रेखा ही नहीं होती। आज दिन-प्रतिदिन टेलीविजन चैनलों पर धार्मिक तथा राजनैतिक विषयों पर डिबेट का प्रचलन चल पड़ा है जिसका धरातल वास्तविकता से बिल्कुल खाली है। यही नहीं, टी.वी. पर अपने पड़ोसी देशों की राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों पर अधिक चर्चा होती है जिसका हमारी अपनी वर्तमान समस्याओं से कोई संबंध नहीं होता। दर्शकों को आकर्षित करने के लिये प्रत्येक समाचार को ब्रेकिंग न्यूज कहकर दिखाया जाना और गंभीर मुद्दों को गौण कर दिया जाना, आज की मीडिया की पहचान बन चुका है।



कई बार यह तर्क दिया जाता है कि मीडिया हमें वही दिखाती है जो हम देखना या पढ़ना चाहते हैं परन्तु मीडिया का कार्य जन मानस के स्तर को उठाना और उनमें उचित रुचियों का निर्माण करना भी है।

मीडिया के ये कार्यकलाप हमारी बौद्धिकता को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं और इस प्रकार लोगों के बीच उन्माद का सृजन किया जाता है। फलतः आज का मानव अपनी विश्लेषण क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता और उसे जो कुछ भी दिखाया या सुनाया जाता है उस पर आंख बंद करके विश्वास कर लेता है। इस तरह से हम मानसिक रूप से गुलाम कर दिए गए हैं। परिणामस्वरूप जिस “सूचना” की सीढ़ी चढ़कर हमारा विकास हुआ आज वही सूचनाएं हमारे लिए विष का कार्य कर रही हैं जो मानव सभ्यता को नष्ट करने के लिए आतुर हैं।

स्वतंत्रता के सात दशक के बाद भी हम आज अपने नैतिक मूल्यों को टटोलते हैं तथा सरकारी तंत्र को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। निश्चित ही हमारा मीडिया वर्तमान समय में अपने नैतिक आचरण को भूल गया है और अपने चौथे स्तम्भ होने के गौरव को खो रहा है। हमें याद है कोरोना महामारी का वह समय जब पूरा विश्व त्रस्त था और अनगिनत जानों की बलि चढ़ी। परन्तु उस वक्त भी मीडिया नेताओं की नुमाइंदगी करता रहा तथा लोगों को पथ भ्रष्ट करता रहा। मीडिया तो शासन के कार्यों की आलोचना करता है। परन्तु जब शासन और मीडिया का गठजोड़ हो जाता है तब लोकतंत्र को पतन से कोई नहीं बचा पाता।

और अंततः इस समय की यही मांग है कि हमें अपनी बुद्धि, तर्क और विश्लेषण क्षमता के गुण का प्रयोग करना चाहिए तथा समाचारों से सहज ही विचलित और प्रभावित नहीं होना चाहिए। तभी हम मानव समाज को बचा पाएंगे। यदि मीडिया भी अपनी नैतिकता का अनुसरण करे तो निश्चित ही स्वयं को सही मायने में लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ सिद्ध कर सकता है।



आन्ध्र प्रदेश के भाषा-विद् श्री मोटूरि सत्यनारायण के प्रयासों ने सन 1972 ई. में प्रयोजनमूलक हिन्दी को स्थापना दी। उन्हें चिन्ता थी कि हिन्दी कहीं केवल साहित्य की भाषा बनकर न रह जाए। उसे जीवन के विविध प्रकार्यों (functions) की अभिव्यक्ति में समर्थ होना चाहिए। हिन्दी को राजभाषा घोषित कराने तथा हिन्दी के राजभाषा के स्वरूप का निर्धारण कराने वाले सदस्यों में दक्षिण भारत के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक थे। वे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निर्माता भी हैं।

हिंदी विरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

राजेंद्र प्रसाद



अर्णव पाल
लेखापरीक्षक

चिकित्सा विज्ञान की सीमाएं और चुनौतियां

सृष्टि के आदिम युग के लोग असहाय, लाचार थे। वे लोग उस समय विज्ञान से सैकड़ों मील दूर थे, उन्हें किसी भी शारीरिक बीमारी के इलाज के बारे में जानकारी नहीं होती थी। किसी भी शारीरिक बीमारी से मौत एक सामान्य घटना की तरह थी। सभ्यता के क्रमिक विकास ने लोगों को पहले आयुर्वेदिक उपचार के माध्यम से उपचार की विधि सीखने के लिए प्रेरित किया। फिर धीरे-धीरे यह सुधार बड़ा होता गया और इसका लाभ हम आज उठा रहे हैं। चिकित्सा विज्ञान की अकल्पनीय उन्नति ने सभ्यता को विकास के शिखर पर पहुँचा दिया है।

चिकित्सा विज्ञान की प्रगति :- चिकित्सा विज्ञान ने अभूतपूर्व प्रगति की है और अब भी कर रही है। प्राचीन कबीराजी चिकित्सा के स्थान पर होम्योपैथी और एलोपैथिक पद्धति आ गई है। पेनिसिलिन, क्लोरोमाइसिन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, इत्यादि की खोज ने चिकित्सा में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। फिर अलग-अलग बीमारियों के लिए अलग-अलग टीके खोजे गए। इन सभी महोषध ने लोगों को कई तरह की लाईलाज बीमारियों से बचाया है।

रोग निदान में चिकित्सा विज्ञान और प्रगति :- प्राचीन काल में रोग के निदान की व्यवस्था बहुत सीमित थी। अनुभव का उपयोग करके निदान और उपचार किया गया। फिर निदान के विभिन्न तरीकों की खोज की गई जैसे- एक्स-रे, अल्ट्रासोनोग्राफी, इकोकार्डियोग्राफी, इत्यादि। परिणामस्वरूप, अब रोगों का आसानी से निदान और उपचार करना संभव हो गया है और मृत्यु दर कई गुना कम हो गई है। चिकित्सा में इस अभूतपूर्व सफलता के साथ हम तपेदिक, कुष्ठ रोग और पोलियो के संकट को दूर करने में सफल रहे हैं। अब अंग प्रत्यारोपण जैसी परिष्कृत चिकित्सा प्रक्रियाएं भी शुरू हो गई हैं।

चिकित्सा विज्ञान की सीमाएं :- चिकित्सा विज्ञान की सीमाओं के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ नहीं है, लेकिन कुछ तथ्यों ने गंभीर सवाल उठाए हैं :-

1. कहा जाता है कि कोरोना की बीमारी पहले थी और अब भी है। शायद यह इतने बड़े या भयानक तरीके से नहीं थी। लेकिन कहना होगा कि 2020 की इस जानलेवा बीमारी को अभी तक रोका नहीं जा सका है। हालांकि वैक्सीन की खोज हो गई थी, लेकिन इसे खोजने में कई दिन लग गए। जिन लोगों को टीका लगाया गया है, वे भी इस बीमारी से संक्रमित हो रहे हैं। मौत के आंकड़ों को देखकर ही बीमारी की गंभीरता का अंदाजा लगाया जा सकता है। आज भी पीड़ितों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अर्थात् तमाम विकास के बावजूद चिकित्सा विज्ञान कोरोना के शत-प्रतिशत इलाज में सफल नहीं है।
2. चिकित्सा विज्ञान और इसकी प्रगति के बीच कैंसर या एड्स जैसी बीमारियां मौत के पक्ष में एक कांटा है। इन सभी घातक बीमारियों के लिए चिकित्सा विज्ञान में अभी तक कोई टीका या दवा नहीं बन पाई है। जो इलाज उपलब्ध है वो बीमारी के जल्दी पता लगने पर निर्भर है। बीमारी के तीसरे या चौथे चरण में इलाज ज्यादातर नाकाम रहता है।
3. सार्स और इबोला वायरस विज्ञान से बचकर लोगों की जान ले रहा है।
4. आखिरकार, आधुनिक समय में चिकित्सा में प्रगति के बावजूद डेंगू, मलेरिया के लिए कोई टीका नहीं खोजा गया है, हर साल कई लोग डेंगू और मलेरिया से मर जाते हैं। मच्छरजनित बीमारियां वास्तव में चिकित्सा विज्ञान का मजाक उड़ाती हैं। चिकित्सा विज्ञान डेंगू, मलेरिया के खिलाफ कोई वैक्सीन नहीं बना पाया है कि बच्चों को बचपन में ही टीका लगा दो और फिर जीवन भर डेंगू-मलेरिया नहीं होगा।

उपसंहार :- विज्ञान विश्व सभ्यता के लिए वरदान है और कुछ मामलों में लाचार भी है, लेकिन कुल मिलाकर चिकित्सा विज्ञान की सफलता ने अपनी असफलता को पीछे छोड़ दिया है। कुछ घातक बीमारियों की दवाओं और वैक्सीनेशन की खोज मिलने के साथ हम एक स्वर्ण युग में प्रवेश करेंगे।



श्रीमा सेठ

पत्नी – श्री अर्णव पाल, लेखापरीक्षक

ऑनलाइन कक्षाओं के नुकसान और फायदे

परिचय:- वर्तमान शताब्दी की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है घातक रोग कोविड। इससे भी ज्यादा अहम है इस समय का लॉकडाउन। कोविड के नियंत्रण पर इस लॉकडाउन का प्रभाव इस लेख का विषय नहीं है, लेकिन मैंने शिक्षा व्यवस्था पर इसके प्रभाव को संक्षेप में लिखने की कोशिश की है।

प्रतिकूल प्रभाव:-

- 1) शिक्षण संस्थान का माहौल हो गया बर्बाद:- एक छात्र कम उम्र से ही अपने सहपाठियों के साथ स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, कोचिंग क्लास में टीचर के सामने पढ़ने का सपना देखता है। हम बचपन से ऐसे बड़े हुए हैं। स्कूल के माहौल में बड़ा होना, नए दोस्तों को जानना या शिक्षकों के साथ धीरे-धीरे संबंध बनाना - यह अब बीते दिनों की बात हो गई है। आज स्कूल के कमरे की मेज, कुर्सियां, बेंच, ग्लोब या वाल हैंगिंग पर नक्शा पढ़ने का मजा अपने कमरे में या बिस्तर पर बैठ कर ऑनलाइन कक्षाएं लेने से गायब हो गया है।
- 2) सामाजिक संबंधों के बीच दूरियां पैदा कर दी है:- स्कूल से दूर कमरे की चारदीवारों तक सीमित जो ऑनलाइन कक्षा चलती है, उसके फलस्वरूप शिक्षक-छात्र या सहपाठियों के बीच का संबंध धीरे-धीरे खत्म हो रहा है।
- 3) एकाग्रता का भंग होना:- सीखने में एकाग्रता बहुत जरूरी है, खास कर बच्चों में। बच्चों के मामले में देखा जा रहा है कि वे ऑनलाइन क्लास में काफी देर तक मोबाइल फोन या लैपटॉप के सामने बैठने को लेकर विचलित रहते हैं। नतीजतन, पढ़ते समय उनकी एकाग्रता भंग हो जाती है।
- 4) तकनीक का इस्तेमाल एक समस्या है:- ऑनलाइन क्लास का प्राथमिक विषय शिक्षा में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग है। इंटरनेट की मदद से उस क्लास का आयोजन मोबाइल या लैपटॉप पर कुछ ऐप के जरिए करना होगा। यद्यपि, शहरी क्षेत्रों के लोग तो इस तकनीक को अपनाने में सक्षम हो गए हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने अभी तक इस संबंध में एक लंबा सफर तय नहीं किया है। बच्चे बिल्कुल नहीं जानते कि इंटरनेट का उपयोग कैसे किया जाता है। नतीजतन, यह कभी नहीं कहा जा सकता है कि इंटरनेट सेवा के माध्यम से सभी को उचित ढंग से शिक्षा दी जा सकती है।
- 5) उन्नत इंटरनेट सेवा का अभाव:- हमारे देश में इंटरनेट सेवा की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। इसका विस्तार नहीं किया गया है। यहाँ तक कि मौजूदा इंटरनेट स्पीड भी बहुत तेज नहीं है। परिणामस्वरूप, छात्रों के एक बड़े हिस्से के लिए ऑनलाइन कक्षाएं बहुत कठिन हैं।



- 6) अतिरिक्त खर्च:- ऑनलाइन कक्षाओं की शुरुआत के साथ इंटरनेट कनेक्शन एक आवश्यकता बन गया है। इंटरनेट उपयोग के लिए प्रति माह लागत बहुत बढ़ गई है। इस खर्च ने मध्यम वर्ग पर अतिरिक्त दबाव बनाया है।
- 7) शारीरिक परेशानी होना:- दिन के एक बड़े हिस्से के दौरान लैपटॉप, फोन के सामने बार-बार क्लास करने से कुछ शारीरिक समस्याएं हो रही हैं। मोबाइल फोन या लैपटॉप की स्क्रीन से निकलने वाली किरणें आंखों के लिए काफी हानिकारक होती हैं, साथ ही एक ही जगह पर ज्यादा देर तक बैठे रहने से भी कमर दर्द होने लगता है। बच्चे चिड़चिड़े भी हो जाते हैं।
- 8) मोबाइल की लत:- ऑनलाइन कक्षाओं के चलते बच्चों की मोबाइल की लत धीरे-धीरे बढ़ी है। यह लत बचपन को मैदान से दूर कर रही है। नतीजतन, बच्चों का मानसिक और शारीरिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

फायदे:-

बच्चों के लिए तो नहीं लेकिन युवाओं के लिए ऑनलाइन कक्षाओं के फायदे भी नीचे बताए गए हैं :-

1. ऑनलाइन कक्षाओं के परिणामस्वरूप कोविड जैसी जानलेवा बीमारी के प्रसार को मानव समाज, विशेषकर बच्चों से दूर रखा गया है।
2. घर पर बैठ कर किसी परिचित जगह पर पढ़ाई करना सभी के लिए सरल हो गया है।
3. घर बैठे पढ़ने से यात्रा के समय की काफी बचत हुई है, इसलिए अब बहुत सारा अतिरिक्त समय उपलब्ध है।
4. ऑनलाइन कक्षाओं ने अब शिक्षा प्रणाली का डिजिटलीकरण संभव कर दिया है। नतीजतन, शिक्षक शारीरिक रूप से उपस्थित हुए बिना पढ़ाने में सक्षम है।
5. ऑनलाइन कक्षाओं ने शिक्षण के पारंपरिक तरीके को बदल दिया है। शिक्षा अब काफी हद तक इंटरनेट पर आधारित है।
6. ऑनलाइन क्लास होने से छात्र को अब बैक बेंच पर बैठने की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। हर छात्र अब स्क्रीन के सामने अच्छी तरह से कक्षा का अनुसरण कर सकता है।
7. ऑनलाइन कक्षाओं के परिणामस्वरूप स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय में बिजली की लागत में भारी कमी आई है।

निष्कर्ष:-

अंत में, ऑनलाइन कक्षाओं के सभी अच्छे और बुरे प्रभावों के बावजूद, हमें अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस सिद्धांत का पालन करना होगा। मेरी राय में, वर्तमान शिक्षा पद्धति में कैम्पस में पढ़ाई के अलावा ऑनलाइन कक्षाओं को मिलाकर शिक्षण का सबसे उत्तम तरीका बनाया जा सकता है।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

मैथिलीशरण गुप्त



अमर राउत
लेखापरीक्षक

गंगा नदी - भारतीय संस्कृति की पहचान

गंगा भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी है जो हिमालय के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनद से निकलती हुई बंगाल की खाड़ी में सागर संगम करती है। गंगा जो भारत और बांग्लादेश को मिलाकर 2410 कि.मी. के विशाल भू-भाग को सींचती है, यह देश की प्राकृतिक सम्पदा ही नहीं बल्कि जन-जन की भावनात्मक आस्था का आधार है। गंगा भारत और बांग्लादेश में अपनी सहायक नदियों के साथ 10 लाख वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान की रचना करती है।

गंगा का महत्व :- सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से यह नदी भारत में पवित्र मानी जाती है तथा इसकी उपासना माँ और देवी के रूप में की जाती है। भारतीय पुराणों और साहित्य में अपने सौन्दर्य और महत्व के कारण बार-बार आदर के साथ वंदित गंगा नदी के प्रति विदेशी साहित्य में भी प्रशंसा और भावुकतापूर्ण वर्णन किए गए हैं। लोगों का ऐसा विश्वास है कि मृत्यु के पश्चात् उनकी अस्थियों को गंगा में विसर्जित करने से उनकी आत्मा को शान्ति मिलती है।

वाणिज्यिक महत्व :- गंगा नदी का उद्योगों के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। हुगली नदी के किनारे बसे बड़े जूट कारखानों से लेकर अन्य विभिन्न कल कारखानों तक की जलापूर्ति इसके द्वारा होती है। इस नदी में मछलियों तथा सर्पों की अनेक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। मीठे-पानी वाले दुर्लभ डाइकिन भी पाए जाते हैं जिन्हें मछुआरे पकड़ कर स्थानीय बाजार में बेचते हैं और अपना गुजारा करते हैं। गंगा नदी कृषकों को खेती की सिंचाई के लिए जल मुहैया कराती है।

प्रदूषण के कारण :- विभिन्न वैज्ञानिक परीक्षणों से यह पता चला है कि गंगा के जल में वैक्टीरियाफेज नामक विषाणु होता है जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देता। गंगा की इस असीम शुद्धीकरण क्षमता के बावजूद इसके प्रदूषण को रोका नहीं जा सका है। गंगा के तट पर बसे औद्योगिक नगरों के नालों की गन्दगी सीधे गंगा नदी में मिलने से गंगा का प्रदूषण पिछले कई सालों से चिन्ता का विषय बना हुआ है। औद्योगिक अपशिष्ट के साथ-साथ प्लास्टिक कचरे की बहुतायत ने गंगा के जल को बेहद प्रदूषित किया है। गंगा में 2 करोड़ 30 लाख लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन जा रहा है। उत्तर प्रदेश की 12% बीमारियों की वजह प्रदूषित गंगा का जल है। हिमालय से लेकर सुन्दरवन तक के शहरों और बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों का सड़ा-गला कचरा इस पवित्र नदी में बहाया जाता है।

प्रदूषण का समाधान :- यह अत्यन्त ही विचारणीय विषय है कि गंगा के पानी को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए कई योजनाएं बनाई गईं परन्तु आज तक उसको प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए कोई कड़े कदम नहीं उठाए गए। गंगा को पूरी तरह पहले जैसा बनाने के लिए आम जन को ही आगे आना पड़ेगा। प्रशासन के लिए आवश्यक है कि वह आम जन को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा गंगा के महत्व और उसके दुष्प्रभावों से अवगत कराए। गंगा के बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण पाने के लिए प्रशासन ने कुछ बड़े कदम उठाए हैं। इसके अतिरिक्त शहर की गन्दगी को साफ करने के लिए संयंत्रों को लगाया जा रहा है और औद्योगिक कचरे को इसमें गिरने से रोकने के लिए कानून बनाए गए हैं। इसी क्रम में गंगा को राष्ट्रीय धरोहर भी घोषित कर दिया गया है और गंगा प्लान व राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना भी लागू की गई है। हलांकि इसकी सफलता पर प्रश्न चिन्ह भी लगाए जाते रहे हैं।



अमरेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

समाज में बढ़ती अश्लीलता

प्राचीन काल से ही भारत अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के लिए विश्व विख्यात रहा है। लेकिन विगत कुछ वर्षों से हमारे समाज में अश्लीलता इस कदर घर करती जा रही है कि सार्वजनिक बस, सार्वजनिक स्थान, मॉल, सिनेमाघर, इत्यादि जगहों का नजारा देखकर हमारी आँखें शर्म से झुक जाती हैं। सिनेमा से लेकर धार्मिक उत्सवों तक अश्लीलता परोसी जा रही है।

समाज मुझे संकीर्ण या पुरानी विचारधाराओं वाला समझ सकता है, लेकिन हम अपने समाज में जो अश्लीलता फैला रहे हैं, क्या वैसी विचारधारा आधुनिक होती है? आए दिन सार्वजनिक बसों में महिलाओं तथा पुरुषों के अश्लील कृत्य देखकर लोगों की आँखें शर्म से झुक जाती हैं। क्या हम एक ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं, जिसमें कोई बाप अपनी बेटी, कोई माँ अपने बेटे तथा कोई बहन अपने भाई के साथ ऐसी जगह पर जा सके?

आज धार्मिक स्थानों पर भी चाहे वो चार धाम की यात्रा हो या कोलकाता का कालीघाट, भूतनाथ या फिर कोई चर्च या गुरुद्वारा ही क्यों न हो, उनके आस-पास धार्मिक दूकानों से ज्यादा व्यस्क कैफे में महफिलें जमती हैं। आजकल धार्मिक उत्सवों में भगवान की मूर्ति छोटी ही क्यों न हो, उत्सव में बजने वाला डी.जे. बड़ा होना चाहिए। साथ ही साथ अश्लील गानों का तड़का भी लगाना चाहिए। एक समय था जब हम भारतवासी अपनी संस्कृति पर गर्व करते हुए कहते थे:-

“ताल्लुक है हमारा उस संस्कृति से जिसकी बेटी अगर गुड़िया खरीदे तो दुप्पट्टा साथ लेती है।”

आजकल कई टी.वी. प्रोग्राम प्रसारित किये जाते हैं जिसमें 5 साल की बच्ची से ‘टच मी टच मी, किस मी किस मी’ जैसे अश्लील गानों पर नृत्य करवाया जाता है। इस छोटी बच्ची का नृत्य और व्यस्क मुद्राएं क्या हमारी संस्कृति को शोभा देती हैं? इस छोटी उम्र में उसे क्या पता कि क्या सभ्यता और क्या असभ्यता है? दूरदर्शन पर आनेवाले अंडरवियर से लेकर रसोईघर के समान के प्रचार में लड़कियों का सहारा लिया जाता है। आजकल जाने-माने अभिनेता भी अंडरवियर का प्रचार कर रहे हैं, उसमें भी अश्लीलता दिखाई जा रही है। ये सोचने की बात है कि पुरुषों के अंतःवस्त्रों के प्रचार में महिला की क्या जरूरत? अपने परिवार के साथ ऐसे प्रचार देखकर शर्म आती है।

आज सिनेमा से ज्यादा टी.वी. पर ओ.टी.टी. प्लैटफॉर्म पर आने वाली अश्लील वेब सीरीजों का जलवा है, जो सिनेमा के नाम पर समाज में अश्लीलता परोस रही हैं।

इसका समाज पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। यौन उत्पीड़न, रेप जैसी घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि देखने को मिल रही है। बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई की अपेक्षा गलत आदतों का शिकार हो रहे हैं।

हमारे समाज को किसी के प्रेम या प्रेम करने के तरीके को लेकर कोई ऐतराज नहीं है। बस महिला और पुरुष दोनों को यह भली-भांति ज्ञात हो कि उनके कृत्यों से किसी की नजर शर्म से न झुके।

तो आओ, आज से हम अपने समाज में अश्लीलता को रोकने का प्रयास करें। टी.वी./ओ.टी.टी. पर आनेवाली अश्लीलता के विरुद्ध आवाज उठाई जाए, अश्लील गाने को बजने से रोका जाए, ताकि हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकें और गर्व से कह सकें :-

“जब दुनिया में संस्कारों की परिभाषा लिखी जाएगी, तो मेरे देश की तस्वीर ही इनकी नजर में आएगी।”



अरुंधति नंदी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नेपाल - एक आत्मीय स्मृति

उत्सव का मौसम खत्म हो चुका था, अब बारी थी कहीं घूमने की। एक दिन शाम को मेरी स्कूल की दोस्त गुन्जा आई और सुझाव दिया कि तुम नेपाल क्यों नहीं घूम आती। गुन्जा नेपाल की ही थी और उसकी तरफ से यह सुझाव आना स्वभाविक था। नेक काम में देरी कैसी, मैंने मेरे पति को यह प्रस्ताव दे डाला और वह भी राजी हो गए। बस और क्या था – घूमने की जगह तय हो चुकी थी और तैयारी भी जोर-शोर से शुरू हो गई। इंटरनेट के इस युग में ट्रेन की टिकट, होटलों की बुकिंग से लेकर नेपाल में घूमने के लिए गाड़ी – सभी काम हमने ऑनलाइन कर लिया। नेपाल में किस-किस जगह क्या-क्या देखना है – वह भी हमने गूगल से समझ लिया।



निर्धारित दिन लगभग 12 बजे तैयार होकर नेपाल भ्रमण के लिए निकल पड़े। दोपहर 3.30 बजे हमने हावड़ा से बिहार के रक्सौल जाने वाली ट्रेन पकड़ी। ट्रेन बिल्कुल सही वक्त पर थी। रात का खाना हमने घर पर ही तैयार कर लिया था। अगले दिन सुबह 8.30 बजे ट्रेन रक्सौल पहुँची। वहीं से हमें हमारे सफर का सारथी विकास मिला। विकास पहले से ही अपनी बड़ी-सी सफेद गाड़ी लेकर हमारा इंतजार कर रहा था। रक्सौल में ही हल्के से नाश्ते के बाद हमने यात्रा शुरू की। रक्सौल से कुछ 5 कि.मी. की दूरी पर भारत-नेपाल सीमा के भारतीय सीमा शुल्क कार्यालय में कुछ औपचारिकता पूरी करके

हमने नेपाल में प्रवेश किया। वैसे तो नेपाल में भारतीय मुद्रा सर्वत्र ही ग्रहण की जाती है, फिर भी हमने वहीं पर स्थित एक एक्सचेंज ए.टी.एम. से कुछ भारतीय मुद्रा को नेपाली रूपए में एक्सचेंज कर लिया।

हम हमारे पहले गंतव्य नेपाल के चितवन जिले के सौराहा की तरफ बढ़ रहे थे। रास्ता काफी खराब था और बहुत ज्यादा धूल से भरा हुआ था। लगभग 80 कि.मी. पार करने में हमें प्रायः 7-8 घंटे लग गए। तकरीबन शाम के 4.30 बजे हम चितवन के सौराहा पहुँचे। परन्तु वहाँ पहुँचते ही जैसे हमारी सारी थकान दूर हो गई। वहाँ एक अद्भुत शांति और निस्तब्धता विराज रही थी। वहाँ के लोगों को देखकर लगा कि जैसे सभी अपनी ही गति में चल रहे थे। हम अपने होटल पहुँचे। थोड़े विश्राम के बाद हम वहीं स्थित थाडु सांस्कृतिक संग्रहालय एवं शोध केन्द्र देखने निकल पड़े। थाडु दक्षिणी नेपाल की तराई अंचल की एक जनजाति है। यहाँ हमें थाडु लोगों के रहन-सहन और सभ्यता का एक अद्भुत निदर्शन मिला। अगले दिन सुबह 4.30 बजे उठकर हम चितवन राष्ट्रीय उद्यान के लिए निकल पड़े। इस उद्यान में हमने जीप सफारी करनी तय की जिसके लिए सबसे ज्यादा उत्साहित मेरी बेटी थी। राप्ती नदी के किनारे स्थित यह नेपाल का पहला राष्ट्रीय उद्यान है और यूनेस्को विश्व विरासत स्थल भी है। परन्तु यहाँ हमें काफी हद तक हताश होना पड़ा क्योंकि सिवाय कुछ हिरन और कुछ पक्षियों के हमें वहाँ कोई और जन्तु नहीं दिखा। निराश होकर होटल पहुँचकर नाश्ता करके हम हमारे द्वितीय गंतव्य पोखरा के लिए निकल पड़े।

पोखरा चितवन से कुछ 85 कि.मी. दूर है। इस रास्ते से बढ़ते हुए ही हमें अन्दाजा हो चुका था कि क्यों पोखरा को नेपाल में 'हिमालय का ताज' कहते हैं। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य मंत्रमुग्ध करने वाला था। यहाँ की वायु की स्वच्छता ने मेरा मन हर लिया।

उस दिन शाम को हमने पोखरा बाजार से कुछ खरीदारी की और आस-पास के मनोरम दृश्यों से अपने मन को भरपूर कर लिया। अगले दिन हम सुबह-सुबह नाश्ता कर निकल पड़े। विन्दुवासिनी मंदिर, चामेरो गुफा, गुप्तेश्वर महादेव गुफा, महेन्द्र गुफा, डेविड फाल्स, इत्यादि स्थान घूमकर शाम के लगभग 4 बजे फेवा लेक पहुँचे। इस झील के तीनों तरफ पर्वत और एक तरफ शहर का बाजार है। वैसे तो यह झील समुद्र तल से बहुत अधिक ऊँचाई पर नहीं है, उसके बावजूद यहाँ से दुनिया की सबसे ऊँची चोटियों के दर्शन ऐसे होते हैं कि लगता है कि हाथ बढ़ाकर उन्हें छू लें। हमने उस मनोरम परिवेश में प्रायः 45 मिनट तक नौका विहार किया और मन भरकर उन दृश्यों का आस्वादन किया। इसके अगले दिन हम समुद्रतट से 1100 मीटर पर स्थित पोखरा शांति स्तूप देखने निकल पड़े। लगभग 200 खड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर जब वहाँ पहुँचे तो सच में जो शांति वहाँ विराज रही थी, वह शब्दों में बयान नहीं की जा सकती। इस स्तूप से अन्नपूर्णा पर्वतमाला, पोखरा शहर और फेवा झील का चमत्कारिक नजारा देखने को मिला।

अब हम हमारी यात्रा के अंतिम चरण के नजदीक पहुँच चुके थे और हमें अब जाना था हमारे तीसरे व अंतिम गंतव्य तथा नेपाल की राजधानी काठमांडू की तरफ। पोखरा से काठमांडू की दूरी लगभग 200 कि.मी. है। हम सुबह-सुबह काठमांडू के लिए निकल पड़े। रास्ते में मनोकामना मंदिर में दर्शन के लिए रुके। इस मंदिर को शक्तिपीठ माना जाता है और इस मंदिर की देवी को माता पार्वती का अवतार माना जाता है। यह मंदिर समुद्रतट से 1300 मीटर की ऊँचाई पर कफकदादा पहाड़ पर स्थित है और यहाँ पहुँचने का एकमात्र साधन केबल कार है जो तकरीबन 3 कि.मी. की दूरी 10 मिनट में पूरी करती है। केबल कार से होते हुए कई पहाड़ों और त्रिशूली नदी को पार कर हम मंदिर पहुँचे और दर्शन किया। इतनी ऊँचाई पर इस कार की यात्रा मेरे लिए निःसन्देह एक आजीवन याद रहने वाला अनुभव रहा।

अब हम आगे काठमांडू की तरफ बढ़ने लगे। रास्ता काफी खराब था। विकास भाई ने शार्ट-कट तो लिया लेकिन वहाँ एक दुर्घटना होने के कारण हमें वह रास्ता चुनना भारी पड़ गया। काठमांडू पहुँचते-पहुँचते रात के नौ बज चुके थे। हमारे होटल में खाना उपलब्ध नहीं था और शहर के सारे रेस्तरां बन्द हो चुके थे। मैगी से ही हमें उस रात का गुजारा करना पड़ा। अगले दिन हम सुबह 7 बजे ही निकल पड़े। विकास ने पहले ही कह दिया था कि यहाँ रास्तों में जाम बहुत ज्यादा होता है। सबसे पहले हम पशुपतिनाथ मंदिर गए। इसके बाद हम बौद्धनाथ स्तूप, शम्भूनाथ स्तूप, बूढ़ा



नीलकण्ठ मंदिर और नारायणहिती पैलेस गए। इसी पैलेस में साल 2001 में नेपाल के तत्कालिन राजा वीरेन्द्र वीर विक्रम सहदेव, उनकी पत्नी और उनके परिवार के कुल 9 सदस्यों को उन्हीं के पुत्र राजकुमार दीपेन्द्र ने मार डाला था और इसके उपरान्त खुद को गोली मार ली थी। महल के कोने-कोने में उनका राजसी ठाठ झलक रहा था। उनके महल की हर एक वस्तु को संरक्षित रखा गया है। यह सब देखकर शाम को हम अपने होटल लौट आए। अगला दिन हमारी यात्रा का आखिरी दिन था। उस दिन हम काठमांडू दरबार, हनुमान धोका और कुमारी मंदिर देखने गए। यहाँ साल 2015 में आए भयानक भूकम्प के चिन्ह आज भी ताजा-से दिखते हैं। यहाँ की इमारतें जो भूकम्प में पूरी तरह से गिर गई थीं उनको फिर से बनाया जा रहा है। इस परिसर की बहुत सारी इमारतों को बांस पर टिकाकर रखा गया है। कुमारी मंदिर में कुमारी देवी के दर्शन तो हमें नहीं मिले पर उस जगह में एक अजीब-सी नीरवता थी जो हमने अपने भीतर बहुत गहरे महसूस की।

अब वक्त था हमारे घर लौटने का। काठमांडू से वीरगंज होते हुए हम रक्सौल पहुँचे। वहीं से एक बहुत ही सुखद स्मृति लेकर हम कोलकाता के लिए रवाना हो गए।



शुभाशीष दे
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

रंगमंच - एक विलुप्त कला के कगार पर

पुराने दिनों में, रंगमंच धार्मिक समारोह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसने उन सभी देवताओं को मनाने और प्रसन्न करने का काम किया जिन पर सब निर्भर थे।

पूर्वी रंगमंच भारत और इसकी मूल भाषा संस्कृत का बहुत आभारी है, जिसकी महान



महाकाव्यात्मक कविताएं जैसे रामायण अभिनीत की गई थीं। अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में सिनेमा को ही सर्वश्रेष्ठ गवाह के रूप में माना गया है। यह ओपेरा के साथ प्रसिद्धि को साझा करते हुए मनोरंजन के लिए अद्वितीय विकल्प के रूप में उभर कर आया है। बीसवीं सदी में सिनेमा और हॉलीवुड के साथ-साथ, फिल्म उद्योग का दायरा बढ़ रहा है और रंगमंच धीरे-धीरे अपनी सत्ता को खो रहा है। हालांकि, अभिनेताओं के स्पष्ट रूप से रंगमंच को अपना पहला प्यार मानने के बावजूद रंगमंच आज काफी उपेक्षित दिखाई देता है और सिनेमा के सभी बड़े नाम भी रंगमंच से गायब हैं।

रंगमंच, जो मूल रूप से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक साधन था, अब चौराहे पर है। दुनिया भर में, पूर्व और पश्चिम में, इसे सिनेमा के हाथों नुकसान उठाना पड़ा है। बड़ी संख्या में रंगमंचों को बंद करना पड़ा है और यह देखकर दुख होता है कि जहाँ कभी 300-400 सीटों वाला रंगमंच हुआ करता था, आज शायद वहाँ ब्यूटी सैलून या फर्नीचर मॉल है। संस्कृति के मामले में नुकसान अपरिवर्तनीय कगार पर है। सच तो यह है कि प्रतिभा वहीं जाती है जहाँ पैसा होता है, अंततः यही सब कुछ का सार मर्म है। हर किसी की तरह कलाकारों के पास भी अपने परिवार के भरण-पोषण का दायित्व होता है, और जिस स्थिति में आज रंगमंच है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि वे सभी कलाकार या तो टेलीविजन या सिनेमा की ओर मुड़ रहे हैं। यह दुख की बात है कि लोगों ने कुछ महान नाटकों के फिल्म रीमेक देखे होंगे लेकिन मूल नाटक कभी नहीं देखा होगा। रंगमंच में प्रत्यक्षता है; यह ठीक आपके सामने है। यह आपको ऐसा महसूस कराता है कि आप इसी का हिस्सा हैं। कई लोग तर्क देंगे कि एक महान नाटक और एक हॉलीवुड फिल्म के बीच कोई तुलना नहीं है, लेकिन सच्चाई यह है कि रंगमंच अधिक सहज है। इसकी खास बात यह है कि यह दर्शकों को लुभाने के लिए स्पेशल इफेक्ट्स पर निर्भर नहीं है। यह पूरी तरह से बेहतरीन स्क्रिप्ट और एक्टिंग पर निर्भर है। इसमें एक जीवंत तत्व है, यथार्थवाद की भावना है। इतनी खूबियों के बावजूद रंगमंच को अपनी सहूलियत के कारण सिनेमा के आगे झुकना पड़ा है। कोई भी नाटक देखने जाने की तुलना में घर के डी.वी.डी. प्लेयर में डी.वी.डी. डालना कितना आसान होता है। रंगमंच तब तक ही रहेगा जब तक इसके लिए जुनून रखने वाले पर्याप्त लोग हैं।

आज समय की मांग है कि कम उम्र से ही रंगमंच का ज्ञान विकसित करना चाहिए। बच्चों को नाटक देखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। स्कूलों को हॉलिडे प्ले प्रतियोगिता आयोजित करके इस कला के प्रति रुचि को जीवित रखना चाहिए। प्रतिभा तभी होती है जब आप उसे तलाशने, उसका पोषण करने और उसे प्रोत्साहित करने के इच्छुक हों। यह शताब्दी कुछ हद तक कुछ नाट्य समूहों के पुनरुद्धार की गवाह रही है।

रंगमंच की टिकटों का भी वाजिब कीमत पर उपलब्ध होना जरूरी है ताकि इस कला को जनता का अधिक ध्यान और समर्थन मिले। किसी भी कला के सफल होने के लिए जनता को उसका हिस्सा होना चाहिए। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि रंगमंच जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहा है।



अरिंदम घटक

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भावनाओं की आत्मकथा

Emotions मतलब भावनाएँ। खून, मांस, अस्थि-मज्जा, अंग इन सब के साथ-साथ भावनाओं से भी मनुष्य की सृष्टि हुई है। सिर्फ मनुष्य ही क्यों, हमारे आस-पास बहुत सारे प्राणियों में भी हम भावनाओं की उपस्थिति को महसूस करते हैं। भावना एक सारहीन विषय है, जिसे छुआ नहीं जा सकता, सिर्फ महसूस किया जा सकता है। भावनाओं के बिना ज़्यादातर अनुभव असंपूर्ण है। एक बात यह भी है कि भावना और अनुभूति दोनों एक दूसरे के पूरक भी हैं। प्यार करना, ध्यान रखना, ख्याल करना, इन सबके साथ-साथ गुस्सा, झगड़ा, चिंता, रोना,

उत्तेजना ये सभी भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं! और भावनाओं का कारण? इसे व्यक्त करना बहुत ही मुश्किल है। कोई कहता है रिश्ते हैं तो भावनाएँ हैं, किसी और का कहना है कि भावनाओं से ही रिश्ते बनते और संवरते हैं। वजह जो भी हो, माँ की ममता, दोस्ती या प्रेम- सब भावनाओं के बिना अधूरे हैं। भावनाओं के बिना रिश्ते उस नदी की तरह हैं जिसमें कोई प्रवाह नहीं, कोई संगीत नहीं, जो समय के साथ सूखते-सूखते खो जाते हैं। भावना कभी बचपना कभी परिपक्वता है। भावना कभी शारीरिक कभी मानसिक होती है। उसकी कोई सीमा नहीं होती है और बहुत कोशिशों के बाद भी भावनाओं को दबाया नहीं जा सकता है। मनुष्य की बातों, उनके व्यवहार, यहां तक कि उनकी आंखों से भी उनकी भावनाएं झलकती हैं। लेकिन एकतरफा भावनाओं की अनुभूति कभी-कभी किसी इंसान को थका भी देती है, खासकर तब जब कोई दूसरा व्यक्ति उस भावना की कद्र नहीं करता है, उस भावना को यथार्थ मर्यादा नहीं दे पाता है। इसलिए बंधु, भावनाओं की कद्र करो, समय देकर, साथ निभाकर, प्यार के साथ क्योंकि भावनाएँ अमूल्य हैं।





अर्णव कर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिमालय पर चलो

कलिम्पोंग सफर के बीच में ही पहुँच गया था छोटे से गाँव ऋश्यप में जो ज्यादातर होम स्टे से भरा हुआ था। अद्भुत शांति से भरा वातावरण एवं कंचनजंगा एकदम आँखों के सामने। इस मुग्धता के प्रभाव को कटने में थोड़ा समय लगा। होम स्टे के आँगनों में ही जैसे एक-एक व्यू प्वाइंट बना हुआ है। एक झूला लगा हुआ जिसमें बैठकर सामने विस्तीर्ण सिक्किम के पहाड़ और उसके पीछे कंचनजंगा दिखाई देता है। बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहने के बाद मन हुआ कि पहाड़ी रास्ते पर थोड़ी सैर कर आऊँ। रास्ते के दोनों तरफ घना जंगल, चलते-चलते सिर्फ अपने पैरों के शब्द, साँसों की आवाज, पेड़ से पत्तों के गिरने

की सरसराहट, भवनों की गुंजन के अलावा कुछ भी कानों में नहीं आ रहा था। पहाड़ी पर आड़े-टेढ़े रास्ते घूम-घूम के उठ रहे थे। गाड़ी के पक्के रास्ते से कुछ दूर आकर देखा कि पहाड़ों के बाईं तरफ एक पतली सी सड़क है, जंगलों के बीच पत्तों से ढकी। सड़क के आगे फीके रंग का एक बोर्ड है, लिखा है - तिफिंदरा व्यू प्वाइंट, 1 कि.मि.। कई दिनों से पहाड़ों पर पैदल चलने की बड़ी इच्छा थी। पता नहीं क्या सोचते-सोचते मैं ऊपर चलने लगा। कहीं कोई नहीं, घने जंगलों के बीच से पतली-सी अस्पष्ट सड़क घूमते-घूमते ऊपर गई है, पत्तों से ढकी हुई जिस तरह पेड़ के पत्तों ने सूरज की किरणों को जकड़ रखा था वो इस पथ की एक अलौकिक सुंदरता थी। पहले-पहले डर लगा था, अनिश्चितता का भाव, रास्ते में गुम हो जाने का डर। लेकिन पता नहीं, कौन-सी अनदेखी डोर मुझे खींच ले जा रही थी, मैं प्रकृति के इस विपुल सौन्दर्य में विलीन होता गया। मैं निरंतर चढ़ाई चढ़ने लगा। मैं जैसे खुद में ही नहीं था, घुल गया था पहाड़ों के बीच।



अचानक जंगल के बीच ध्यान गया, सूखे पत्तों पर पक्षियों के पैरों की आहट। न जाने कितनी बार मैंने लटक रहे फर्न के लंबे पत्तों के नीचे से, घने पेड़ों की छाया, खाई के किनारे मिट्टी की पतली सड़क को पार किया। लिखते-लिखते अब भी आँखों में आँसू आ गए। मन में खुशी की लहर छा गई। रास्ते में एक दो-बार असमंजस में पड़ा तो था, मन के गहन कोने से कई बार चेतावनी आई। लेकिन तभी अंदर से आवाज आई - हार मत मानो, आगे बढ़ो, किस चीज़ का डर है, तुम तो अपने आप ही...। जब अंत में ऊपर चढ़ा, तो पर्यटन की भाषा में देखने जैसा कुछ भी नहीं था। लेकिन जो था, वो अतुल्य था। चारों ओर घनी हरियाली से घिरी पहाड़ी की चोटी पर बैठना, पेड़ों से झाँक कर हिमालय देखना एक अलग ही अनुभव था। एहसास हुआ - मंज़िल यात्रा का एक हिस्सा मात्र है। मन शांति से भरपूर हो गया। मैंने खुद को ही आज एक नए सिरे से पहचाना। पहले भी कई बार पहाड़ों पर आ चुका हूँ, मगर ऐसा कभी महसूस नहीं किया। एहसास हुआ हिमालय भीतर ही है, हमेशा से, चाहे मैं कहीं भी रहूँ।





प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

मोबाइल

सत युग, त्रेता युग एवं द्वापर युग में जिस विद्या को प्राप्त करने के लिए ऋषि-मुनियों को कई वर्षों तक कठोर तपस्या करनी पड़ती थी और जादूगरों को तंत्र-मंत्र का जप एवं कठोर साधना कर सिद्धि प्राप्त करनी पड़ती थी, वही काम आज का मानव बिना किसी तपस्या व साधना के ही कर लेता है। मैं भविष्यवाणी की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं मीलों दूर के व्यक्ति को बिल्कुल सामने से देख सकने की बात कर रहा हूँ। हजारों मील दूर बैठे लोगों की बात सुन सकने और उन तक अपनी बात पहुंचा सकने की बात कर रहा हूँ। जी हाँ, सही समझे, मैं गतिशील दूरभाष यंत्र की बात कर रहा हूँ लेकिन आज भी हम उतने उन्नत नहीं हुए हैं कि बिना किसी यंत्र के ये काम कर सकें। फिर भी हम इसकी उपयोगिता से इनकार नहीं कर सकते। जिस प्रकार हर चीज के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार इसके भी हैं। मानव प्रगति में अतुल्य भूमिका निभाने के साथ-साथ इसने मानव को बड़ी-बड़ी बीमारियाँ भी उपहार स्वरूप प्रदान की है। इतना ही नहीं, इसकी रेडिएशन के कारण कई तरह की पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। आज शायद ही किसी की खिड़की में सुबह-सुबह पक्षियों की चहचहाट सुनाई देती है, लेकिन उससे हमें क्या लेना-देना? हमारा काम तो आसान हुआ न? हमें तो देश-दुनिया की खबरें आसानी से मिल जाती है न? हम एक स्थान पर बैठे-बैठे सैकड़ों या यूँ कहें हजारों लोगों से जुड़े हुए हैं न? जब हम हजारों लोगों से जुड़े रहने की डींग हांकते हैं तब क्या यह डंके की चोट पर कह सकते हैं कि इस मोबाइल ने हमें अपने से दूर नहीं किया है? क्या हम यह कह सकते हैं कि यह कई परिवारों के टूटने का कारण नहीं है? क्या हम इस बात से इनकार कर सकते हैं कि इसी की वजह से आज बच्चे दादा-दादी व नाना-नानी के प्यार से वंचित नहीं होते हैं? क्या इस बात को अस्वीकार कर सकते हैं कि इसी के चलते आज बच्चे अपने माता-पिता की पंहुच से बाहर जा रहे हैं? एक तरफ इसने यू ट्यूब, इंटरनेट, ऑनलाइन पठन-पाठन, मोबाइल डिक्शनरी, इत्यादि के माध्यम से पढ़ाई को आसान बना दिया है तो वहीं दूसरी तरफ समय बर्बाद करने में भी इसका योगदान भरपूर रहा है। मोबाइल फोन के आने से पहले चार दोस्त बैठ कर आपस में बातचीत, हँसी-मजाक करते थे एवं अपनी व्यक्तिगत और समाज से जुड़ी नाना समस्याओं की आलोचना करते थे, समाधान तलाशते थे, परंतु अब दस परिचित लोग एकसाथ होने पर भी एकसाथ होने का आभास नहीं कराते।

आज के समय में मोबाइल फोन जरूरी है लेकिन इतना भी जरूरी नहीं है कि आपसी रिश्ते-नातों को ताक पर रख दिया जाए। वो कहते हैं न कि आवश्यकता से अधिक कुछ भी ज़हर बन जाता है, चाहे वह जीवन कहलाने वाला जल ही क्यों न हो। अतः जिस चीज का आविष्कार विकास के लिए हुआ है उसका प्रयोग हम अपने और अपने प्रिय जन के विनाश के लिए न करें और जितना हो सके ऐसी चीजों के उपयोग की एक सीमा स्वयं निर्धारित कर इसके सकारात्मक पक्ष को बनाए रखें।





रानी भगत
पत्नी प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

व्यावहारिकता

एक कथन है:
बी प्रैक्टिकल अर्थात
व्यावहारिक बनें, परन्तु
कितना व्यावहारिक बनें-
ये एक प्रश्न है? जब कभी
किसी विषय को लेकर कोई



भावुक होता है तो उससे कहा जाता है कि व्यावहारिक बनो, सीधे शब्दों में कहें तो भावुकता का त्याग कर दो। परन्तु भावुकता न सिर्फ जीवित होने का प्रमाण है वरन् यह मानवता का प्रतीक भी है। किसी को पीड़ा में देखकर उस पर दया आती है और हम भावुक होकर उसके कष्टों को दूर करने का उपाय सोचने लगते हैं, यही तो मानवता है। तो फिर क्या ये मान लिया जाए कि हमें मानवता का त्याग करने के लिए कहा जाता है, या फिर यूँ कहिए कि एक मशीनी जीवन जीना है, सिर्फ और सिर्फ अपने शरीर के लिए जो आवश्यक है उतना ही सोचना और करना है। शेष सारी बातें जो किसी और की समस्या, उन्नति या उनके जीवन के किसी पहलू से जुड़ी हों, उन पर ध्यान देना तो दूर सुनना ही नहीं है।

बहरहाल बात थी व्यावहारिक बनने की, तो एक प्रश्न ये भी है कि कहीं यह कथन हमें स्वार्थी बनने की ओर इशारा तो नहीं कर रहा है। यह प्रश्न इसलिए जरूरी है क्योंकि व्यावहारिक होने से हम सिर्फ व्यवहार तक ही सीमित रहेंगे, यानि सिर्फ अपने व्यवहार में आने वाले चीजों पर ही ध्यान देंगे, व्यवहार खत्म तो वह किसी काम की नहीं। इसे हम इस तरह भी समझ सकते हैं - मान लीजिए कोई व्यक्ति किसी रेलगाड़ी से यात्रा कर रहा है तो वह तब तक अपने सीट और आस-पास की सफाई पर ध्यान देता है जब तक कि उसका गंतव्य स्थल न आ जाए। फिर वह उस ट्रेन से उतरने से पहले वहां गंदगी फैला सकता है क्योंकि उतरने के बाद वो सीट उसके काम की नहीं है। जब किसी के लिए कोई सहानुभूति ही नहीं है और वह स्थान अब अपने काम का नहीं तो उसे साफ रखने के बारे में क्यों सोचना?

किसी का यह भी कथन है कि किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति आसक्त न होना और अपने काम तक सीमित रहना, काम निकल जाने के बाद उससे किसी तरह का कोई लगाव न रखना ही व्यावहारिक होना कहलाता है। यानि स्वकेन्द्रित होना ही व्यावहारिक होना है क्या?

ऐसा भी कहा जाता है कि बड़ों ने आपके लिए जो मानदंड निर्धारित कर दिए हैं बस उसी का अनुसरण करते रहो। बड़े अगर बोले कि खड़े रहो तो खड़े रहना है, बोले बैठो तो बैठना है, बोले चलो तो चलना है, बोले रुको तो रुकना है, बोले आओ तो आना है और बोले जाओ तो जाना है, वो कहे इनसे बात करो, उनको सम्मान दो, इनसे बात मत करो, उधर मत देखो, अपना दिमाग मत चलाओ और छोटे को उनकी हर बात का बिना कुछ सोचे-समझे बस अनुसरण करते जाना है, अगर इसको व्यावहारिक बनना कहते हैं तो फिर नए सिरे से किसी विषय पर विचार ही नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उसके लिए भी कुछ न कुछ मानदंड तो पहले से ही निर्धारित हो चुका होगा न। लेकिन मेरे कहने का तात्पर्य यह बिल्कुल भी नहीं है कि बड़ों की अवहेलना करो। मुझे तो यह जानना है कि व्यावहारिक होना आखिर होता क्या है?



सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी
कनिष्ठ अनुवादक

सोच

दिखने में 'सोच' शब्द आकार में बहुत ही छोटा एवं सहज प्रतीत होता है परंतु इसके भाव बड़े ही गंभीर हैं। यह सोच ही होती है जो एक मनुष्य को पशु से अलग करती है। पशु भी ईश्वर द्वारा बनायी गई रचनाओं में से एक है परंतु उसमें सोचने की शक्ति के अभाव के कारण उसके कर्म हीन होते हैं। यह एक ऐसा 'गुण' है जिसे भगवान ने मनुष्य को प्रदान किया है एवं इसी शक्ति रूपी क्षमता का प्रयोग कर एक मनुष्य समाज में अपना अलग वर्चस्व स्थापित कर सकता है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि इसी भाव के कारण मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

सभी मनुष्यों के अंदर यह गुण किसी न किसी रूप में मौजूद होता है जिसके अनुसार उसके कर्म भी होते हैं। ध्यान से देखा जाए तो, एक मनुष्य के अंदर अपने निजी जीवन एवं समाज को देखने का जो नज़रिया होता है वो काफी हद तक इस पर ही निर्भर रहता है। जिसकी जैसी सोच होती है वह उसी रूप में खुद को एवं समाज को देखता है। समाज एक ऐसा दर्पण है जहाँ वह अपने अंदर छिपे इस भाव से अपनी उन्नति एवं अवनति को परख सकता है। खुद के एवं अपने समाज के प्रति किए गए अपने कर्मों से वह अपनी सोच रूपी मानसिकता का आकलन कर सकता है।

वैसे तो सोच के कई रूप होते हैं परंतु विशेषकर 'सकारात्मक' एवं 'नकारात्मक' सोच, सोच के ऐसे दो खास रूप होते हैं जो सही मायनों में एक मनुष्य के जीवन के प्रति अपनी दृष्टि एवं कला को उजागर करते हैं। सकारात्मक सोच रखने वाले इंसान अपने जीवन में ही नहीं बल्कि समाज में भी अपनी अमिट छाप छोड़ने में सक्षम सिद्ध होते हैं। ऐसी सोच रखने वाला इंसान अपने निजी जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेता है। सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति जीवन जीने के प्रति अपनी इसी मानसिकता के कारण केवल सहज तरीके से समस्याओं का समाधान करने में ही सक्षम नहीं होता है बल्कि ईश्वर द्वारा दिए गए इस अमूल्य जीवन को दिल खोलकर जीता भी है जिससे उसके पथ पर आने वाली हज़ारों मुसीबतें भी स्वयं ही हंसते-हंसते अपना मार्ग मोड़ लेती हैं, परंतु यदि किसी कारण से ऐसा व्यक्ति मुश्किलों के बादलों में घिर भी जाता है तो वह खुद-ब-खुद मुश्किलों के तूफानों को अपनी सोच रूपी तलवार से काटते हुए दृढ़ता से सामना कर उनका समाधान निकाल लेता है। ऐसी सोच रखने वाला मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार अपने सपनों को भी हासिल कर लेता है, भले ही उन सपनों की उड़ानों को भरने में उसे अपने जीवन में न जाने कितनी ही मुसीबतों का सामना क्यों न करना पड़ा हो।

परंतु ठीक इससे विपरीत परिस्थिति नकारात्मक सोच वाले मनुष्य की होती है। ऐसी सोच रखने वाला व्यक्ति अपने निजी जीवन में ही नहीं बल्कि समाज में भी अपनी अलग छाप छोड़ने में नाकाम साबित होता है। ऐसी सोच वाले व्यक्ति की मानसिकता उसके कर्मों में भी प्रदर्शित होती है। ऐसी सोच वाला इंसान अपने निजी जीवन में समस्याओं का समाधान करने में नाकाम साबित होता है। सिर्फ इतना ही नहीं, वह ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए अमूल्य जीवन को जी भर कर जीने में भी असफल होता है। इसी मानसिकता के कारण उसका निजी जीवन क्लेश के बादलों से घिरा रहता है



जिसमें वह एवं उसके साथ उसका परिवार भी उलझ कर रह जाता है। जीवन जीने के प्रति अपनी इसी नजरिये के कारण ही वह समाज में भी अपने सपनों को हासिल करने में असफल रहता है। ऐसे मनुष्य के मार्ग में मुसीबतें स्वयं ही दस्तक देती हैं जिसका सामना करने में वह अपने आप को असहज महसूस करता है एवं इस कारण वह मुसीबत रूपी चक्रव्यूह में घिरकर कभी उभर नहीं पाता है। जीवन के प्रति ऐसे दृष्टिकोण से वह पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं विशेषकर मानसिक दृष्टि से भी पिछड़ कर रह जाता है। इसके साथ ही, सकारात्मक एवं नकारात्मक रूपों के अलावा इसकी एक और कोटि होती है – स्वार्थपूर्ण सोच। स्वार्थपूर्ण सोच रखने वाला इंसान केवल अपने निजी जीवन के प्रति जिम्मेदार रहता है, उसका सामाजिक दाय-दायित्व से कोई सरोकार नहीं होता है। ऐसी सोच वाले व्यक्ति मात्र अपने जीवन के प्रति चिंतित रहते हैं। अपने जीवन को उन्नति के पथ पर अग्रसर करना ही इनका एकमात्र लक्ष्य होता है।

सोच रूपी इंसानी गुण पर बहुत कुछ विचार-विमर्श किया जा सकता है परंतु संक्षेप में यह मनुष्य की वह झलकती हुई मानसिकता है जिसे वह अपने अनुसार सगुण या दुर्गुण में बदल सकता है। सकारात्मक सोच से वह बाज़ की तरह आसमान की ऊँचाइयों को छू सकता है, समाज में अपना एक अलग स्थान बना सकता है, जीवन जीने के प्रति अपने इस सफल दृष्टिकोण से वह अपना ही नहीं बल्कि अपने घर-परिवार की खुशहाली को कायम रख सकता है एवं साथ ही समाज के प्रति अपने दाय-दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वहन कर सकता है। परंतु नकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति अपने जीवन को इतने दुर्गुणों से भर लेता है कि वह अपने निजी जीवन में प्रत्येक क्षण कलह का संचार करता रहता है, जीवन के प्रति अपने इस आलसपूर्ण दृष्टिकोण से वह अपने जीवन को निकृष्ट से निकृष्टतम मान की ओर ले जाता है जिसमें उसका जीवन झंझावत तूफानों में घिर उलझकर रह जाता है।

सारांश में हम कह सकते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को सकारात्मक सोच रखने की कोशिश करनी चाहिए। ऐसी सोच से वह जीवन के सब पहलुओं में बेहतर तरीके से अपने आप को स्थापित कर सकता है। सामाजिक, आर्थिक जीवन में ही नहीं बल्कि अपने निजी जीवन में भी हजारों मुश्किलों के रहने के बावजूद भी वह इसी अमृत का प्रयोग कर जीवन के चरमोत्कर्ष पर पहुँच सकता है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि यह अमूल्य जीवन ईश्वर द्वारा दी गई वह भेंट है जिसका हमें पूर्णरूपेण सम्मान करना चाहिए। केवल अपने जीवन के प्रति ही नहीं बल्कि समाज के प्रति अपने दायित्व का भी भलीभाँति तरीके से पालन करना चाहिए जो एक सकारात्मक सोच रखने वाले मनुष्य के द्वारा ही संभव है। व्यर्थ की नकारात्मक बातों की तरफ अपना ध्यान आकर्षित न कर अपनी सोच को उस सकारात्मक ऊर्जा की ओर अग्रसर रखना चाहिए जिससे वह अपना ही नहीं बल्कि समाज का भी भला कर सके।



हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति।

रामवृक्ष बेनीपुरी



सोनु कुमार चौधरी
आंकड़ा प्रविष्टक

संघर्षशील जीवन

कहावत है कि संघर्ष के बिना जीवन अधूरा है। कोई भी व्यक्ति जीवन में संघर्ष किए बिना सफल नहीं होता है। चाहे वो कोई भी क्षेत्र हो जैसे:- शिक्षा, व्यापार, खेल, मनोरंजन, तकनीक, इत्यादि। आज के युग में देखा जा रहा है कि बहुत ही कम लोग संघर्ष करना चाहते हैं। आज की युवा पीढ़ी ज्यादातर ऐश और मौज की जिंदगी जीना चाहती है। उनकी हर ख्वाहिश बड़ी आसानी से पूरी हो जाती है। चाहे उनके पास संसाधनों की कमी ही क्यों न हो। उनके माता-पिता की कोशिश रहती है कि अपने बच्चे को किसी भी चीज की कमी महसूस न होने दे।

आज से दो दशक पहले ये देखा जाता था कि हर व्यक्ति अपने जीवन में कष्ट के साथ आगे बढ़ता था। जैसे, गाँव में शिक्षा प्राप्त करना इतना

कठिन होता था कि 4 से 5 कि.मी. पैदल चलकर भी प्रतिदिन विद्यालय जाया करते थे या उससे भी अधिक दूरी मतलब 10 से 12 कि.मी.। यदि किसी के पास साइकिल हुआ करती थी तो उसी का इस्तेमाल करके वो विद्यालय जाता था। लेकिन आज के युग में बहुत ही बदलाव आ गया है। आज की युवा पीढ़ी कष्ट उठाना नहीं चाहती है। पहले के जमाने में सभी को संसाधनों की कमी के कारण बहुत सारी जरूरत की चीजें भी उपलब्ध नहीं होती थी, जिससे बहुत ही कष्ट का सामना करना पड़ता था।



पहले के दौर में ये होता था कि हर युवा अपने मनोरंजन के लिए अपने गाँव-घर में कबड्डी, फुटबॉल, क्रिकेट, इत्यादि खेलता था, लेकिन आज की युवा पीढ़ी ज्यादातर मोबाइल में ऑनलाइन गेम, आदि खेला करती है।

मेरे कहने का मतलब ये नहीं है कि मोबाइल का उपयोग न करें। उपयोग करें, परंतु अच्छी चीज के लिए। आज का तकनीकी क्षेत्र काफी आगे बढ़ गया है, आप उसे कैसे उपयोग में लाएंगे वो आप पर निर्भर करता है। आजकल मोबाइल से अत्यधिक लगाव होने के कारण किताबों से ध्यान हटता जा रहा है।

आजकल गाँव-घर में भी लगभग हर सुविधा उपलब्ध हो गयी है। जैसे, हर गाँव में स्कूल, अस्पताल, सड़क, बिजली, इत्यादि। सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं से गाँव का विकास हो रहा है। इसलिए युवा पीढ़ी का कर्तव्य बनता है कि इन संसाधनों का उपयोग करके देश की उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे।

संघर्षशील व्यक्ति ही जब जीवन में सफल होता है तो वो अपने घर, परिवार और समाज की उन्नति के लिए कर्तव्यनिष्ठ रहता है। जो व्यक्ति जीवन में संघर्ष नहीं करते हैं, उन्हें अक्सर इन सब चीजों से उतना मतलब नहीं होता है। वो सिर्फ अपनी ग्लैमरस जिंदगी जीना पसंद करते हैं। वे बड़े और छोटे का मान-सम्मान भी नहीं करते हैं।

कभी-कभी ये भी देखा जाता है कि एक व्यक्ति संघर्ष करके सफल तो हो जाता है लेकिन वह आगे चलकर सब भूल जाता है और अपने घर-परिवार को दयनीय स्थिति से उबार नहीं पाता है जो बिल्कुल गलत है।

आज की कुछ युवा पीढ़ी गलत आदतों का शिकार हो रही है जैसे नशा करना, गलत कामों में लिप्त होना, आदि। इन सब चीजों से दूर रहकर उन्हें शिक्षा पर जोर देना चाहिए जिससे उनका बौद्धिक और मानसिक विकास हो सके।

आज के युग में देखा जाता है कि कुछ युवा उपद्रवी लोगों के बहकावे में आकर सरकारी सम्पत्तियों को काफी नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे देश की प्रगति में भी बहुत बड़ी रूकावट खड़ी होती है। युवा पीढ़ी को सोचना चाहिए कि अगर सरकार की किसी नीति की आलोचना करनी है तो केवल शांतिपूर्ण तरीके से की जाए, न कि उपद्रवी बनकर। आज आप जिस विभाग को नुकसान पहुंचा रहे हैं, हो सकता है कि भविष्य में आप उसी विभाग में चयनित होकर अपनी सेवा देंगे। इसलिए ऐसा बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए।



प्रफुल्ल कुमार झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बच्चे और मेला

सभी बच्चे काफी उत्साहित थे कि आज मेले में जाना है। मेला शब्द सुनकर ही बच्चों के मन में रंगीन नजारों घूमने लगते हैं। बच्चों को मेले में रंग-बिरंगी पोशाक पहने तरह-तरह के लोग, नाना प्रकार के खाने-पीने के सामान, अनेक प्रकार के झूले, खिलौने, जादू का खेल, करतब दिखाते लोग, मेले की भीड़ का शोरगुल, लाउडस्पीकर से आती आवाजें अत्यधिक मनोरंजक लगती हैं और यही सब उन्हें मेले की ओर आकर्षित करता है।

गाँव में सुविधाओं का अभाव होता है, गरीबी होती है, साल में इक्के - दुक्के ही मेले का आयोजन होता है। यह मेला चार दिनों का था और आज अंतिम दिन है। शाम को तीन बजे सब बच्चे मेले में जाने के लिए तैयार हो गए थे। बच्चों को मेले के लिए चार किलोमीटर पैदल ही जाना था। कोई सवारी-गाड़ी नहीं चलती थी क्योंकि गाड़ी चलने का रास्ता नहीं था। सभी बच्चे साठ साल के एक बुजुर्ग के साथ खेतों की मुंडेर का रास्ता पकड़कर मेले की ओर चल दिए। अपने गाँव को पार करने के बाद रास्ते में एक श्मशान है, बच्चे उस श्मशान के बगल के खेतों की मुंडेर पकड़कर आगे बढ़ते गए। फिर एक और गाँव को पार करने के बाद रास्ते में एक नदी आती है जिसके ऊपर कोई पुल नहीं था। पानी काफी कम था सभी बच्चे आसानी से पार कर गए।

अब वे लोग मेले के लाउडस्पीकर की आवाज सुन सकते थे। दूर से ही मेले का ध्वज दिखाई देने लगा, बच्चे उत्साहित होकर दौड़ लगाने लगे लेकिन बुजुर्ग व्यक्ति के कहने पर सभी एकसाथ हो लिए। जैसे – जैसे वे लोग मेले के नजदीक पहुँच रहे थे, रास्ते में आने-जाने वालों का ताँता लगा था, कोई सीटी तो कोई बाँसुरी बजा रहा था, किसी के हाथ में गुब्बारे तो किसी के हाथ में तरह - तरह के खिलौने थे। कुछ बच्चे रो रहे थे तो कुछ खाते – खाते मस्ती में मेले से वापिस जा रहे थे।

अब सभी बच्चे मेले में पहुँच गए। सभी अनुशासन में रहते हुए मेले का भ्रमण करने लगे। सैंकड़ों दुकानें सजी हुई थी, बच्चे घूम - घूमकर अपनी पसंद के खिलौने खरीदने के लिए खिलौनों का दाम पूछने लगे और जहाँ सस्ता मिला वहाँ से खिलौने खरीद लिए। फिर बच्चे झूले की तरफ आकर्षित हुए और झूले का खूब मजा उठाया। अब करतब देखने की बारी आई तो सभी ने साँस थामकर करतब देखा, जादू का खेल भी देखा। बच्चों को घूमते - घूमते भूख लग गई तो सभी खाने-पीने की दुकानों की तरफ चल दिए और जमकर खाने पीने का लुत्फ उठाया।

शाम हो गई थी। घर वापिस जाने का समय हो गया था। सभी एक साथ घर वापस आने लगे, नदी को पार किया। आते - आते रात हो गई। चाँदनी रात थी, परछाईं से भी बच्चे डर रहे थे। सामने श्मशान था। बच्चों के मन में डर था कि कहीं पीछे रहे तो कोई भूत न पकड़ ले और कहीं आगे रहे तो सबसे पहले उन्हें ही भूत का सामना करना पड़ेगा, इसलिए बच्चे सोच रहे थे कि किस प्रकार बीच में रहा जाए, न कि दोनों छोरों पर। इसलिए सभी बच्चे उस बुजुर्ग के पास मंडराते हुए चल रहे थे। आखिर

श्मशान को पार कर वे लोग अपने गाँव के तरफ जाने लगे। फिर कुछ दूर और चलने के बाद वे लोग घर पहुँच गए। बच्चे काफी थक गए थे, उन्हें नींद आने लगी और वे लोग मेले की बात करते-करते खिलौने हाथ में लिए सो गए।





राजीव दे
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अंडमान-एक यात्रा अनुभव

(यात्रा की तारीख: 16/11/2019 से 26/11/2019 तक)

भारत में कुछ जनजातियाँ अब भी आदिम समय में रह रही हैं। इन जनजातियों में से एक जारवा जनजाति है। यह जनजाति अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की छह जनजातियों में से एक है।

यह नवंबर, 2019 का मध्य था। मैंने अपने परिवार के साथ अंडमान जाने की योजना बनाई और अंडमान जाने का मतलब जनजातीय लोगों के घर जाना था।

हमारे दौरे का छठा दिन था। हमने पोर्ट ब्लेयर से सुबह 4.30 बजे शुरुआत की। हमने अपनी पूरी यात्रा कोलकाता की एक ट्रेवल एजेंसी से बुक की थी। हमारे ड्राइवर दादा समय के बहुत

पाबंद थे और अपने बताए समय से पहले पिकअप के लिए होटल पहुँच गए और उन्होंने चेक पोस्ट पर आवश्यक दस्तावेजीकरण का भी ध्यान रखा। हमारे होटल से जिरकटांग चेक पोस्ट तक पहुँचने में लगभग एक घंटे का समय लगा (लगभग 45 कि.मी. की दूरी तय की)। हमारे ड्राइवर दादा खुद निकोबारी जनजाति के हैं तो हमें उनसे कई अज्ञात जानकारियाँ मिली।

जिरकटांग अंडमान के दक्षिण अंडमान जिले का एक छोटा-सा गाँव है। यह मुख्य पड़ावों में से एक है जहाँ उत्तर और मध्य अंडमान आने वाले लगभग सभी पर्यटक जलपान के लिए थोड़ी देर के लिए उतरते हैं। यह हमारे लिए भी अलग नहीं था। चेक पोस्ट के बाद वाहन घने जंगल क्षेत्र से होकर गुजरा जहाँ जारवा आमतौर पर रहते हैं। यह सड़क लगभग 50 किलोमीटर लंबी है अर्थात् मिडिल स्ट्रेट जेड्डी तक। स्ट्रेट को पार करने पर आप बाराटांग द्वीप पर पहुँचेंगे।

सुबह करीब 6.15 बजे हमारी कार सशस्त्र पुलिसकर्मियों के साथ एक काफिले में फॉरेस्ट रिजर्व में दाखिल हुई। कोई ओवरटेक नहीं कर सकता और न ही एक निश्चित गति सीमा को पार कर सकता है।

अधिकारियों द्वारा आदिवासी लोगों की फोटोग्राफी, बातचीत और खाद्य पदार्थों की पेशकश को सख्ती से प्रतिबंधित कर दिया गया था।

हालाँकि हम इतने भाग्यशाली नहीं थे कि हमारी सुबह की यात्रा के दौरान बहुत सारे जारवा मिल जाते, फिर भी यह एक मंत्रमुग्ध कर देने वाली यात्रा थी। यद्यपि हम जारवाओं को उनके पारंपरिक परिधान में देखने की उम्मीद कर रहे थे। आधुनिक सभ्यता के साथ तालमेल से उनके जीवन शैली में एक धीमा, व्यवस्थित परिवर्तन आया है। हमारे द्वारा देखे गए अधिकांश जारवा हमारी तरह ही सामान्य पोशाक में थे। वे जींस, हाफ-पैंट, टी-शर्ट, इत्यादि पहने हुए थे। कुछ पारंपरिक परिधान में भी दिखाई दिए। हमारे ड्राइवर दादा ने हमें बताया कि जारवा लोग जंगली सूअर का मांस बड़े चाव से खाते हैं। वे समूहों में सूअरों का शिकार करते हैं।

दौरे के 8वें दिन उत्तरी अंडमान से वापस जाते समय, हमने फिर से जारवाओं के एक समूह के साथ-साथ कुछ व्यक्तियों को भी देखा। हमारे ड्राइवर दादा ने हमें बताया कि उन्हें न तो कानून या सीमा के बारे में पता है और न ही इसकी परवाह है और अगर हम उन्हें स्थानीय बाजार में भी पाएंगे तो आश्चर्य नहीं होगा।



जारवा जनजाति अब विलुप्त होने के कगार पर है, जो अब संख्या में लगभग 380 (जनगणना 2011 के अनुसार) हैं। फिर भी यदि आप अंडमान की यात्रा करते हैं तो यह एक अवश्य देखने योग्य स्थान है। यात्रा करते समय अधिकारियों द्वारा बनाए गए सभी नियमों और विनियमों का पालन करें।



सुरजीत घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जिंदगी की लहरें

रह के जिन्दा रहती हैं मोहब्बतें
सह के जिन्दा रहती हैं नफरतें,

सोने नहीं दिया तो कैसे देखें ख्वाब
जिया नहीं तो कैसे झेलें जिंदगी के सैलाब...

जब सोच जज्बात में बदली
जब अल्फाज में बदले जज्बात
फिर अलफाज हकीकत बन गई
तो हकीकत में क्यों छोड़ा हिया का हाथ
जी करता था निगाहें मिलाने को
आप नजर अंदाज करना ही सही समझीं
आईने के टुकड़े को जोड़ने की कोशिश में थे हम
नाकामयाब दिल का आलम आप नहीं समझीं...

वक्त तुम्हारा था दिल तुम्हारा था
मेरे दिल की दस्तक तब सुनाई न दी,
तमन्ना रो-रो कर दे गई तन्हाई
कम्बख्त जुदाई में नींद नहीं आई...
अब जब लौट के आई हो,
तो उजाला कहाँ छोड़ के आई...
इतना तो फिक्र किया होता कि
अन्धेरों में साथ छोड़ देती हैं परछाई...

प्यार नामुमकिन था, तो दर्द ही दे दिया होता
दोस्ती अनहोनी थी, तो दुश्मनी ही मोल लिया होता
जो भी होता भला-बुरा, आपसे ही होता
रिश्ता न बन पाया, मगर जुड़ा रहता एक नाता...
जिगर टूटा, दिल भी टूटा, फिर भी
मोहब्बतें अपने आप झुकती नहीं,
सांसे चली, हवा भी चली
जिन्दगी की नैया कभी रुकती नहीं...



सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी

रख मुट्ठी में वक्त को

अभी ना कर मन अनमना,
अभी ना हिम्मत हार ।
अभी पार करनी तुझे,
राहे यहां हजार ॥

टाँक समय के वक्ष पर,
कुछ अपना भी जिक्र ।
करता है इस दौर में,
कौन किसी की फिक्र ॥

रख मुट्ठी में वक्त को, रख सीने में आग ।
रख आंखों में मस्तिष्कां,
गा फिर जीवन-राग ॥

दुःख ने जीवन भर किया,
जी भर कर संवाद ।
जितना हम भूले उसे, उतना आया याद ॥

तोड़ बंदिशें, जोड़ तू मन से मन की प्रीत ।
पहले मन को जीत ले,
फिर दुनिया को जीत ॥

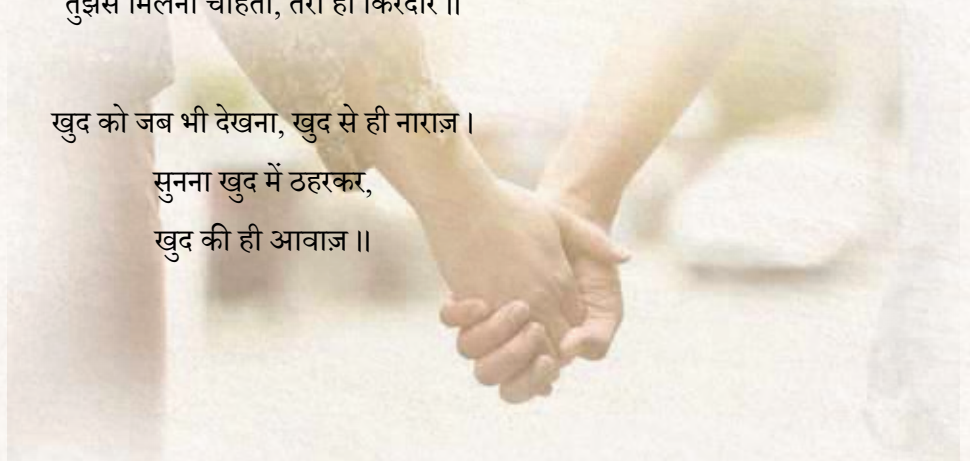
सुख आया कुछ देर को,
गया दिखा कर रंग ।
दुःख ने ही आखिर दिया,
अपने दुःख का संग ॥

खड़े मुश्किलों के यहां,
कदम कदम मारीच ।
रख दे अपने हौसले, हर मुश्किल के बीच ॥

दुनिया भर की खोज में, भाग रहा है रोज़ ।
वक्त मिले तो एक दिन,
खुद में खुद को खोज ॥

अपने मन का आईना, पल-पल यार संवार ।
तुझसे मिलना चाहता, तेरा ही किरदार ॥

खुद को जब भी देखना, खुद से ही नाराज़ ।
सुनना खुद में ठहरकर,
खुद की ही आवाज़ ॥



अक्षयवर्नाथ चतुर्वेदी

संबंधी – गौरव कुमार ओझा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या लिखूं

आज की तारीख में सोचता हूँ कुछ नये अल्फाज लिखूं,
लिखा ना हो जो आज तक किसी ने ऐसा कुछ आज लिखूं,
गीत लिखूं या गजल लिखूं, कविता लिखूं या कलाम लिखूं,
लिखने को बेचैन है लेखनी, पर समझ ना आए क्या लिखूं।
आजादी के नए नारे लिखूं या आजाद भारत का इतिहास लिखूं,
गाँधी, पटेल, भगत सिंह, नेताजी या गुलाम भारत का आजाद लिखूं,
आजादी की अभिव्यक्ति के नाम पर राजनेताओं का परिहास लिखूं,
प्यारा भारतवर्ष लिखूं या जाति धर्म में बंटा इन्डिया आजाद लिखूं।
अपने सपनों के भारत की बात लिखूं या सच का इतिहास लिखूं,
भ्रूण हत्या की बात लिखूं या कन्या का अभिमान लिखूं,
शोषण, अत्याचार, व्याभिचार लिखूं या जीने का अधिकार लिखूं,
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ लिखूं या बेटी का अपमान लिखूं,
दान दहेज चीरहरण लिखूं या नारी का सम्मान लिखूं,
रामायण का वचन लिखूं या अम्बेडकर का संविधान लिखूं,
गीता का उपदेश लिखूं या मेरा भारत महान लिखूं।
वक्त और परिस्थिति के साथ बदलते शब्द के मायने लिखूं,
हजारों बातें हैं अनकही छोड़ों जाने दो अब क्या लिखूं।





ओम प्रकाश चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सूनापन

भाग रहें है हम,	डूबती इतराती रही।
अपने भीतर समाए,	साजो सामान से
सूनेपन से।	घर आबाद होते रहे।
डरते हैं हम,	खाने पीने में ही
कहीं अकेले न पड़ जाएँ	हम जिन्दगी को ढोते रहे।
साथ में चलने वाले	व्यस्त रहने की तो
आगे न निकल जाएँ।	अब आदत-सी हो गई
इसी डर में,	सूनापन न हो
जिंदगी गोते लगा रही	इसी में सारी जिन्दगी खप गई।
किनारे पर आकर भी	



रितु सिंह
पत्नी – संजीत कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जन-जन की आवाज

न सोना न चांदी न हीरे न मोती,
हमें तो चाहिए, दो वक्त की रोटी
हमें मेहनत कर खाने की है आदत
हमें नहीं प्यारी कोई झूठी शोहरत
हैवाने ईबलीश जो दंगे कराते हैं
अपने आप को हम सबका रहनुमा बताते हैं
वो ही आज गुन्दों से मिला रहे हैं हाथ
देश में गड़बड़ियां फैलाते हैं, उन गुन्दों के साथ
घोटाले करते हैं हवाले करवाते हैं
रोटी भी क्या, पशुओं का चारा तक निगल जाते हैं
हे आर्यावर्त के वीरों, शपथ लेनी है आज
नहीं चलने देंगे हम भेड़िया राज
खत्म कर देंगे हम आज ऐसे भेड़ियों को
भेड़ बनकर जो मार खाते हैं अपने ही गड़रियों को।





प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

मित्र

गरीबी ही अच्छी थी
दोस्ती तो सच्ची थी
दौलत का खुमार न था
दिखावे का प्यार न था।

मिलते थे दिल मिलाते
रहते थे हँसते-खिलखिलाते
बनावटी दीदार न था
दिखावे का प्यार न था।

टांग खिंचाई होती थी
आँखें कभी न रोती थी
आपसी बैर न था
दिखावे का प्यार न था।

अपने-बेगाने से अंजान थे
भविष्य के लिए परेशान थे
कोई यहाँ दावेदार न था
दिखावे का प्यार न था।

चल पड़ते थे सब एक ओर
मचा कर हंगामा और शोर
झूठा ऐतबार न था
दिखावे का प्यार न था।

एक धारा में बहते थे
मिलकर सब सहते थे
किसी को कोई इंकार न था
दिखावे का प्यार न था।

मजबूत थे रिश्तों के धागे
न कोई पीछे, न थे आगे
गरूर सर पे सवार न था
दिखावे का प्यार न था।

आज समझ आया है

कीमत तिनके की न भूल, जिसने तुम्हें बचाया है,
कीमत तिनके की न भूल, जिसने किनारे तुम्हें लगाया है;
कीमत तिनके की न भूल, जिससे जीवन वापस पाया है,
वह तिनका कब का डूब गया, और आज समझ आया है।

कीमत उस ईंट की न भूल, जिसने जुड़ कर महल बनाया है,
कीमत उस ईंट की न भूल, जिससे छत को हमने पाया है;
कीमत उस ईंट की न भूल, जिससे धूप की जगह छाया है,
अस्तित्व हुआ विलीन ईंट का, और आज समझ आया है।

पीड़ा उस दीये की ना भूल, जिसने खुद को जलाया है,
पीड़ा उस दीये की ना भूल, जिससे नूर तूने पाया है;
पीड़ा उस दीये की ना भूल, जिसके आलोक में देख पाया है,
वह दीया कब का बुझ गया, और आज समझ आया है।

कीमत उस कुसुम की न भूल, कांटो में जो खिल पाई है,
कीमत उस कुसुम की न भूल, जिससे बाग में सुन्दरता आई है;
कीमत उस कुसुम की न भूल, जिससे समाधि शहीदों की सजायी है,
वह कुसुम टूट कर बिखर गई, और आज समझ आया है।

कीमत उस बूंद की न भूल, जिसने प्यास तुम्हारी बुझायी है,
कीमत उस बूंद की न भूल, जिससे दुनिया जीवन पायी है;
कीमत उस बूंद की न भूल, जिससे हरियाली जग में छायी है,
वह बूंद हुई अब दूषित, और आज समझ आया है।

कीमत उस वृक्ष की न भूल, जिसका फल तूने खाया है,
कीमत उस वृक्ष की न भूल, जिससे रेगिस्तान में भी छाया है;
कीमत उस वृक्ष की न भूल, जिससे प्राण-वायु पाया है,
वह वृक्ष कब का कट गया, और आज समझ में आया है।



संजीत कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हम भारत के वीर

रणभूमि जिसे है स्वर्ग से प्यारी, मृत्यु है जिसकी दासी,
उसे क्या धमकी देता, ऐ पाक! हम वीर हैं भारतवासी।
एक कारगिल की क्या बात करता, हम सैकड़ों कारगिल मुक्त काराएंगे
पहले भी तुझे हरा चुके हैं, इस बार भी धूल चटाएंगे ॥
हमारे साहस के तेज से चट्टान भी पिघल सकती है
तेरी क्या हैसियत है, हम आसमां को झुका सकते हैं।
एटम बमों की धमकी देना, ऐ दोस्त! ये तेरी नादानी है,
सन् इकहत्तर वाली बात, सारी दुनिया को मुँह जुबानी है।
जब हमने अपनी ताकत का लोहा तुझसे मनवाया था,
नब्बे हजार तेरे चूहों को पिंजरे में बंद करवाया था ॥
सम्भल जा, ऐ पाक! ना कर धृष्टता, तू दूसरों की शह पर,
वरना नष्ट हो जायेगा, किसी दिन हमारे कहर से
क्योंकि दोस्तों का स्वागत करते हैं, हम करमालाओं के हार और फूलों की बौछार से,
पर दुश्मनों का मर्दन करते हैं हम अपने आत्मबल के प्रहार और तोपों की गुनजार से ॥





विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पिता-पुत्र

कंधे पर बैठा मेरा बेटा, जब मुझसे कहने लगा,
पापा-पापा मैं तुमसे बड़ा होने लगा,
मुसकाते मुख से मैंने कहा –
बेटा इस खूबसूरत गलतफहमी में भले तुम जकड़े रहो,
पर मेरा हाथ सदा पकड़े रहो
जिस दिन यह हाथ छूट जाएगा – बेटा,
तेरा रंगीन सपना भी टूट जाएगा,
बेटा दुनियाँ इतनी खूबसूरत भी नहीं, जितनी लगती है,
देख तेरे पांव तले अभी जमीन भी नहीं है
मैं तो ठहरा तेरा बाप, बहुत खुश हो जाऊँगा
जिस दिन अपना कद तुझसे कम पाऊँगा
मेरे कंधे पर खड़ा हो कर नहीं..... बल्कि
जब तुझे अपनी जमीन पर खड़ा देख पाऊँगा
जब अंत समय आएगा, ये बाप तुझे सब कुछ दे जाएगा
तेरे कंधों का बोझ बढ़ा जाएगा।



दमन

आत्मा का द्वन्द्व ही विसंगति का बोध है,
पराक्रम है अस्त, निर्यात का सृजन बड़ा।
उत्पत्ति के संग्राम से तृष्णा ही भरी रही,
गंगा नित मलिन होती निर्मलता का आह्वान है।
शक्ति स्तुति है देवालयों में, हमल में तो देहावसान है।
तिलक है प्रभात का
बंध रही, थम रही, डर रही आवाज है।



रूपक भादुड़ी
पति – सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हौसला

दिल में है, हौसला अब ये
पंख अपने फैलाऊंगा,
आसमां की गहराइयों से होकर
नई ऊँचाइयों को छूऊंगा।

संघर्ष से भागे इंसान
जब समझे खुद को कमजोर,
संघर्ष से ही मिलती शक्ति
जैसे कसरत से बल।

डराता है यह समाज
डराते हैं मेरे अपने,
डर-डर के जी भी लिया तो क्या
क्या रखा है ऐसे जीने में?

संघर्ष से भागना हमें
कुदरत कभी न सिखाए,
कमजोरी को रख सलामत
इंसान भविष्य सुनिश्चित बनाए !

बुद्धिमान राह दिखाते
एक सुनिश्चित भविष्य की ओर,
ऐसी बुद्धि किस काम की
जैसे आँख पर पट्टी और घोड़े की दौड़।

तय कर लिया अब तो
डर कर नहीं जीऊंगा,
जीऊंगा दो पल ही सही
पर कुछ अलग कर दिखाऊंगा।

ठान लिया है दिल में कि
अब डराए नहीं डरूंगा,
भेड़चाल को पीछे छोड़
अपनी राह बनाऊंगा।

गिरने से क्यों डरना
क्या डरा था बचपन में?
गिर भी गया तो डरना क्या
शक्ति मिलती गिर कर उठने में।





शिखा साव
पत्नी – विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



भारत की आत्मा

क्या नियति ने कभी सोचा होगा ऐसा भी दिन आएगा,
ईश्वर की वसुधा हेतु न्यायालयों में लड़ा जाएगा।
धरा जिसकी उसे चले हम धरा देने,
धरातलों की पहचान को हम तो मिटाने चले।
बाबा साहब का संविधान भी चीख-चीख कर बोल रहा,
जिसकी रज में लोट-लोट कर हिंदुस्तान खड़ा रहा।
क्या नियति ने कभी सोचा होगा ऐसा भी दिन आएगा,
धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़कर धर्मांध का कृत किया जाएगा।
अनल लिप्त लोचन से अब तो बापू आएंगे,
सत्य अहिंसा का जाप फिर से करवाएंगे।
विश्व भारती बोल रही, विराम की बेला आएगी,
महामानव विश्वगुरु का अभिनंदन कर पाएगी।

इंकलाब का बीज

न सुकून से जीना,
न चैन से सोना,
बहुत मुश्किल है,
भगत सिंह का तात होना,
बचपन से ही कुछ अलग था, मेरा भगत,
एक दिन देखा मिट्टी में कुछ बो रहा था,
मैंने पूछा तो बोला बापू इंकलाबी हो रहा हूँ,
धरती में पिस्तौल बो रहा हूँ,
एक बीज से हजारों इंकलाब जन्म लेंगी,
गोरे गिन नहीं पाएंगे, इतनी हिम्मतें उठेंगी।
मैं तभी जान गया था, वो गुरु गोविंद का लड़ाका है,
अकेले ही सवा लाख से लड़ेगा,
सेहरा बांध कर घोड़ी नहीं,
फंदा चूम कर फाँसी चढ़ेगा।



किशन राम

कनिष्ठ अनुवादक

लल्ला मेरा

आजा मेरे प्यारे लल्ला, बिन तेरे सुन गली मुहल्ला ।
तरसूं देखन सांवली सूरत, मन-मोहक तू कृष्ण की मूरत ।
कहाँ रे तू ओ 'हरि' दुलारे, मन मेरा तुझे रोज पुकारे ।
आजा रे मेरे नटखट लाल, कर शरारत दिखा कमाल ।

अब न मैं तुझे डाटूंगी, हिस्सा तेरा न बाटूंगी ।
अबके आके वापस न जाना, वापस गया तो मुझे साथ ले जाना ।

आए जब तू सबको हंसा, राह देखें तेरी सभी सखा ।
सखा में एक विशेष है, संसार समस्त में श्रेष्ठ है ।
वो दर्शन मात्र को है मगन, तू है जोगी वो जोगन ।
नेत्रों में उसके तेरी छवि, वो रचना तू उसका कवि ।
माँ के साथ जो वो भी रुठी, सुननी पड़ेगी तुझे खरी-खोटी ।

ओ प्यारे मेरे नैन के तारे, राह देखूं तू वापस आ रे ।
जग सुना जो दूर गया, माँ को अपनी तू भूल गया ।
क्यों देता मुझे इतना दुःख, न करती बातें रहुंगी चुप ।
आना अब तू मुझे मनाने, "मैया मोरी" गीत सुनाने ।
मैं न सुनती एक भी बात, मानू तबही जो तू हो साथ ॥

मैया मोरी

ओ मैया मेरी प्यारी मैया, नटखट तेरा किशन-कन्हैया ।
आऊंगा मैं तुझे मनाने, गीत फिर से वही सुनाने ।
यूं ही नहीं मैं छोड़ूंगा, चुप्पी तेरी मैं तोड़ूंगा ।
जो जाए तू मुझसे रूठ, संसार समस्त मुझे लगे है झूठ ।
क्यों कहती मैं देता दुःख, चरणों में तेरे जाऊं झुक ।
अरे मैं तो तेरा राज दुलारा, मैं तुझको संसार से प्यारा ।
ऐसी बातें क्यों करती है, मेरे न आने से क्यों डरती है ?
क्यों कहती मैंने भूला दिया, ऐसा कह तुने रुला दिया ।
जो मैं हूँ तेरे नैन का तारा, तू मेरी है जीवन सारा ।
ओ मैया मेरी प्यारी मैया, राधे का मैं किशन-कन्हैया ।
कहना उससे न आ सकुंगा, रास-लीला न रचा सकुंगा ।
जो नेत्रों में उसके मेरी छवि, हृदय में मेरे वही बसी ।
दर्शन को तो मैं भी तरसूं, जुग-जुग बाद मैं प्रेम बरसूं ।
सखा भी मेरी प्यारी है, सारी की सारी न्यारी है ।
उनसे है एक अटूट बंधन, जैसे खुशबू और चंदन ।
जब आऊंगा तब आऊंगा, सबको बहुत हसाऊंगा ।
कुछ ज्यादा हो तो डांट लगाना, फिर क्षण भर में गले लगाना ।
ओ मैया मेरी प्यारी मैया, मैं तेरा हूँ किशन-कन्हैया ॥





राजीव गिरि
आंकड़ा प्रविष्टक

अतीत के अवशेषों से

तुम्हें याद है? एक दोपहर यूं ही भटकते हुए हम इस जगह तक आ पहुंचे थे
तालाब के उस छोटे से घाट ने हाथ पकड़ पास बैठा लिया था
और फिर, चिड़ियों ने चहक कर हमसे हमारा हाल पूछा था
दूर के उस पेड़ ने भी हवाओं में लहरा कर शिरकत किया था
उसकी शाखों से कुछ पत्ते पानी पर उतर हमारे बहुत करीब आए थे
अच्छा हुआ इन सब लम्हों को तुम एक तस्वीर में कैद कर लाए थे
मैंने सुना है पिछली आंधियों ने इस जगह को बेजार कर दिया है
अजीब सन्नाटा पसरा रहता है और लोग वहां अब कम ही जाते हैं
वो खुशनुमा घाट निराश हो तालाब की गहराइयों में जा बैठा है
गुजरता हुआ चिड़ियों का कोई झुंड भी अब वहां नहीं ठहरता
और दूर का वो पेड़ जो कभी आकाश ताकता था
आज औंधे मुंह तालाब में पड़ा है
हां, इसकी कुछ शाखें अब भी पानी के ऊपर जरूर हैं
पर उन शाखों पर पत्ते नहीं हैं
शायद, अब वहां पहले-सा कुछ भी नहीं है।





राकेश रंजन

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

बारिश की बूंदें

बारिश की छोटी- छोटी बूंदें
मन को मोहती हैं
प्रकृति की हरी-भरी हरियाली
आंखों को सुहाती है
मन समय चक्र को तोड़
कागज की नाव चलाता है
हिलते डुलते अटखले खाता
फिर वापस बचपन में जाता है
वो खुला आकाश, वो भीगी मिट्टी की खुशबू
मुझे बुलाते हैं वो गाँव के मैदान
वो कपड़े पर हल्के किचड़ के निशान
बयाँ करते थे रास्ते का हाल
कुछ भागते थे छुपने की ओर
कुछ निकलते थे भीगने को!



सुमेधा नंदी

पुत्री – श्रीमती अरुंधती नंदी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुंदर सपना

एक दिन शाम को मैं घूमने के लिए एक पार्क में गई थी। जैसे ही मैं पार्क के गेट से घुसी मैं हैरान हो गई। मेरी आँखें बड़ी-बड़ी हो गई। मैंने देखा कि उस पार्क के पेड़ों में फलों की जगह छोटे-छोटे केक और टॉफी टँगी हुई थी। उस पार्क में एक झरना था लेकिन उस झरने से पानी की जगह फ्रूटी बह रही थी। पार्क में एक छोटा-सा घर बना था। वह घर चॉकलेट से बना था और जैसे ही मैंने आकाश की तरफ देखा तो मैं विश्वास ही नहीं कर पा रही थी कि बादलों की जगह आइसक्रीम थी। मैंने झटपट चॉकलेट घर की दीवार तोड़कर अपने मुँह में डाल ली और दौड़कर झरने से फ्रूटी पीने लगी। फिर मुझे लगा कि थोड़ा-सा केक खाते हैं लेकिन

केक मुझसे काटा ही नहीं जा रहा था। मुझे लग रहा था कि कोई केक के पेड़ और मुझे जोर-जोर से हिला रहा था। तभी मेरी आँखें खुली और मैंने सुना कि मेरी माँ चिल्ला रही है, 'क्या आज भी स्कूल नहीं जाना? नींद ही नहीं टूटती तुम्हारी।' मैं झट से उठकर खिड़की पर गई और बाहर देखा कि पेड़ों पर केक नहीं थे और न आसमान में आइसक्रीम थी। मैं जोर से हँसी और नहाने चली गई।



विशाल मंडल

सुपुत्र – श्री बिराट बरन मंडल

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

माँ

न

हर शब्द का कोई
कोई अर्थ होता है
सिवाय एक शब्द के
और वह है 'माँ'। इस
शब्द का कोई अर्थ नहीं
होता है। अगर हम इस शब्द

का अर्थ खोजने का प्रयास करें तो मेरा यह यकीन है कि गूगल पर भी सही
अर्थ नहीं मिलेगा। इंटरनेट पर बहुत सारे अर्थ उपलब्ध हैं लेकिन इस 'माँ' शब्द
के अर्थ को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इस शब्द की कोई उचित व्याख्या
नहीं है, इस शब्द का अर्थ अनंत है।

मेरे अनुसार 'माँ' शब्द का अर्थ है 'बलिदान'। जब वह गर्भवती होती है
तब वह अत्यंत शक्तिशाली होती है, क्योंकि अपने गर्भ में 9 महीनों तक एक
मनुष्य को पालना और उसी हालत में घर के सारे काम करना यह सिर्फ एक
माँ के लिए संभव है। इसलिए स्वयं देवताओं ने भी एक 'माँ' को अपने
से अधिक शक्तिशाली माना है, क्योंकि हम पुरुषों में भी यह क्षमता
नहीं होती है।

एक माँ को अपने बच्चे को जन्म देते समय बहुत कष्ट होता
है पर फिर भी वह खुशी से वह दर्द सहन करती है। एक माँ अपने
बच्चे को कभी भूखा नहीं रखती है, चाहे उसे 104 डिग्री बुखार ही क्यों न हो, वह फिर भी अपने बच्चे को पेट भर खाना खिलाती
है।

मेरे अनुसार हर साल 6 मई को केक काटकर उन्हीं के पैसों से उनको उपहार न देकर हमें उनके सपनों को पूरा करने का वादा
करना चाहिए और जब उनका सपना साकार हो जाए तब हमें 'माँ' दिवस का पालन करना चाहिए।

मेरे अनुसार अगर कहीं सुख है तो वह माँ के चरणों में है। और किसी काम को करने में ज्यादा खुशी है तो वो माँ के सपनों
को पूरा करने में है। जैसे हम सभी अपने काम के अंत में पुरस्कार की उम्मीद करते हैं, ठीक वैसे ही इतने सारे त्याग और बलिदान
देने वाली माँ को भी पुरस्कार मिलना चाहिए।



अद्रीश हाजरा

पिता – अभिजीत हाजरा
एम.टी.एस.

वर्षा का एक दिन

रविवार को विद्यालय की छुट्टी होने के कारण मैं आराम से सो रहा था। अचानक बादलों की गड़गड़ाहट से मेरी नींद खुली। सुबह के सात बजे थे लेकिन गहरे बादलों के कारण हल्का-हल्का अंधेरा था। अचानक तेज बारिश होने लगी। मेरे सभी मित्र वर्षा का आनन्द लेने के लिए घरों से बाहर आ गए। उन्हें देखकर मैं भी माँ से पूछकर बारिश में नहाने व खेलने चला गया। हमने बारिश का खूब मज़ा उठाया। सड़कों पर काफी पानी भर गया था। कागज की नावें पानी में चलाई। इधर से उधर पानी में छप्प-छप्प करते हुए चलना अच्छा लग रहा था। कई लोग बारिश से परेशान भी थे क्योंकि उनके काम रुक गए थे। तीन-चार घंटे लगातार बारिश में खेलकर मुझे ठंड लगने लगी तो मैं घर की तरफ भागा। माँ ने मुझे साफ पानी से नहाने के लिए कहा। मैं नहाकर आया तो मैंने पकौड़े और हलवा खाने का आनंद लिया। पूरा दिन कैसे बीत गया मुझे पता ही न चला।



मरीन टोप्पो

सुपुत्र – श्रीमती स्मृति कुजूर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

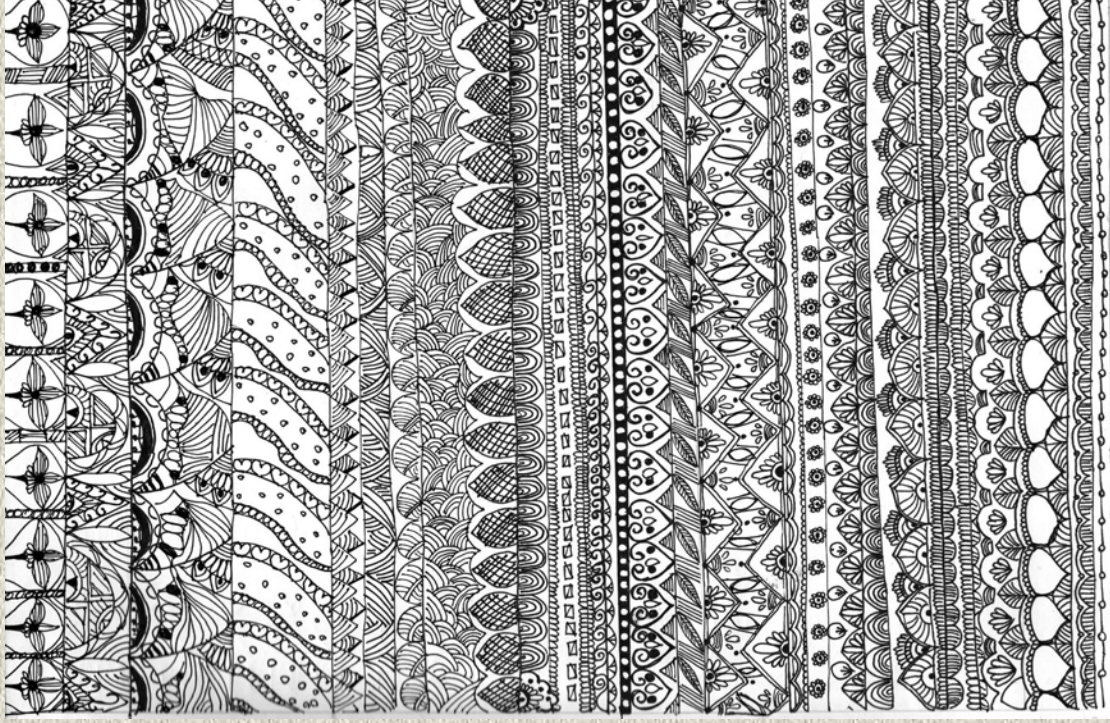
मेरा गांव

मेरे गांव का नाम सरनाटोली है। यह झारखंड के खूंटी जिले में स्थित एक छोटा-सा गांव है। यह मेरी पसंदीदा जगह है क्योंकि यह बहुत सुंदर है। मेरी दादी यहीं रहती है। मैं स्कूल की छुट्टियों में अपने गांव जाता हूँ। वहां हर सुबह मुर्गे की बांग से मेरी नींद खुलती है। इसके अलावा मेरे घर में गाय, बकरी, बतख और सुअर भी है। हर पशु का अपना-अपना घर है जिसे रोज साफ किया जाता है। मैं इन पशुओं को खाना देने में अपनी दादी की मदद करता हूँ। दादी ने मधुमक्खी भी

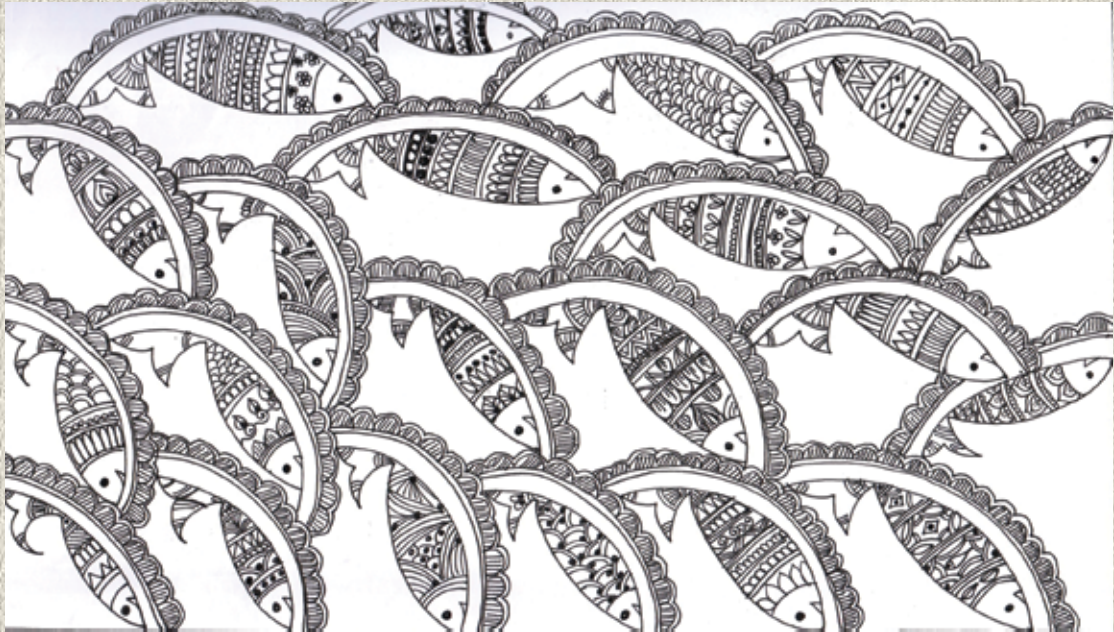
पाली है। मेरे घर के बगीचे में बहुत सारे पेड़-पौधे हैं जैसे आम, लीची, अमरुद, पपीता, नींबू, केला, कटहल, इत्यादि। इसके अलावा बहुत सारे फूल भी हैं। घर के पास एक नदी है, जहां मैं नहाने जाता हूँ। नदी के ठंडे पानी में बहुत मजा आता है। नदी के पास बहुत मजा आता है। नदी के पास बहुत सारे खेत हैं जहां धान, गेहूँ, सरसो, मूंगफली, आलू, टमाटर और बहुत सारी सब्जियों की खेती होती है।

मेरा गांव प्रदूषण रहित है। हरे-भरे वातावरण में स्वच्छ हवा का अनुभव होता है। रात को आसमान तारों से टिमटिमाता है। यहां के लोग बहुत सरल स्वभाव के हैं और आपस में मिल-जुल कर रहते हैं। गांव के सभी लोग मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी अपने गांव से बहुत प्यार करता हूँ।





मेंडेला कलाकृति। द्वारा-श्रीमती सुरभि रंजन, पत्नी – श्री राकेश रंजन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)



मधुबनी कलाकृति। द्वारा-श्रीमती सुरभि रंजन, पत्नी – श्री राकेश रंजन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)



अनिर्जित गंगोपाध्याय, पुत्र- श्री देवांशु गंगोपाध्याय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा बनाया गया चित्र